अन्तरा शब्दशक्ति

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

संस्मरण संग्रह दिसम्बर २०२०

अनोखा वर्ष २०२०

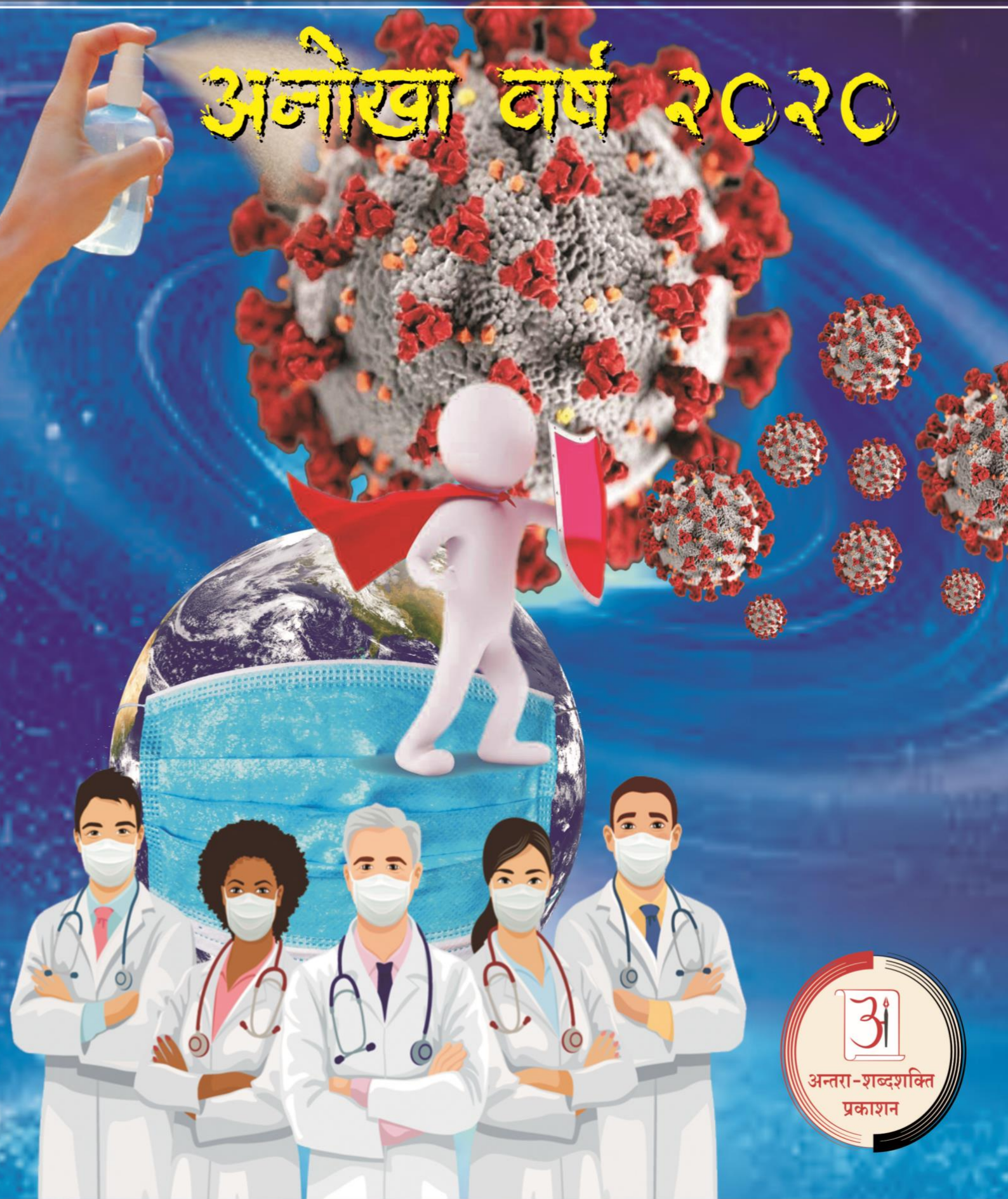

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

अनोखा वर्ष २०२०

साझा संकलन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-264-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्यी कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
मूल्य- 180.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स वारासिवनी
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

अलविदा २०२० इन्हीं शब्दों के साथ हम इस वर्ष २०२० को बिदाई दे रहे हैं। यह वर्ष अपने आप में अनोख रहा इसी बातों और भावनाओं को हमारे रचनाकार, साहित्यकार एवं समाजसेवीयों के कुछ अनुभव जानने मिलेंगे।

बात वर्ष २०२० के अनोख होने कि है तो इसके लिए सबसे बड़ा और अहम कारण कोविड-१९ (कोरोना वायरस) को ही माना जायेगा क्योंकि यह एक वैश्विक महामारी बनकर सारे विश्व में अपनी छाप छोड़ दी, और त्राहि और तबाही के साथ भय और आपात की स्थिती किसी एक देश की नहीं वरन सारे विश्व की की थी। पर क्या २०२० सिर्फ इसलिए जाना जायेगा?

हम भारत के साथ-साथ अन्य देश-विदेश की घटनाओं को भूल नहीं सकते। क्या नकारात्मक के साथ सकारात्मक पक्ष भूलना उचित होगा? मेरी दृष्टि में वाकई २०२० के जैसा 'शिक्षक' वर्ष न तो शायद पहले था और न ही भविष्य का कह सकते। यदि हम वास्तविक दृष्टिकोण से देखें तो हमें सब कुछ अच्छा ही दिखाई देगा। वो कहावत है न कि 'अंधेरा जितना गहन होता है सबेरा उतना ही निकट होता है।' परेशानियां, आपदा, विपदा बहुत कुछ सीखाती है, नई राह और नई सोच की ओर ले जाती है। अपनी गलतीयों का अहसास कराती है, और चेता जाती है कि आने वाले समय में हम अपने आपको ऐसे ही या इससे कहीं अलग, बड़े संकटो से सामना करने तैयार रहें, अन्यथा परिणाम अपनी सोच के विपरित होंगे।

वर्ष २०२० में आयी इस महामारी से पूर्व की बात करें तो क्या इससे पहले महामारी नहीं हुई? क्या इससे पहले संकट और भय का वातावरण नहीं बना? क्या इससे पहले हादसे और दुर्घटनाओं में मृत्यु नहीं हुई? क्या था जो पहले नहीं हुआ? सब कुछ तो होता रहा है। पर शायद अलग-अलग ढ़ग से। फर्क तो बस इतना ही है कि जिस बात के लिए हम आर्थिक, मानसीक, शारीरिक तौर पर तैयार नहीं होते वह में कठिन और परेशानी भरा लगता है पर जब हम अपने आपको इसके लिए तैयार पाते हैं हमारे अंदर का भय खत्म हो जाता है। ऐसा ही कुछ इस कोरोना वायरस के साथ भी है।

आज हमने अपने आपको हर तरह तैयार कर लिया है भय मुक्त होकर पून: उसी दिनचर्या में आ गये हैं अन्यथा वास्तविक स्थिती में तो संक्रमण कहीं गुना अधिक है। इसी को कहते है - 'मन के हारे हार है... मन के जीते जीत..।'

समय का काम है चलते रहना, बिना किसी प्रतिक्षा किये। समय से बढ़कर कुछ नहीं समय अपने साथ कुछ न कुछ नया अहसास कराता है, बड़े से बड़ा जख्म, दर्द और गम को भूला देता है। बस कुछ यादें शेष रह जाती है। कुछ इतिहास के पन्नों में दर्ज हो जाती हैं तो कुछ हमेशा के लिए खत्म हो जाती हैं। ऐसा ही है यह बिता वर्ष २०२० अपने आप में अनोखा जिसकी कई बातें इतिहास के पन्नों पर दर्ज होकर अपने आपको अमर कर जायेंगी।

इन्हीं शब्दों के साथ अलविदा २०२० एवं स्वागत है २०२१... नये सपनों और आशाओं के साथ...।

संदीप कुमार सोनी
तकनीकी संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

अनुक्रमणिका

1.	डॉ. प्रीति समकित सुराना	5
2.	संदीप कुमार सोनी	9
3.	कीर्ति प्रदीप वर्मा	11
4.	अदिति रूसिया	14
5.	सुषमा 'टीना' सोनी	16
6.	रमा-'प्रेम-शांति'	17
7.	मीना विवेक जैन	19
8.	रंजना श्रीवास्तव	21
9.	सोनाली तिवारी 'दीपशिखा'	25
10.	मीनाक्षी सुकुमारन	28
11.	पूनम तिवारी 'हिन्दुस्तानी'	29
12.	राधा गोयल	33
13.	डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई	35
14.	लीना शर्मा	38
15.	श्रीमती भारती शर्मा	40
16.	साधना छिरोल्या	41
17.	अनुजा दुबे	44
18.	सीता गुप्ता	48
19.	किरण बिचपुरिया	51
20.	मीनाक्षी राजपुरोहित 'मीनू'	52
21.	ललीता नारायणी	55
22.	डॉ; नीरजा मेहता 'कमलिनी'	58
23.	डॉ; मनोरमा गुप्ता (पिपरसानिया) 'बाँसूरी'	61
24.	डॉ. सुकेशिनी दीक्षित	64
25.	मंजु सरावगी 'मंजरी'	66
26.	एच.एस. अरमो 'अरमान'	67
27.	सरफराज हुसैन	69
28.	डॉ; वासिफ काज़ी	70
29.	अमीत तिवारी शुन्य	72

हँसी, ऑंसू, दर्द, खुशी, सपनों और उलब्धियों से भरा हुआ बीत रहा यह काल,
सुख-दुख के हिंडोले में झुलाता हुआ बीत रहा है दो हज़ार बीस का यह साल,
आइए बांटते है इस पल कुछ दिल की बातें आप और हम इस अनोखे साल की,
आप सभी को मेरा नमस्ते, जय जिनेन्द्र, हेलो, आदाब, सतश्री अकाल।

अनोखा वर्ष 2020

अनूठा साल 2020 अंकों के समूह में समता लिए लेकिन पूरी तरह विषमताओं से परिपूर्ण। यूँ तो हर सिक्के के दो पहलू होते हैं जो उसे पूरा करते हैं, साल का हर माह अमावस्या और पूर्णिमा से पूर्ण होता है और यहाँ तक कि एक दिन भी सुबह और रात दो विपरीत समय को मिलाकर पूर्ण होता है। यानि सुख और दुख दोनों ही हमारे जीवन के अभिन्न अंग है ये शाश्वत सत्य है।

फिर क्या था ऐसा कि 2020 सिर्फ साल न रहकर अनोखा साल हो गया? ऐसा तो नहीं कि प्राकृतिक विपदाएँ पहली बार आई, राजनैतिक उथल-पुथल देश में पहली बार हुई, अर्थव्यवस्था का चरमराना या बिगड़ना पहली बार हुआ या समाजिक बदलाव या आम जन की सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन पहली बार हुए या फिर महामारियों की मार पहली बार पड़ी।

नहीं न? पर खास ये था कि अपनी 45 वर्ष की उम्र में पहली बार देखा कि एक छोटे से वायरस ने पूरे विश्व की चूलें हिला दी। एक लंबा लॉकडाउन, पूरा भारत वर्ष और अनेक देश एक साथ महीनों बंद रहे। वजह कोरोना वायरस का संक्रमण, एक ऐसा वायरस जिसनें हम भारतीयों को भी विदेशी संस्कृति सेनेटाइजर, मास्क, सामाजिक दूरी का महत्व समझा दिया। हम मिट्टी से जुड़े लोग, जो मिट्टी से अनाज उगाकर, मिट्टी के चूल्हों में पकाकर, मिट्टी के बर्तनों में खाने को परंपरा और सुख मानते हैं, पंगत में खाने के आदि, एक कमरे में पूरा परिवार ही नहीं अड़ोसी-पड़ोसी भी बैठकर घण्टो गपशप कर लें, उन्हें अचानक दो गज की दूरियों के लिए कहा जाना भी सजा से कम नहीं था।

लॉकडाउन ने एक बड़ा सबक दिया हर वर्ग को, अधिकतम ने न्यूनतम में जीना, और न्यूनतम ने प्राप्त को अधिकतम मानकर स्वीकारना सीखा, मध्यम को स्वीकारना ही पड़ा कि मध्यम की स्थिति ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि समय की कसौटी पर कसा जाना कभी व्यर्थ नहीं जाता। मजदूरों की दुर्दशा, आर्थिक स्थिति का चरमरा जाना, अपनों को खोना, जो हर सुख-दुख में साथ रहे उन अपनों के दुख के समय में भी न पहुँच पाना। ये सब अनोखा अनुभव ही था।

दुख इस बात का है कि ऐसे समय में भी राजनैतिक दलों ने साम्प्रदायिक उथल-पुथल का भरपूर प्रयास किया। डॉ. और सेवाकर्मियों ने जान जोखिम में डालकर उपचार और सेवाएँ दी लेकिन दुखद पहलू ये भी है कि जान की कीमत जान से ज्यादा वसूली गई, और इस महामारी को भी व्यावसायिक लाभ का अवसर बना लिया। लॉकडाउन या महामारी के आपातकाल में जीवन रुका नहीं बस कभी उसका प्रभाव सकारात्मक दिखा कभी नकारात्मक!

नकारात्मक पक्ष

उच्चवर्ग के लिए कोई भी आयोजन अपना सामर्थ्य, ऐश्वर्य और वर्चस्व को साबित और स्थापित करने का सुअवसर होता है, ऐसे में केवल सीमित लोग वो भी ऐसे लोग जो सतत संपर्क में हैं जो आपकी आर्थिक, मानसिक और सामाजिक कद-काठी से पूर्व परिचित हैं उनके बीच आप

कितना भी दिखावा कर लें परिणाम शून्य ही होगा क्योंकि समारोह का प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा।

मध्यमवर्ग समय और जिम्मेदारी के दो पाटों के बीच अभी भी पिस रहा मध्यमवर्ग जिम्मेदारियों को न छोड़ पा रहा है न पूरी कर पा रहा है, आज ही आ. शिखरचंद जैन जी का एक आलेख अन्तरा शब्दशक्ति की सृजन फुलवारी में पढ़ा जिसमें एक पंक्ति जो मध्यमवर्गीय की पीड़ा को परिभाषित करती है "जिससे लेना है, वो पैसा देता नहीं और जिसको देना है, वो पैसा छोड़ता नहीं।" ऐसे में कोई भी समारोह सिर्फ जिम्मेदारी का निर्वहन हेतु ही हो सकता है जिसमें एक भी अतिरिक्त व्यय खुशी की जगह क्षोभ उत्पन्न करता है। निम्नवर्ग ने इस दौर में भी यदि समारोह किये हैं तो केवल शासकीय सुविधाओं का दुरुपयोग ही हुआ है अन्यथा गरीबी में जानबूझकर आटा गीला कोई नहीं करता। सादगी से सबकुछ किया जा सकता है।

सकारात्मक पक्ष - उच्चवर्ग में जो लोग दिखावे की चलते न चाहते हुए भी अंधानुकरण करते हुए विलासिता को बढ़ावा देते हुए वास्तविक रिश्तों, परिवार और समाज में रहकर भी सामाजिक दूरी को जी रहे थे वो परिवार और खुद के लिए समय निकाल कर खुद के लिए जी पाए। खुशी को खुशी की तरह मना पाए, सच में आयोजन को करीब से देखकर उसका हिस्सा बनकर जो खुशी मिलती है उसका कोई पर्याय ही नहीं। मध्यमवर्ग को निम्नवर्ग की विवशता से पीड़ा और उच्चवर्ग की विलासिता से कुंठा दोनों से ऐसे समय में मुक्ति मिली जो अक्सर खुशी के पलों में भी पीड़ा का कारण बन जाते थे। निम्नवर्ग उदासीन पलों, अनिश्चित भविष्य और असुरक्षित जीवन में आनंद के कुछ पल नैराश्य को दूर करने के लिए पर्याप्त होते हैं।

कहीं पढ़ा था कि गहन निराशा में आशा की एक नन्ही किरण भी जीवनरक्षक बन सकती है। ईश्वर से याचना है कि ये आपातकाल जल्दी से जल्दी खत्म हो, हम जिस वर्ग में भी हों सामान्य जीवन में लौट सकें और सभी अपनी-अपनी परिस्थितियों में सुखी और संतुष्ट रहें क्योंकि हर सुख-दुख मन की स्थिति पर ही निर्भर करता है।

अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा वर्ष 2020 में किये गए विशेष कार्य

अन्तरा शब्दशक्ति परिवार के लिए यह साल बहुत ही खास और उपलब्धियों से भरा रहा। 120 रचनाकारों की 120 किताबें **"आपातकाल में सृजन फुलवारी"** और 1920 पेज का 102 रचनाकारों का वृहद साझा संकलन, 14 रचनाकारों की कुण्डलिया की एकल पुस्तकें, 22 रचनाकारों का एकल संग्रह 20 से अधिक साझा संग्रह एवं मासिक अंक। हिन्दी दिवस पर "हिन्द, हिन्दी हिन्दजा" की तर्ज पर 34 हिन्दजाओं को भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, 120 कलम के सिपाही सम्मान, 14 कुण्डलिया सम्मान, 22 साहित्य साधक सम्मान, और साथ ही 117 लाइव अंक जिसमें 111 रचनाकारों ने काव्यपाठ किया और 111 रचनाकारों कोसाहित्य सेवी सम्मान, और यूट्यूब पर प्रस्तुति हेतु 27 लोकप्रिय रचनाकार सम्मान दिए गए।

आगामी 31 दिसंबर को भी संस्मरण संग्रह का विमोचन एवं 29 समय साक्षी 2020 सम्मान का आयोजन संमरण संग्रह अनोखा वर्ष 2020 के लिए होना तय है।

अन्तरा शब्दशक्ति और मैं अलग नहीं हैं, मेरी उपलब्धियाँ हमेशा अन्तरा शब्दशक्ति को समर्पित रही हैं। इस पूरे वर्ष में अन्तरा शब्दशक्ति का नाम, इंडिया रिकॉर्ड बुक, लंदन रिकॉर्ड बुक, एशिया रिकॉर्ड बुक, और हिन्दी सेवा हेतु ग्लोबल अचीवर्स कनाडा, FISA द्वारा रियल सुपर वुमन सम्मान 2020, नमो फाउंडेशन द्वारा समाज सेवा

2020 हेतु सम्मान प्राप्त हुआ और साथ ही ओएमजी रिकॉर्ड बुक के लिए चयन, अमेजिंग इंडियंस अवार्ड, महात्मा गांधी अवार्ड, बी द चेंज अवार्ड के लिए नाम चयनित हुआ संभावित है ये नए वर्ष 2021 की शुरुवात के साक्षी बनेंगे।

इसके अतिरिक्त मुझे वर्ष भर में और भी कई मिले सम्मान मिले जिसके लिए जनवरी 2020 से यादों के गलियारे में झाँकूं तो यह साल शुरु कुछ विशेषताओं के साथ हुआ था। 1 जनवरी मैं हमेशा की तरह अपने बच्चों और परिवार के साथ ही रही। 2 जनवरी से सालाना गतिविधियों और साहित्यिक यात्राओं की तैयारियों का दौर शुरू हुआ। 3जनवरी- 5जनवरी राष्ट्रीय कवि संगम (अष्टम वार्षिक अधिवेशन) दंडक वन क्षेत्र के 'अग्रसेन धाम' रायपुर छत्तीसगढ़ में, 2020 को लगभग 25 प्रान्तों के 400 कवियों का विशाल संगम.....! और सबसे बड़ी उपलब्धि 4 जनवरी को रक्तदान का सौभाग्य रायपुर में पहली बार मिला।

वहाँ से 5 की रात में लौटी फिर भी रेलमपेल में पहुंची इस बार के पुस्तक मेले में हमारे प्रकाशन के तकनीकी संपादक संदीप सोनी यानि मानु भैय्या के साथ सिर्फ 5 घंटे के लिए, ठंड, घर में शादी, स्वास्थ्य तमाम बाधाओं को दरकिनार करके 9 जनवरी 2020। **अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा इस वर्ष प्रकाशित 121 पुस्तकें राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकात्ता में दी।** 10 की रात में लौटकर आई और 11 से तैयारियाँ शुरू हुई 12 को तनु के जन्मदिन के साथ वर्धमान की शादी के कार्यक्रम लेकिन उसी दिन नागपुर से लौट रहे जैनम और देवर अभिषेक गाड़ी के असंतुलित होने से एक भयानक हादसे से बचे जिसने मन को असंयत कर दिया। पर घर में शादी का माहौल था जल्दी ही तनाव छू मंतर हो गया और 18 को वर्धमान की शादी, 19 को नितिन भैय्या सीमा भाभी की शादी की 25 वीं वर्षगांठ 22 को मेरे जन्मदिन पर मेरे आंगन में प्यारी सी बहु पायल का स्वागत।

फिर सामाजिक एवं साहित्यिक संस्था "अन्तरा शब्दशक्ति" के स्थानीय सदस्यों ने मनाया गौवंश रक्षण समिति के कर्मचारियों के साथ राष्ट्रगीत और जयहिंद, जय भारत के उदघोष के साथ उल्लासित होकर 71वाँ गणतंत्र दिवस मनाया गया किंतु तब मैं ट्रीटमेंट के लिए हैदराबाद गई हुई थी और बस देखते ही देखते जनवरी बीत गई।

फरवरी की शुरुआत भी पारिवारिक समारोहों के साथ हुई। 8 फरवरी को 2020 की पहली साहित्यिक उपलब्धि के रूप में "वेलफेयर सोसाइटी और गांधी पीस फाउंडेशन, नेपाल" द्वारा इंदौर में थ्री स्टार होटल मंगल सिटी में वेलफेयर सोसाइटी और गांधी पीस फाउंडेशन के तत्वाधान में उत्कृष्ट साहित्य एवं समाज सेवा एवं महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य करने हेतु संस्था "अन्तरा शब्दशक्ति" की संस्थापक होने के लिए "राष्ट्रीय रत्न अवार्ड" मिला।

एक बेहतरीन यादगार शाम, शब्द सारथियों के नाम बिताई दिनांक 11/02/2020 को,..! वारासिवनी और अन्तरा शब्दशक्ति परिवार का सौभाग्य का दिन रहा। बालाघाट दीनदयाल स्मृति कवि सम्मेलन में शामिल होने आए कविकुल के गौरव श्रद्धेय हरिओम पंवार जी का सुराना फैशन वारासिवनी हमारे निवास स्थान पर आगमन हुआ और उनके साथ सपना सोनी जी जयपुर, शशिकांत यादव जी देवास, रमेश धुंआधार जी बुहरानपुर, मुकेश मनमौजी जी छपारा, दिनेश देहाती जी तिरोड़ी सभी के आगमन ने शाम को यादगार बना दिया।

आ. हरिओम पंवार जी सहित उपरोक्त सभी कवि रत्नों को शब्द सारथी सम्मान का स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत सत्कार किया। वेलेंटाइन वीक भी मस्तियों के साथ एक और

उपलब्धि के इंतज़ार में बीता। 21 फरवरी को जयति के साथ निकल पड़ी गुलाबी शहर जयपुर! जहाँ 2 वर्ष में 316 किताबे isbn सहित और 46 पुस्तकें बिना isbn वाली यानि प्रति 2 दिन में एक पुस्तक के अनुपात में प्रकाशन 3 साल में 13000 नि:शुल्क रचनाओं के अखबारों, ई मैगजीन, ईबुक में प्रकाशित करने एवं हिन्दी साहित्य सेवा से जुड़े लगभग 850 लोगों को सम्मानित करने हेतु एवं लीक से हट कर महिला द्वारा महिलाओं को विशेष मंच प्रदान करते हुए समाजसेवा से जुड़कर भी महिला उद्यमी के रूप में कार्य करने हेतु 2019 के युवा उद्यमी के लिए एशियाई देशों से 566 नॉमिनेशन में से ज्यूरी कमेटी द्वारा चयनित, 13 महिला उद्यमियों को मिले सम्मान में **"वुमेन एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अवार्ड्स 2019"** मुझे मिला।

29 फरवरी को लीप ईयर में मिली विशेष उपलब्धि **फैशन लाइफ स्टाइल मैगज़ीन FL 21 रिकॉर्ड होल्डर्स में सम्मान,** और **टॉप 10** में चयनित एवं सम्मानित होकर। 3-4 मार्च को मेरी पीएचडी पूर्ण होने पर ओपीजेएस यूनिवर्सिटी द्वारा मेरी थीसिस की प्रिंट बुक और वायवा के साथ डॉ की उपाधि मिलना दिवास्वप्न के पूरे होने जैसी खुशी दे गया। वहाँ से लौटते ही 8 मार्च को भोपाल में "बेटी है तो कल है" राष्ट्रीय संस्था द्वारा **"वुमन आइकॉन अवार्ड 2020"** सम्मान प्राप्त हुआ।

बस उसके बाद सफर थम गए पूरा साल कोई यात्रा नहीं। पूरे साल में एक भाभी, एक भैय्या, छोटी नानी, बुआ साब, अनेक पसंदीदा कलाकार, रक्षित भाई जैसे साहित्य सेवियों को खोकर मन बहुत ज्यादा टूटा, अवसाद कहीं न कहीं मन में स्थायी निवास बना बैठा है लेकिन फिर भी घर पर बैठकर 6 रास्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय रिकॉर्ड्स, 4 बड़े सम्मान इस विश्वास को दृढ़ कर गए कि इच्छाशक्ति प्रबल हो, नीयत नेक हो, साथ समकित और बच्चों जैसा परिवार हो, घर के बड़ों का आशीर्वाद हो, डॉ भारती सुराना, मानु-टीना, सरफ़राज़, राजेश पटले, कीर्ति, पिंकी, अदिति भाभी जैसे सहयोगी और दोस्त हों तो जीवन बाधाओं को पार करने का हौसला रखता है। सभी अपनों को दिल से आभार जिनसे मुझे कुछ करने का हौसला मिलता है। समकित के लिए आभार से भी कुछ ज्यादा की मेरी हर सोच और स्वप्न को आकार देने में बराबर के सहभागी बनते हैं। एक विशेष आभार मानु यानि संदीप सोनी को जिनके साथ के बिना इतने रिकार्ड्स तक पहुँचने के लिए किया गया श्रम संभव नहीं था।

इस पूरे साल में जैनम जयति तन्मय के साथ 15 से 20 बच्चों की फौज का हर पल साथ होना, मातृत्व के अनूठे सुख के साथ-साथ बड़े-बड़े आयोजनों के बिना छोटी-छोटी खुशियों का महत्व समझाकर गया यह अविस्मरणीय अनोखा साल 2020।

यूँ तो हमेशा ही आते-जाते रहते हैं सुख-दुख,
उपलब्धियाँ-हानि, दोस्ती और धोखा,
पर एक छोटे से कोरोना वायरस ने बना दिया,
2020 को अविस्मरणीय साल अनोखा।

खुश रहें, सुरक्षित रहें।

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति
डॉ. प्रीति समकित सुराना

अनोखा वर्ष २०२०

वर्ष २०२० का स्वागत पूरी दुनिया ने बहुत ही हर्ष और उल्लाष के साथ किया पर कोई भी इस वर्ष का भविष्य नहीं जानता था। विश्व के एक देश चीन अपनी करतुतों को छूपा अपने ही कुकर्म की सजा पा रहा था। किसी ने नहीं सोचा जो चीन के युहान में कोहराम मचा है बहुत ही जल्द पूरा विश्व उसकी उसकी चपेट में आ जायेगा।

यहाँ हम रोज अखबार में, टी.वी. चैनल में, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप ग्रुप, फेसबुक आदि के माध्यम से रोजमर्रा की बातों के साथ इस घटना से जूड़ी सही गलत सभी खबरों और अनेकों मीम्स को देखकर अपने मनोरंजन में वृद्धि करते और फिर बातों ही बातों में सब कुछ खत्म हो जाता। आने वाले समय से अनजान हम अपने कार्यों में लगे माह जनवरी में दिल्ली में लगने वाले विश्व पुस्तक मेले की बात कर रहे थे कि वहाँ जाकर पिछले साल में प्रकाशित पुस्तकों को कलकत्ता की लाईब्रेरी में जमा करवाना है। इन्हीं बातों में अचानक ही ७ जनवरी को सुबह ६ बजे की ट्रेन से गोंदिया और ११ बजे गोंदिया से दिल्ली रवाना होना था। महज कुछ ही घंटों में सारी तैयारी हो गई, सुबह ५ बजे उठकर तैयार हो गये पर बारिश ने हमारा स्वागत किया वह भी अपनी पुरी क्षमता के साथ। बारिश की गती को देखकर लगा कैसे जा पायेंगे पर जाने के उत्साह ने सारी बाधाओं को पर किया और हमारा सफर शुरू हो गया। सारा सफर बहुत ही मनोरंजक और आरामदायक रहा दिल्ली पहुँचकर अपने सामान को सुरक्षित रखने और तैयार होकर पुस्तक मेला जाने के लिए एक छोटा सा रूम किराये पर लिया और सामान सुरक्षित कर हमने पुस्तक मेला ग्राऊण्ड पहूँचे। वहाँ मेला मेरी कल्पनाओं से भी कहीं अलग, काफी विशाल, भव्य एवं खुबसूरत व आकर्षक था। नई-नई कृतियों, प्रकाशनों, डिजाईनों और अलग-अलग पुस्तकों जैसे सामाजिक, धार्मिक, काव्य, कथा-कहानी, कॉमिक आदि को एक साथ देखना बहुत ही सुखद अनुभव था। अपने काम को पूर कर रात्रि में हमने वापसी का सफर तय किया और अपने अगले प्रकाशन की तैयारी और नये विचारों को अपने कम्प्युटर पर उतारने की योजना पर ध्यान लगाया।

२२ जनवरी मेरा जन्मदिवस और यह संयोग ही है कि अन्तरा शब्दशक्ति की संस्थापक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना यानी हमारी भाभी जी और मेरी पार्टनर, दोस्त सब कुछ उनका भी जन्मदिवस २२ जनवरी ही है अत: उन्होंने अपने निवास पर एक पार्टी का आयोजन किया जिसमें हमारे अलावा अन्य छ: जोड़े जिनकी वैवाहिक वर्षगांठ भी थी एक साथ एक जगह पर शामिल होकर पार्टी को बहुत ही खुशनुमा बना दिया। जो मेरे जीवन की एक यादगार पार्टी बन गई।

२६ जनवरी गणतंत्र दिवस के दिन गौशाला जाकर ध्वजारोहण के कार्यक्रम में शामिल होना, गायों को गुड़ खिलाना अपने आपमें एक सुख का संचार कर दिया, किन्तु हमारी भाभीजी संस्थापक महोदया जी की अनुपस्थिती भी खली, क्योंकि उन्हें स्वास्थ्य लाभ के लिए हैदराबाद जाना पड़ गया था। खैर जनवरी माह के सारे सुखद क्षणों को विस्तार से लिखना संभव नहीं पर इतना जरूर कह सकता हूँ कि लगा यह वर्ष हमारे लिए अपार खुशियाँ लेकर आया है। धीरे-धीरे समय अपनी रफ्तार से गुजरता चला गया फरवरी और मार्च के सभी धार्मिक त्योहार एवं उनकी रंगत हमेशा की तरह थी कहीं कोई कमी नहीं सब कुछ व्यवस्थित और सुचारू ढ़ग से चल रहा था।

हम अंतरा के मासिक साझा संकलन को नित नये आकर्षक रंग रूप में सजा रहे थे, इसी समय सोशल मीडिया और टी.वी. चैनल में चीन की महामारी की खबरें पढ़ रहे एवं देख रहे थे। जो नित प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, और चीन के अलावा अमेरीका एवं अन्य कई महाशक्तिशाली देश देश इसकी चपेट में आ चुके थे। यह महामारी

विस्तारीत होकर विश्व के लगभग ५० प्रतिशत देशों में फैल चूकी थी। भारत में भी इस बीमारी से लड़ने के लिए इसकी रोकथाम हेतु प्राथमिक प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी और खबरों से मन में शंका और भय बढ़ने लगा। मन कई अच्छे-बुरे विचारों से व्यथित होने लगा। दिनभर कहीं भी कभी भी किसी न किसी प्रकार से सिर्फ इस बीमारी के महामारी के रूप में बदलने एवं बढ़ने की खबरे बढ़ गई।

इस महामारी ने भारत में भी अपने पैर पसारने शुरू कर दिये और फिर वह दिन भी आया जब प्रधानमंत्री महोदय जी ने इस महामारी को लेकर देश के नाम प्रथम संबोधन दिया और सारा देश पहली बार 'जनता कर्फ्यू' अर्थात स्वयं के द्वारा स्वयं पर प्रतिबंध में बंद रहा। यह वह दिन था जब हमें अपने काम को लेकर भय हुआ क्योंकि यह तो स्पष्ट हो चला था कि यह एक लम्बी प्रक्रिया है, और पता नहीं कर्फ्यू कब तक रहेगा या बढ़ जायेगा। इसी शंका और आशंका को लेकर हमारी चर्चा होने लगी तो हमने सोचा की यदि काम बंद हो जायेगा तो हमें किस तरह इस समय का सहीं उपयोग करना चाहिए हम इस समय क्या कर सकते हैं। हमने निर्णय लिया की अपने अन्तरा ग्रुप में कुछ किया जाये।

२५ मार्च को जब प्रधानमंत्री महोदय द्वारा देश को दुसरी बार संबोधन दिया गया और २१ दिनों का लॉकडाऊन की घोषणा की गई तो इस आपातकाल की घोषणा के साथ पहली बार सारा देश एक साथ बल्कि देश ही नहीं सारा विश्व एक साथ बंद किया गया तो हमने इस आपातकाल को अवसर में बदलने का विचार बना लिया। अन्तरा शब्दशक्ति ग्रुप के व्हाट्सएप ग्रुप, फेसबुक ग्रुप पर एक सूचना डाली गई की हमारे द्वारा आपातकाल में निराश होकर बैठने के स्थान पर कुछ सृजनात्मक कार्य करते हैं इसी उद्देश्य से आप अपनी लेखनी को निरंतर बनाए एवं हम आपकी रचनाओं को अपनी वेबसाईट पर व्यक्तिगत पुस्तक के रूप में नि:शुल्क प्रकाशित करेंगे साथ ही आपको अपने सृजनकार्य हेतु सम्मानित भी किया जायेगा।

हमारा अनुमान था कि यदि १०-२० दिन का बंद है तो प्रतिदिन १-२ बुक के अनुमानत: २५-३० पुस्तकें हो जायेगी पर हमारा अनुमान गलत शाबित हुआ। सूचना का असर ऐसा हुआ की २ ही दिनों में पुस्तकों का आंकड़ा ५० अंक पार कर गया और अगले २-३ दिनों में आंकड़ा १०० पार कर गया। हमारे सामने एक बड़ा टास्क आ गया कि एक तो महाबंद जिसमें घर से निकलना भी दुर्भर ऊपर से इतने सारे रचनाकारों की आशाऐं जो हमने जगाई उसे कैसे पूरा किया जाए।

हमने अपने कार्ययोजना पर ध्यान केन्द्रीत किया, चाहे जो हो जाये काम तो करेंगे। हमने अपना कम्प्युटर युनिट उठाकर डॉ. प्रीति सुराना जी के घर में शिफ्ट करने का निर्णय लिया। कर्फ्यू के दौरान पुलिस की नजरों से बचकर अपनी युनिट शिफ्ट कर दी। अब बारी थी काम करने की। एक तो महाबंद जिसमें लोगों को घर से बाहर आंगन में तक बैठने पर पुलिस बेरहमी से मार रही थी वहीं अपने घर से सुराना जी के घर जाकर काम करना एक बहुत बड़ा टास्क और रिस्क बन गया।

रोज सुबह उठकर अपनी तैयारी कर सुबह जल्द से जल्द पुलिस की नजरों से बचकर जाना और शाम तक काम करना और शाम अंधेरा होने पर अपने घर वापस आना यही दैनिक रूटिन बन गया। मन मे सिर्फ एक ही विचार किसी भी तरह इस काम को पूरा करना है। धीरे-धीरे यह सब बहुत ही मनोरंजक लगने लगा। लॉकडाऊन की अवधी बढ़ गई और पुस्तकों का आकड़ा १२० पार कर गया साथ ही मासिक साझा संकलन का भी काम जारी था।

हमने गुजरते वक्त के साथ अपने काम को पूरा करना शुरू कर दिया और ५१ दिनों के लॉकडाऊन की अवधी में १२२ रचनाकारों का संकलन को व्यक्तिगत पुस्तकों के रूप में पूर्ण

किया और सभी के लिए एक नाम दिया **"आपातकाल में सृजन फुलवारी"**। इसके साथ ही साथ हमने एक और काम किया, सभी रचनाओं का एक वृहद संकलन साझा संकलन १९२० पेज की एक विशाल बुक के रूप में १११ चयनित रचनाकारों की रचनाओं को शामिल कर तैयार किया। अब बारी थी प्रिंट की क्योंकि जब हमने अपनी पुस्तकों का ऑनलाईन विमोचन किया सभी रचनाकारों को उनकी कृति की लिंक एवं पी.डी.एफ. फाईल भेजी, हमें पुस्तकों के प्रिंट के आर्डर मिलने लगे। हमने मात्र लागत शुल्क पर पुस्तक प्रिंट कर देने का निर्णय लिया। धीरे-धीरे पुस्तकों को प्रिंट कर सभी रचनाकारों को उनकी आपातकाल की कृति के साथ सम्मान पत्र दिये गये।

भारत के लॉकडाऊन को अनलॉक की प्रक्रिया चरणबद्ध रूप से शुरू हो गई और हमने अपने काम को पून: ऑफिस में शिफ्ट कर दिया और अगले लक्ष्य पर ध्यान लगाया। इसी दौरान डॉ. प्रीति समकित सुराना जी द्वारा लंदन बुक ऑफ रिकार्ड, को स्वीकृती मिल गई। इसके बाद एशिया बुक ऑफ रिकार्ड, इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड, एवं अन्य कई रिकार्ड एवं सम्मान पत्र स्वीकृत हो गये। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि जिस आपातकाल में हम रचनाकारों को सृजनकार्य के लिए प्रेरित कर रहे हैं वह सृजन हमारी झोली में इतने सारे रिकार्ड डाल देगा। ऐसे रिकार्ड जिनकी कल्पना करना और साकार होने में बहुत फर्क होता है पर हमने सपनों से बाहर इसे साकार रूप में पाया।

लॉकडाऊन के चलते सारे रिकार्ड मेल और पोस्ट के माध्यम से मिले इसी बदलते समय के साथ मौसम की मार ने समय को थोड़ा और कठिन बना दिया तभी अचानक एक दिन काम करते करते कम्प्युटर वायरस के कारण हमारा सारा कम्प्युटर सिस्टम करप्ट हो गया। उसे सुधारने की बहुत कोशिश की गई किंतु सब कुछ खत्म हो गया, सारा डाटा, सारा काम जो कुछ भी हार्ड डिस्क में था सब खत्म हो गया हम एकबार फिर से शून्य में खड़े हो गये।

हमें इस परेशानी से उबरने का कोई साधन नहीं मिला पर हिम्मत जुटाकर हमने फिर से शुरूआत की हमारे काम रूकने नहीं चाहिए यही सोच के साथ हमने काम को आगे बढ़ाया, नये सिस्टम के साथ वक्त गुजरता गया हमने 'भाव-भाषा निर्झरीणी' साझा संकलन के अलावा अन्य पत्रिकाओं का विमोचन और प्रकाशन किया। हमारे रचनाकारों के ९६ पेज की पुस्तकों का कार्य प्रारंभ हुआ और वर्ष के अंतिम माह दिसम्बर में २२ पुस्तकों के विमोचन और सम्मान का यह कार्यक्रम सम्पन्न किया किंतु हमने इसे अंत नहीं माना और ३१ दिसम्बर २०२० के बिदाई हेतु अपने वर्ष भर की यादों अच्छे बुरे पल के संस्मरण को प्रकाशित कर इस साझा संकलन के रूप में परिणित किया।

संदीप कुमार सोनी
(तकनीकी संपादक)
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था

2020 खट्टी मीठी यादें

सच अनोखा ही था 2020, 31 दिसंबर 19 की रात्रि में जब 2020 का आगमन हुआ तो इसका अभिनंदन भी हर्षोल्लास के साथ नववधू की तरह किया गया परंतु किसको मालूम था कि यह घूंघट में छिपी डायन है! जो लोगों को खा जाएगी। यूं तो प्रत्येक जाने वाले वर्ष से कुछ खट्टी मीठी यादें जुड़ी होती हैं परंतु 2020 से मीठी कम कड़वी यादें ज्यादा जुड़ी है।

हुआ यूं कि नवम्बर-दिसंबर 2019 को चीन के वुहान शहर से खबरें आ रही थी एक प्रकार का फ्लू फैला है, जिसे कोविड-19

का नाम दिया गया है धीरे-धीरे उसके मरीज बढ़ने लगे और मरने भी लगे उस समय भारत में लोग भी बेफिक्र थे कि "बीमारी तो चीन में फैल रही है हमें क्या?" "न तो हमें चीन जाना है, और न ही हमारे यहां चीन से कोई आना है।" परंतु धीरे-धीरे इसके अन्य देशों में भी फैलने की खबरें आने लगी और इक्का-दुक्का मरीज भारत में भी दिखाई दिए भारत इतना विशाल देश है कि इसके किसी एक छोर पर कुछ होता है तो दूसरे छोर तक पहुंचने में समय लगता है और भारतवासी "मस्त रहो मस्ती में आग लगे बस्ती में" के सिद्धांत को मानने वाले ऐसी छोटी मोटी खबरों पर तो ध्यान भी नहीं देते। अति तो तब हुई जब कोविड राक्षस ने विश्व भर में अपने खूनी पंजे फैलाना आरंभ किया और चीन में तो लोग धड़ाधड़ मरने लगे तब डब्ल्यूएचओ ने इसे महामारी घोषित कर दिया।

जनवरी-फरवरी तक तो इसने भारत में भी अपने पंख फैला लिए और लोगों को अपना ग्रास बनाने लगा देश के प्रधानमंत्री ने नागरिकों से घर में ही रहने की अपील की, परंतु कोई ऐसे कहां कोई मानने वाला था? कहते हैं न "जाके पांव न फटी बिवाई वो का समझे पीर पराई" महानगरों और विदेशों से आने वाले यात्रियों द्वारा कोविड ने भारत में भी खूनी खेल खेलना आरंभ कर दिया और फरवरी के अंतिम सप्ताह में प्रधानमंत्री ने 1 दिन के जनता कर्फ्यू की अपील की। मैंने जीवन में पहली बार ऐसा कर्फ्यू देखा जिसमें शहर में सांय-सांय जैसी स्थिति थी मानो गब्बर सिंह आ गया हो। सभी ने स्वेच्छा से अपने प्रतिष्ठान बंद रखें और सभी अपने अपने घरों में कैद हो गए पर 1 दिन के कर्फ्यू से कुछ नहीं होने वाला था आखिर 22 फरवरी को 7 दिन का लॉकडाउन घोषित किया गया और स्थिति अनुसार इसे बढ़ाया गया जो जहां था वहीं थम गया यहां तक कि आवागमन रेल बस हवाई जहाज तक बंद हो गए जीवन में ऐसा मंज़र पहली बार देखा। समय-समय पर देश के प्रधानमंत्री स्वयं नागरिकों को संबल देते रहे कभी ताली-थाली बजाने या कभी दीप प्रज्वलित करने के लिए प्रेरित करते रहे समस्त देश में संपूर्ण मनोयोग से उक्त कार्यों को किया, इसका प्रभाव यह रहा कि लोग कुछ समय के लिए अवसाद से बाहर आए और जीवन में ऊर्जा का संचार हुआ।

लोगों को मनपसंद कार्य सिलाई, बुनाई, कढ़ाई गीत-संगीत, लेखन आदि करने का अवसर मिला। गृहणियों ने यूट्यूब का सबसे अधिक प्रयोग रेसिपी सीखने में किया और जब बाहर का खानपान बंद था तो घरों में ही नए-नए व्यंजनों को बनाया और खिलाया। इस दौरान कामवाली बाइयों की भी छुट्टी रही तो सबसे अधिक काम गृहणियों को ही करना पड़ा, हां यह जरूर है कि बच्चे भी साथ में लगे और उन्हें भी आत्मनिर्भरता का भाव आ गया।

कोरोना जैसी महामारी जिसने न गरीब-अमीर में भेद किया न जाति-धर्मों में, कहते हैं ऐसी महामारी 100 वर्षों में एक बार आती है। ऐसी अनोखी बीमारी जो इंसान से इंसान के संपर्क में आने पर होती है। पर मेरा मानना है कि कोरोना ने दूर हो गए परिवारों को भी मिला भी दिया जहां बच्चे नौकरियों के लिए देश विदेश में रहते थे वे सभी अपने पैतृक घरों को वापस आए और परिवार संग दिन बिताये। वृद्ध अभिभावकों को भी एक असीम आनंद की प्राप्ति हुई और आत्मीयता का भाव जागृत हुआ। अति व्यस्त रहने वाले लोगों को भी इस दौरान फुर्सत के कुछ क्षण मिले जो उन्होंने शायद ही तभी बिताए होंगे जिनके परिवार गांव में रहते थे वे गांव की माटी से जुड़े, कुछ ने नौकरी छोड़ कर अपने पैतृक व्यवसाय को आगे बढ़ाने की योजना भी बनाई। अचानक सभी को अपने मित्रों करीबियों की फिक्र होने लगी! जिन से कभी मुलाकात नहीं होती थी

उनके कुशलता की कामना की जाने लगी। ऐसे में जब बाहर के खानपान पर रोक लगी तब लोगों ने जाना कि बाहर के फास्ट फूड या जंक फूड के बगैर भी जिया जा सकता है। घर में रहकर सात्विक भोजन कर लोगों ने अपने को स्वस्थ महसूस किया। कुछ लोगों के रोजगार छिने तो कुछ को नए रोजगार के अवसर भी मिले। हां इस दौरान एक बड़ा फायदा यह भी हुआ कि चोरी लूटपाट या बलात्कार जैसी घटनाएं सुनने में नहीं आई सभी अपने अपने घरों में कैद थे।

शादी ब्याह या समारोह आदि पर भी प्रतिबंध लगा दिया गयाजहां लाखों करोड़ों बर्बाद किये जाते थे वहाँ कम से कम खर्च में भी विवाह हुए जिससे फिजूलखर्ची पर रोक लगी और मृत्यु भोज जैसी कुप्रथा बंद हुई। प्रतिबंध लगने से हम कवियों पर तो जैसे गाजी गिरी! कवि सम्मेलन, सम्मान समारोह आदि सभी बंद हो गए इस समय सिर्फ ऑनलाइन का ही सहारा रहा ।महीनों तक अपनों से न मिल पाना "जल बिन मछली जैसी स्थिति थी"।

कहीं सकारात्मक तो कहीं नकारात्मकता भी लेकर आया यह 2020 लॉकडाउन के दौरान छोटे दुकानदार रेहडी, सब्जी फल विक्रेता आदि को आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ा, हालांकि सरकार ने गरीबों को मुफ्त राशन एवं कोविड राशि उनके खातों में पहुंचाई परंतु मध्यम वर्ग को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा। सभी अपने अपने घरों में कैद रहे कुछ अवसाद से घिर गए नित्य अपने आसपास या परिचितों के निधन की खबरों से मन निराशा से घिर गया, ऐसे समय में बस हर घड़ी प्रभु भजन का ही सहारा रहा और परमात्मा से समस्त विश्व के कल्याण की प्रार्थनाएं करते रहे, शायद यह शुभ अवसर था परमात्मा से आत्मिक जुड़ाव का।

धीरे-धीरे स्थिति काबू में आई लॉकडाउन खुला और बाजारों में रौनक लौटने लगी दीपावली आने तक तो फिर वही भीड़ भाड़ के मंजर देखने में आने लगे लोग भूल गए कि यहां कभी कोविड भी था यहां तक कि लोगों ने मास्क लगाना भी छोड़ दिया। कहते हैं जब तक स्वयं पर विपता नहीं पड़ती तब तक कुछ भी समझना मुश्किल होता है। अचानक एक दिन मेरे पापा जी का स्वागत बहुत बिगड़ गया बेहोशी जैसे हालात होने लगे तो, हम दोनों बहने उन्हें तुरंत अस्पताल लेकर गए जहां उन्हें भर्ती किया गया परंतु साथ में कोरोना टेस्ट भी करवाया गया जबकि ऐसे कोई लक्षण नहीं थे! और रिपोर्ट तीसरे दिन आने की बात कही गई।

यह जो दो रातें थी वे 2 वर्षों की तरह कटी... चारों ओर सस्पेक्ट पेशेंट होने के कारण मन में एक अनजाना भय और दूसरी ओर पापा जी के स्वास्थ्य को लेकर चिंता अलग। जैसे-जैसे रिपोर्ट आने का समय करीब आता गया मन में अनेक शंका कुशंका घेरा डालती रहीं, परंतु एक विश्वास तो था की रिपोर्ट नेगेटिव ही आएगी इन दो दिनों में पापा जी के स्वास्थ्य में भी बहुत सुधार आया और जब मेरे फोन पर नेगेटिव रिपोर्ट आयी तो देखते ही मेरी आँखों में खुशी के आँसू आ गये, परमात्मा का धन्यवाद कर डॉक्टर को रिपोर्ट दिखाई तब छुट्टी हुई।

इस घटना ने अपने पराए में भेद सिखा दिया, जिन्हें अपना समझते थे वे अस्पताल का नाम सुनकर कन्नी काटते रहे यहाँ तक फोन पर भी हाल पूंछने से गुरेज किया। तब मैंने जाना किसी से कुशल क्षेम पूछना कितनी बड़ी मरहम का काम करता है। और उन सभी का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने हमे सम्बल दिया। कोरोना बहुत कुछ छीन कर ले गया परंतु जाते जाते एक सीख दे गया कि हमें प्रकृति के साथ जीना होगा। कहते हैं न इंसान 10 अच्छे काम करे पर एक बुरा कामकर दे तो वह एक बुराई उसकी सारी

अच्छाइयों को नष्ट कर देती है। 2020 ने हमें अनेक सौगातें दी थी

- बहुप्रतीक्षित विवाद खत्म हुआ श्री रामलला टेंट से मंदिर में विराजित हुए।

-इसरो के मिशन चंद्रयान-2 के द्वारा भारतवर्ष ने दुनिया में अपनी धाक जमाई

-वंदे भारत हाई स्पीड ट्रेन भारत में पटरी पर दौड़ने लगी।

ऐसे ही अनेक न जाने कितने कीर्तिमान की सौगातें दी।

लेकिन कोविड-19 महामारी ने उसके किए धरे पर पानी फेर दिया भारत ही नहीं पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया। ऐसे अवसाद के माहौल में भी अन्तरा ने उम्मीद का दामन नही छोड़ा और आपातकाल में सृजन कर एक नही अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। अनेक साहित्यकारों को लिखने के लिए प्रेरित किया। ऑनलाइन कार्यक्रम कर सभी मे नवउर्जा का संचार किया। कोविड ने हमे सिखाया कि सात्विक भोजन, व्यायाम को अपने जीवन का अंग बनाना होगा। हमे पैसा कमाने की मशीन नही मानव बन कर अपनों के बीच सपनों के संग जीना होगा।

अब 2020 की विदाई है ईश्वर से प्रार्थना करते हैं नववर्ष खुशियां लेकर आए सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें समस्त विश्व का कल्याण हो।

सुख समृद्धि डेरा डाले हो भारत खुशहाल
खुशियाँ हर घर लेकर आना अय प्यारे नये साल।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

अविस्मरणीय वर्ष २०२०

२०२० की शुरुवात ही ख़ुशियों से हुई। कावेरी का एम बी बी एस का रिज़ल्ट आया मन ख़ुशियों से भर उठा। बेटी ने सभी का सपना पूरा किया। इंटर्नशिप शुरू हो गई। फ़रवरी दुगुनी ख़ुशी लेकर आया बेटे का रिश्ता पक्का हुआ। घर में ख़ुशियों की लहर दौड़ उठी। मार्च का महीना थोड़ा मिलाजुला रहा। कोरोना जैसी भीषण महामारी की दहशत में सभी थे। कामवालियों की छुट्टी, दुकानें भी बंद सभी कुछ ऐसा लगता था मानों थम गया है, कुछ दिनों तो यही लगता रहा जैसे ज़िंदगी मानों थम सी गई है। धीरे धीरे सब कुछ अच्छा लगने लगा। सच कहूँ तो लॉकडाउन का जो समय था वो एक अलग ही समय था। सारा परिवार एकता के सूत्र में बँध गया था। सभी मिलजुल कर काम करते थे, किसी एक के ऊपर भर नहीं था। बड़ा आनंद आता है मिलजुल कर काम करने में। जिसने कभी हाथ में झाड़ू न उठाई हो वो हाथ झाड़ू पोछा लगाने उठ गए। कोई बर्तन तो कोई कपड़े पता ही नहीं चलता था और सारा काम हो जाता था।

अप्रैल में थोड़ा बेटे की शादी को लेकर चिंता बड़ी। तारीख़ में बदलाव लाने का विचार किया गया। दिन रात बस उसकी शादी की ही चिंता सताती रहती थी। बहुत सोच विचार कर हमने अप्रैल के आख़िरी में शादी को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया। शादी २५/६/२९२० की जगह ३०/११/२०२० की कर दी। फिर भी दिमाग़ काम नहीं कर रहा था। इकलौता बेटा पहली शादी ऐसे ही कैसे कर दें यही सोचते रहते थे दिनभर। अप्रैल और मई इसी तनाव में गुजरे। कोई कहता करो धरो फ़ुरसत पाओ, आगे क्या हालात रहते हैं किसको पता। किसकी बात सुनें समझ ही नहीं आता था। २ या ३ जून की बात है मैं और संजय जी बैठे थे यही सोच विचार में कि आगे भी स्थिति कैसी होगी पता नहीं। मैंने अपने भैय्या और बहनों से बात की मेरे चाचा और भाई ने मेरी बहनों ने भी सलाह दी तुम कर लो भगवान ने चाहा तो साल भर बाद अच्छे से

सेलिब्रेट कर लेंगे। अपने परिवार वालों के साथ बैठ कर बातें की अंत में ४ जून को हमने डिसाईड किया किया कि शादी पचास लोगों में तय तिथि पर ही करेंगे। बड़ी मुश्किल से मन को समझकर निर्णय लिया। शादी में सिर्फ़ दोनों बुआ, मौसी और नानी के अलावा कोई नहीं था। परिवार बहुत बड़ा है। २५० लोगों के परिवार में सभी का एक साथ एकत्रित होना भी सम्भव नहीं था, इसीलिए सभी दादा -दादी, चाचा-चाची लोगों को अलग अलग कार्यक्रमों में आमंत्रित कर बेटे की शादी की।

अपनों की कमी से शादी में सूनापन तो था, पर समय की माँग के अनुसार हमें ऐसा करना पड़ा।मेरे इस निर्णय का सभी ने हँस कर स्वागत किया पर आज भी मेरे भई बहनों को इस बात का दुःख है कि मैंने उन्हें बुलाया नहीं जबकि मैंने फ़ोन द्वारा सभी को ये सूचित किया था कि कार्तिक की शादी २५ जून को ही हो रही है पर आप लोगों को नहीं बुला पाने का मुझे खेद है। फिर भी इन सभी को बुरा लगा। पर मैं कुछ कर ही नहीं सकती मेरा मायका और ससुराल दोनों पक्ष में मैंने किसी को नहीं बुलाया। जितनी नंदें हैं, उतनी ही बहने भी। मैंने तो अपनी सगी भांजियों तक को नहीं बुलाया था। पिता तुल्य मेरे मामा जी जहाँ मेरा पूरा बचपन बीता, मेरे फूफा जी जिनको मेरे बेटे की शादी की बहुत ख्वाहिशें थी,मेरे सुरेंद्र जीजाजी जिनसे पता नहीं क्यों एक अलग ही लगाव है मेरे लिए सभी समान थे किसी एक को पूछना मेरे लिए मुश्किल था।भाई भाभी के बिना शादी अधूरी ही होती है। क्योंकि भाई भाभी ही तो भात भरते हैं।छोटी बहन सोनू ने भाई की ज़िम्मेदारी निभाई विदेश में बैठे भाई को भी को भी चिंता थी, कैसे होगा सब। संजय जी के मित्र श्याम खंडेलवाल ने मामा का नेंग किया जो मुझे अपनी बहन मानते हैं मुझे पता ही नहीं चला कब उन्होंने ये सब सोचा और मामा के सारे फ़र्ज़ निभाए। बहुत ख़ुशी हुई थी मुझे उस पल क्योंकि मुझे यही लग रहा था मेरे इतने सारे भाई भाभी हैं पर उनकी कमी महसूस हो रही थी जितने भाई हैं सभी मेरे लिए एक सा महत्व रखते हैं एक को बुलाती तो दूसरे को बुरा लगता। मेरी स्थिति किसी को शायद आज तक समझ ही नहीं आई या किसी ने मेरी परिस्थितियों को समझना नहीं चाहा शायद इसीलिए शादी के बाद मेरी बहनों ने मुझसे पूछा भी नहीं कि शादी कैसी हुई।हाँ पर शिकायत ज़रूर की कि मैंने फ़ोन नहीं लगाया। दोनों बड़ी दीदी शिखा दी और आरती दी और दोनों चाचा, बड़ी माँ, बुआ जी के अलावा। पर सभी से गुज़ारिश है जब आप मेरा ये संस्मरण पढ़े मेरी दुविधा को समझते हुए गिलेशिकवे दूर करें। मेरा परिवार आप लोगों से ही है मेरे प्यारे भाई भाभी एवं बहनों आप लोगों के अलावा कौन है हमारा। मामा, मौसी व उनके बच्चे, मेरी प्यारी भाँजियाँ बहुत खुश है सब कुछ ठीक होने का इंतज़ार है उन्हें जिससे जल्दी ही हम सब मिल सकें।

नई बहू का आगमन घर आँगन ख़ुशियों से भर गया अब मेरे पास एक नहीं दो दो बेटियाँ थी। प्यारी सी बहू का साथ पा कर दिल ख़ुशियों से झूम उठा। अभी तक बहू थी अब सास बनी पद बढ़ गया। अगस्त में एक और नई ख़ुशख़बरी दादी बनने की ऐसा लगा जैसे भगवान ने ख़ुशियों की बरसात ही कर दी मेरे आँगन में। इसी बीच एक दुखद घटना मेरी चाची सास का निधन। करवाचौथ का बहू सोनाली द्वारा अविस्मरणीय तरीक़े से मनाना हर लम्हा हर क्षण हमने बहुत ही मौज मस्ती से गुज़ारा। सोनाली के एक से बढ़कर एक सरप्राइज़ हमें सरप्राइज़ ही करते मिलते रहे।

२०२० का ११ वाँ महीना थोड़ा क्या कुछ अधिक ही कष्टदायी साबित हुआ। कुछ रिश्तों में कड़वाहटें आई जो उनके स्वयं के कारण पर दिल हम सभी का दुखा। कोई भी सम्बंध बनाना बड़ा आसान होता है पर उन्हें ताउम्र निभा पाना मुश्किल होता है । जहाँ रिश्तों में अपेक्षाएँ बढ़ जाएँ वहाँ रिश्तों की डोर में गाँठ निश्चित है। कुछ

ऐसा हुआ सालों से बने रिश्ते को कोई एक झटके में कैसे तोड़ सकता है या बोझ कैसे समझ सकता है आज तक ये बात हम सभी को समझ नहीं आई शायद ये वो ही कर सकता है को इसे बोझ समझता आया हो या जिन्हें इन रिश्तों की कोई अहमियत ही न हो वो ही इनसिक्योरिटी महसूस कर सकता है। फिर अचानक ही मेरी तबियत खराब होना, इनका बी पी बढ़ना, सोनाली का स्वास्थ्य ख़राब होना थोड़ा चिंतित कर गया। सभी तो नॉर्मल हो गए पर आज दीवाली के बाद से आज तक मैं बिस्तर में पड़ी हूँ। साल भर जहाँ ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ थी वहाँ थोड़ा ब्रेक लग गया। खून की कई तरह की जाँचे उसमें भी जो कल दो घंटे बैठना पड़ा कोरोना तो नहीं है ये सोच कर चिंता घबराहट बनी रही जब तक रिपोर्ट नहीं आ गई। भगवान का शुक्रिया कि कोरोना नहीं निकला। बड़ी आँत में सूजन, टायफाइड, ब्रॉनकाइटिस बस यही सब से गुजर रही हूँ बिस्तर पर हूँ सालभर मस्ती की काम किया । पर हम औरतों को आराम मिलता कहाँ है। ये समय भी निकाल जाएगा।

अदिति रुसिया
वारासिवनी

अविस्मरणीय वर्ष २०२०

सन् २०२० अपने अंकों के अनुसार आधा सुखद और आधा दुखद अनुभवों से पूर्ण है। यह वर्ष ऐतिहासिक वर्ष है। इतिहास में भी इस वर्ष को कोरोना महामारी के लिए हमेशा याद किया जाएगा। लगभग १०० वर्ष पुर्व भी इसी तरह की एक महामारी हमारे देश में फैली थी।

सन् २०२० के आरंभ में हमने हर बार की तरह बड़े धुमधाम से इस वर्ष का स्वागत किया लेकिन जनवरी माह के अंत दिनों में हमें यह जानकारी मिली की यह महामारी हमारे देश में भी प्रवेश कर चुकी है। इससे पहले यह सिर्फ विदेशों में ही थी। इसके बाद बड़े महानगरों से होते हुये यह महामारी गाँव और कस्बों तक फैल गयी।

सन् २०२० ने मेरे जीवन को बहुत से ऐसे अनुभवों से ओतप्रोत कर दिया है, जिन्हें मैं अपने जीवनकाल में नहीं भूल सकती हूँ। इस काल में व्यक्ति, वस्तु, स्थान के महत्व को प्रतिपादित किया। लॉकडाउन के समय में अपनों से दुर घर की चार दीवारों में रहकर हमने इस बात की अनुभूती हुई कि हमें अपना जीवन हर परिस्थिती और हर हालात मे अपनों के साथ खुशी के साथ रहना चाहिये।

अनेकों अनुभवों में मेरा सबसे बड़ा अनुभव या सबसे बड़ा डर यह कि अब किसको खोने की बारी है। हर दिन एक नये दु:खद समाचार को सुन-सुन कर मन भय से भर चुका है। अभी हम हैं, अगले पल का पता नहीं। इस महामारी ने ना जाने कितने ही घरों को सुना कर दिया, कितने ही बच्चे अनाथ हो गये, कई माताओं की गोद सूनी हो गयी, अनेक बहने विधवा हो गयी।

संकट के इस भयावह समय में कुछ लोगों ने अना सब कुछ लुटा कर पीड़ित लोगों को की सहायता प्रदान की वहीं दुसरी ओर कुछ लोगो ने फायदा उठाते हुये अपने बैंक बैलेन्स में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी की, लेकिन इस संकट में फंसकर एक बात समझ में आती है कि हमें प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए आज हम सबने अपने को पुर्ण रूप से स्वतंत्र एवं सर्व साधन सम्पन्न समझने की भारी भूल की है। इस वाइरस के माध्यम से प्रकृति अपना संतुलन बना रही है और हमें यह एहसास दिला रही है कि हम प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं, और हम प्रकृति के मालिक नहीं इस धरती माँ के लाल हैं, हमें हमेशा अपनी माँ की आन, बान और शान की रक्षा करना चाहिए।

एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह ही इस महामारी के अनेकों दु:खद पहलुओं के बीच अनेकों सुखद पहलु भी हमारे सामने हैं। जिनकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इस काल में लोगों ने जितना समय अपने परिवार को दिया है उतना इस जीवन में कभी नहीं दे पाते। कुछ ने तो एक गृहणी के कार्य को सारा दिन अपनी आँखों से देखने के बाद यह जाना की गृहणी होना इतना आसान नहीं जितना उनको लगता था।

सन् २०२० मेरे लिए इसलिए भी खास है कि इस वर्ष में मेरी पहली पुस्तक 'आपातकाल में सृजन फुलवारी' डॉ. प्रीति सुराना जी के कारण प्रकाशित हुयी। और आज मैने इस संस्मरण को लिखकर पुर्ण किया जो कि प्रीति दीदी के की प्रेरणा से ही संभव हो पाया है। लॉकडाउन के समय में १२२ पुस्तकों के प्रकाशन किया गया जो कि प्रीति दीदी एवं सह परिवार एवं तकनीकी संपादक संदीप सोनी के अथक प्रयास के कारण संभव हुआ। यह कार्य एक मिशाल एवं अपने में एक महान उपलब्धि है। इस कार्य के लिए प्रीति दीदी को लंदन बुक ऑफ रिकार्ड, एशिया बुक ऑफ रिकार्ड एवं अन्य कई एवार्ड से सम्मानित किया गया है।

इस कार्य के दौरान लॉकडाउन का भारी वक्त को भी इतना सहज और सरल कर दिया कि पता ही नहीं चला कि वक्त कब गुजर गया। प्रीति दीदी एवं समकित भैया ये दोनों ही प्रेरणा एवं ऊर्जा के ऐसे पुंज है कि इस पुंज के सानिध्य में पहूँचने में मात्र से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। हमें गर्व है कि हमें ऐसी महान हस्तियों की छत्रछाया प्राप्त हुई। हम ईश्वर से हमेशा यही प्रार्थना करते हैं कि भैया और दीदी का ये अनुठा साथ सदा बना रहे और पुरा अंतरा परिवार इनकी छाव में पनपता रहे। ईश्वर सदैव उन्हें सुख, समृद्धि एवं उत्तम स्वास्थ प्रदान करे।

आने वाला नूतन वर्ष २०२१ में अन्तरा परिवार दिन दो गुनी और रात चौगुनी सफलता प्राप्त करते हुये आसमा की ऊचाई तक पहूँचे। इस परिवार का यशोगान न सिर्फ अपने देश अपितु विदेशों में भी निरंतर होता रहे। वर्ष २०२१ अन्तरा परिवार के सदस्यो एवं अन्य नागरिकों के लिए मंगलमय हो।

हम उम्मीद करते हैं कि जनवरी मास के समापन तक सब सामान्य हो और नव वर्ष २०२१ सभी के लिए सुखद एवं मंगलमय हो।

धन्यवाद ।

सुषमा 'टीना' सोनी

परम शक्ति प्रकृति ही महान है

सन् 2020 तूने, अपना पूरा रंग दिखा दिया है,
उथल-पुथल सब मानव के जीवन में किया है,
इंसान को, सच्चा भगवान कौन है इसने बताया "रमा"
किसी को दी खुशियाँ, तो कुछ को बेहद रूला दिया है।

जी हाँ, सन् 2020 हर मानव, प्रकृति परिवार एवं सभी जीवों के दिमाग से कभी नहीं भूलने वाला साल है, इसकी याद अपने गाँव से दूर कमाने गए मूल भारतीय बन्धुओं, दीन-दुखियों, मजदूरों, गरीबों, बेसहारों के अन्तर्मन को जहाँ पूरा झंझोर देगा, वहीं कुछ अच्छे पारिवारिक माहौल के लोगों को यह पल, यह साल आनंदित करने वाला था।

कोरोना महामारी ने पृथ्वी पर अपना ऐसा प्रकोप फैलाया कि अच्छी-अच्छी पूजा, दुआएँ, सलाम, प्रार्थना, पुण्य कार्य का फल मीठा होता, कहलाने वाली कहावत पूरी तरह झूठी साबित हो गई, क्योंकि जो स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग, सफाई कर्मचारी एवं अन्य जो इस महामारी पर दूसरों की सेवा, सहयोग कर रहे थे, उनके मन में कहीं ना कहीं ये भाव जरूर रहे होंगे कि उनकी ड्यूटी के साथ-साथ

उनकी सेवा उनके परिवार में दुआ बनकर खुशियाँ ले आयेंगी, लेकिन....वो परिवारों में खुशी के बदले दुख, मातम आजीवन छाया, उनका पुण्य कार्य से पूरा विश्वास उठ गया। और कुछ महा बेईमान लोगों ने इसका पूरा फायदा उठाया जो ये समझदार, शिक्षित, सच्चे देशभक्त को बताने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है।

प्रकृति परिवार की गोद में निवासरत अति ग्रामीण एरिया, जंगल के बीचों बीच रहने वाले मानव (ट्राइब्स) इस प्रकोप से बिल्कुल अनजान रहा, बोला जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन को प्रकृति के स्वभाव के साथ ढालना सीखा है और उससे प्राप्त खाद्य सामग्री का सेवन बिना किसी मिलावट के किया है, साथ ही प्रदूषण से पूरे दूर शुद्ध वायु में सांस ले रहे है जो मानव जाति के जीवन के लिए अति आवश्यक ही नहीं बल्कि वरदानीय सिद्ध होती है और वो लोग आज पूर्णतः स्वस्थ और निर्मल मन भाव के है। इससे फिर यह भी साबित हो गया कि प्रकृति तू ही महान है बस.... । इसलिए एक कामना तेरे सच्चे पूजक लोग का ध्यान रख ।

स्वच्छता की बात की जाए तो यह साल बहुत-बहुत ही शानदार रहा, क्योंकि इस समय प्रकृति पूरी तरह से स्वंय सेनेटाइज हो गई थी, मानो वो एक संदेश देती हुई उसके अनुरूप रहने का वचन ले रही है, क्योंकि इस समय मैंने सबसे ज्यादा नदियों को स्वच्छ देखा, जंगलों में निवास करने वाले समस्त जीवों को निडरता से स्वच्छंद होते हुए विचरण करते हुए देखा, पर्यावरण पूरा शुद्ध एवं प्रदूषण रहित रहा।

वहीं देखा जाए तो शहर पर निवासरत इंसानों पर बेहद इसका असर पड़ा, उनका जीवन बहुत अस्त व्यस्त हो गया था, वहीं बड़े-बड़े शहर में गए कमाने मजदूरों की जिंदगी बहुत ही बद्तर हो गई थी, जिसका नजारा सोशल मीडिया के माध्यम से सभी उपयोगकर्ता को भलीभाँति पता चल गया, बहुतों ने अपनी इंसानियत को पूरी तरह त्याग कर राक्षस रूप इस समय धारण कर अपने को महान दिखाने का भरपूर प्रयास करने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, ऐसे कई कांड है जो सही मानव को अंदर तक पूरा डरा देती है।

इस समय साहित्यकारों, लेखन सृजनकर्ताओं को अपनी रचना, लेख, विचार व्यक्त करने, लिखने के लिए एक नयी विषय वस्तु बहुत अच्छी मिल गई थी जिसका लाभ सभी ने लिया, जहाँ बहुत से काम बंद से, वहीं लेखन का काम बल्कि बहुत तेजी से हुआ, इससे पुनः लेखन का महत्व समझ आ गया ।

"अन्तरा शब्दशक्ति" प्रकाशन संस्था बालाघाट म.प्र. ने भी सभी कलमकारों को अपने मन भाव एवं कलम को जीते जी कभी ना रोकने का बेहतरीन संदेश दिया ही नहीं बल्कि बहुत से भावों का लिखित दस्तावेज तैयार किया, सबके भावों को संजोया और ढेर सारी खुशियाँ सबकी झोली में एक सम्मान स्वरूप भी दी।

सभी सामाजिक संगठन भी इस समय बेहद सक्रिय हुए थे, जिसमें हमारी I.P.F महिला मंडल बालाघाट म.प्र. की टीम भी बिल्कुल पीछे नहीं रही, इससे जुड़ी मातृशक्तियों ने इस समय हर बार की तरह इस संकटकाल में भी अपने यथाशक्ति बहुत से गरीब परिवारों को खाद्यान्न, मास्क की व्यवस्था अपने खर्चे से कर मानवता का परिचय दिया, टीम की महिलाओं को घर में रहकर भी अपने परिवार के साथ-साथ जरूरतमंदों को सहयोग करने के लिए तत्पर रहना सिखाया और महिलाएं भी पुरूषों से कम नहीं, वो भी सब कर सकती है ये भाव मन में जाग्रत किया।

लेकिन.... शिक्षा का स्तर इस समय देश में पूरा गिर गया, बच्चे शिक्षा के साथ-साथ जीवन के व्यवहारिक ज्ञान से बहुत दूर हो गए, ऑनलाइन पढ़ाई ने शिक्षा की पोल खोल दी, कि बच्चे शाला में ही अच्छे से शिक्षा, अनुशासन, नैतिक, व्यवहारिक ज्ञान, बोलचाल, समय का महत्व आदि सब शाला परिवेश में ही बेहतर सीखते है। यह कहावत भी "कोई पेट से सीखकर नहीं आता" सौ प्रतिशत सिद्ध हुई। क्योंकि

विद्यालय-महाविद्यालय खुलने का सबको बेसब्री से इंतजार है ताकि बच्चों का भविष्य बेहतर बन सके, क्योंकि जैसी शिक्षा, वातावरण में बच्चे अध्ययन करेंगे वही भाव वो भारतीय समाज में देने का काम करेंगे ।

खेलकूद में घरेलू, इनडोर गेम का महत्व बहुत अधिक मात्रा में बढ़ गया, लोगों ने पुराने समय में प्रचलित खेलों को इस समय अपनी भावी पीढ़ी के सामने लाकर खेल मानव जाति का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें मानव भाग लेकर अपने को मानसिक एवं शारीरिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ रख सकता और अपने को सदैव ऊर्जावान बनाएं रखता है । खेल ना सिर्फ एक या दो या समूह में खेलने वालों को खुशी देती बल्कि देखने वाले भी इस आंनद का भरपूर मजा लेते है । इसलिए मानव जीवन में खेलों का महत्वपूर्ण स्थान है।

राजनीति नाम ही कापी है जिससे उसके विषय का पता चल जाता है, और इस समय हमारे देश में शत प्रतिशत हावी है, अगर सत्ता पक्ष में बोलेंगे तो ही है, और आप ने अपनी बात विपक्ष में रख दी तो खैर.... नहीं, अब तो जो हो रहा चुपचाप देखते जाइए बोले तो फिर खैर नहीं। कितने मासूमों, गरीबों की बस्तियाँ उजाड़ कर दो-चार अमीरों को व्यापार हेतु देने के चर्चे आम बात हो गई, मूलवासियों (आदिवासियों) की जमीन जो प्राचीन काल से उनके पूर्वज के साथ-साथ वो भी निवास कर रहे है उन्हें वहाँ से निकाला जा रहा है, नहीं निकलने वालों को नक्सली तक बोल दिया या मारा जा रहा है, जो बहुत निंदनीय कार्य के साथ-साथ मानव जाति के लिए यह कलंक की बात है, लेकिन.... इस और किसी का भी बिल्कुल ध्यान नहीं जा रहा है, तथा जाति, धर्म के नाम से जो खेल खेला जा रहा वो भारत देश के लिए शोभनीय एकदम नहीं है।

मत लो अब, इतना इम्तिहान किसी का,
खूनी बनने तैयार हो वो फिर किसी का।
मासूम है माफ कर देंगे अभी भी वो लोग
"रमा" आखिर हमारा देश है हर किसी का।।

बात हो रिश्तों की तो बहुत से रिश्तों ने इस साल दुख की घड़ी में अपने रिश्ते प्रगाढ़ बनाएं, एकदूसरे को ना जानते हुए भी सहयोग किए तो वहीं कुछ ने अपनी फितरत अनुसार चालाकी से रिश्तों को जानबूझकर तोड़कर अपनी दुनिया में मस्त खो गए है, उन्हें मुबारक हो उनकी जिंदगी, उनकी खुशियाँ..... वैसे यह साल अपने परायों की भी पहचान कराया है, इसलिए सन् 2020 को शुक्रिया पूरा-पूरा देना का बनता है।

सन् 2020 जब भी याद आएगा "रमा"
इसे कोरोना महामारी के नाम से जाना जाएगा।

प्रकृति-प्रेमी
रमा "प्रेम-शांति" बालाघाट

वर्ष २०२० के खट्टे मीठे अनुभवों का अहसास

वर्ष २०१९ जैसे ही बीता तो हम सभी ने वर्ष २०२० का स्वागत बड़े ही धुमधाम से भारतीय संस्कृति से किया सुबह से ही पूजा अर्चना की मंदिर जाकर अभिषेक शांतीधारा देखी, सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएँ देने लेने का सिलसिला मोबाईल के द्वारा चलता रहा।

१४ जनवरी मकर सक्रांति को समस्त जैन समाज के साथ पिकनीक का प्रोग्राम हमनें अपने थानेगाँव फार्म हाऊस में रखा सभी वर्ग ने अत्यंत आनंद लिया। २६ जनवरी का प्रोग्राम बच्चों के स्कूल में हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। फरवरी माह तक जीवन सामान्य रूप से चल रहा था, अपना देश भी विकासशील से विकसित होने की दिशा में बढ़ रहा था, दुनिया के सबसे ताकतवर देश के प्रधानमंत्री के स्वागत में पूरा देश लगा था कार्यक्रम का आयोजन गुजरात में हुआ कार्यक्रम था 'नमस्ते ट्रम्प'।

राजनिती में भी उठा-पटक का माहौल मार्च तक चलता रहा, सरकारें बदली नयी सरकारें बनी। इसी समय टी.वी., मोबाईल में न्यूज देखते थे की चीन में एक बीमारी ने दस्तक दी जिसका नाम कोविड़ १९ था, जो कि कोरोना वायरस से फैलता था, जिसके लक्षण (छूने, से, खासने, छिकनें से फैलता था) जो एक महामारी के रूप में थी।

ऐसी जानकारी सरकार द्वारा समस्त देशवासियों को दी गई, शुरू में इतना अंदाजा ही नहीं था कि ये बीमारी इतनी खतरनाक होगी की जान भी ले लेगी। अनेक विकसीत देशों में यह बिमारी ने विकराल रूप ले लिया लाखों जानें चली गयी। विशेषज्ञों को भी यह बिमारी समझनें में समय लगा फिर विशेषज्ञों एवं W.H.O. की सलाह से सरकार ने कोविड़-१९ को खत्म करने के लिए २१ मार्च २०१९ को एक दिन का जनता कर्फ्यू लगाया। फिर ३ दिन का जिलाधीकारों द्वारा लगाया गया। जिसमें पूरे स्कूल, कालेज, ट्रेन, बसें, हवाई जहाज, पूरा बाजार फेक्ट्रीयाँ, ऑफिस सब बंद कराये गये। पूरी परीक्षाएँ स्थगित कर दी गई, पूरे प्रोग्राम भी स्थगित हो गये। पूरे देश में २१ दिन के लिए ठोस रूप से तालाबंदी की गई और सभी को निर्देशित किया गया, आवागमन पर पाबंदी, घर पर रहने की सलाह दी गयी, पूर देश घर में कैद हो गया। वह २१ दिन कभी भूल नहीं सकते, कोविड़ १९ का इतना डर था कि एक हाथ से दूसरे हाथ धोते थे, घर पर भी मास्क पहनते थे, किसी आवश्यक कार्य से बाहर गये तो तुरंत आकर नहाकर ही घर में प्रवेश करते थे। मम्मी-पापा को ये २१ दिन तक घर से बाहर नहीं निकलने दिया। तालाबंदी में हम दैनिक क्रिया से निवृत होकर घर पर ही रहकर सभी एक साथ पूजा अर्चना करते थे, हमारा सम्मिलित परिवार हैं फिर भी सभी एक साथ भोजन करते थे।

ये तालाबंदी में नया अनुभव प्राप्त किया कि परिवार ही सब कुछ है, पहले की तुलना में एक दूसरे की परवाह ज्यादा हो गयी, बहुत से ऐसे आनंदित पल रहे जैसे पापाजी ने चाय पिलाई, भैया जी (जेठजी) के हाथों के व्यंजनों आनंद लिया। पापाजी के साथ मिलकर शतरंज खेले। लेकिन हम सब मिलकर भी उनको (पापाजी) को नहीं हरा पाये हर बार पापाजी ही जीते। इन दिनों ही रामायण शुरू हुई वहीं पुरानें यादे रामायण की ताजी हो गये जो मैनें बचपन में पूरे परिवार के साथ बैठकर एंटिना घुमाकर देखी थी। लाईट बंद कर सभी शांती से हाल में बैठकर बच्चों-बड़ों के साथ रामायण देखते थे। इस बार रामायण को सहीं मायने में समझ पाये।

तालाबंदी से एहसास हुआ कि दुनिया की चकाचौंध बेकार है, शांत, सौम्य एवं स्वच्छंद स्वस्थ वातावरण जीने का मौका मिला बिना किसी दिखावे के सभी ने जीवन यापन लिया। कोविड़ का डर इतना हो गया था कि लग रहा था कि पहले जैसे दिन दुबारा आयेंगे की नहीं, जीवन रूक सा गया था। २१ दिन पश्चात थोड़ा जीवन सामान्य हुआ इसके बाद पूरे त्योहार, कार्यक्रम सीमित दायरे में रहकर मनाना पड़ा, जैसे महावीर जयंती, घर पर ही मनाई गयी एवं घर में ही शोभायात्रा (भगवानजी) की निकाली।

बच्चों के राखी भी घर पर ही बनाई रक्षाबंधन पर्व पर भईया लोग भी नहीं आ पाये एवं पर्युषण पर्व (दशलक्षण पर्व) पर घर पर रहकर ही बच्चों ने पूरी तैयारी करके १० लक्षण के १० धर्मों के १० दिन अलग अलग कार्यक्रम आयोजित किये। हम सभी ने ऑनलाईन प्रवचनों का लाभ लिया। ऑनलाईन प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिला पूरे वर्ष में विभिन्न जगहों पर हुई प्रतियोगिता में भाग लिया एवं सभी बच्चों ने प्रमाण पत्र प्राप्त किये। मुझे भी अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर लाईव फेसबुक आने का अवसर मिला एवं सभी बच्चों ने मिलकर स्कूल की तरह १५ अगस्त (स्वाधीनता दिवस) घर पर ही आयोजित किया गया, जिसको परिचितों द्वारा बहुत सराहा गया।

सरकार द्वारा समय समय पर तालाबंदी में दिखाई देती रही और हर क्षेत्र को विभिन्न जोन में बाटा गया जीवन सामान्य करना चुनौती थी, हमारा एरिया (क्षेत्र) ग्रीन जोन में, ओरेंज जोन से रेड जोन हो गया। कोविड़ का डर था

नवरात्रि, दशहरा, दीपवली सब त्योहार, सामाजिक दूरी में मास्क पहनकर बनाये गये। फिर कोविड़ की लहर कभी कम होती कभी ज्यादा होती रहती। फिर भी जीवन सामान्य स्थिती में आया।

बीते ८-१० माह में जीवन में विभिन्न अनुभव प्राप्त हुए कि बिना कहीं जाये भी जीवन जी सकते हैं। कम बजट, कम आवश्यकता में भी जीवन खुश रहा जा सकता है। एक दूसरे के बारे में सोचने का मौका मिला। समाज के कमजोर वर्ग की मदद करने की प्रेरणा मिली। विभिन्न समूह के साथ मिलकर विभिन्न बड़े शहरों से वापस आ रहे मजदूर भाई की उचित व्यवस्था करने का प्रयास हमारे परिवार के बड़े लोगों ने किया और सभी मजदूर भाईयों को यथा स्थान पहुँचाने में सहयोग किया।

ऐसे बीतते-बीतते न मंडई, न मेला, न प्रदर्शनी, न कहीं आना, न कहीं जाना, पूरा साल हो गया, नवंबर आ गया। नवम्बर में ही हमने अपने नये मकान में प्रवेश करने में बहुत सारी चुनौतियों का सामना करते हुए प्रवेश किये क्योंकि पूरा परिवार साथ था। इसलिए हौसला भी है। २०२० वर्ष में कुछ मीठे अनुभव के साथ-साथ कड़वे अनुभव भी प्राप्त हुए। स्कूल न खुलने की वजह से बच्चों की पढ़ाई का नुकसान हुआ, ऑनलाईन पढ़ाई से बच्चों को मोबाईल की आदत पड़ गयी और हम उन्हें रोक भी नहीं सकते। देश की आर्थिक स्थिती भी कमजोर हुई। सरकार को तालाबंदी से टेक्स भी नहीं मिला, मजदूरों की दशा भी दयनीय हो गयी। समाज के प्रेरक प्रेरणास्त्रोत साधु संतो की सुरक्षा भी चिंताजनक रही, बीते वर्ष २०२० में न तो किसी के दु:ख में शामिल हो पाये न ही किसी के सुख में।

किंतु अब एक नई सकारात्मक सोच बनाकर कोविड़ की बीमारी एवं उसके द्वारा बनाया डर समाप्त हो। इस उम्मीद के साथ २०२० को अलविदा करके २०२१ का स्वागत नये उत्साह नये उमंग एवं नये आनंद के साथ करें।

२०२१ नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ के साथ...

मीना विवेक जैन
वारासिवनी, जिला बालाघाट,
८८२१८२१८४९

खट्टे मीठे अनुभवों से भरा अनोखा वर्ष 2020

2019 के अन्तिम चरण में कदम रखते ही कुछ अलग सा एहसास होने लगा। आँख रह-रहकर फड़कने लगी। मन में बुरे बुरे ख्याल आने लगे, अनजानी आशंका दिल धड़काने लगी, पर मन को किसी प्रकार समझाकर मजबूती से सकारात्मक सोच के साथ मैंने आगे बढ़ने का संकल्प किया।

सन् 2020 की जनवरी अर्थात् नया वर्ष... आ चुका था। जब भी टी.वी. पर समाचार देखने के लिए मन बनाया, तो हर चैनल पर वही कोरोना वायरस की खबर। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कोरोना वायरस है क्या? इतना खतरनाक व जानलेवा क्यों है? हर चैनल बता रहा था कि यह वायरस चीन के वुहान शहर से निकला है। न चाहते हुए भी चीन के लिए दृष्टिकोण अच्छा नहीं रहा। देखते ही देखते बड़े-बड़े देश, द्वीप, महाद्वीप इसकी चपेट में आने लगे। अमेरिका, इंग्लैंड, इटली, रूस, जर्मनी, थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया और साथ ही भारत भी।

इस बुरे दौर से मन आशंकित हो रहा था बार-बार। कहीं पर्वतों के खिसकने की खबर, कहीं किसी देश में भयंकर आगजनी, कहीं विमान के फिसलने से भयंकर दुर्घटना, कहीं समुद्री तूफान... ऐसा लग रहा था मानो कलियुग का अन्त निकट ही है। चीन की हरकतों से तो विश्व युद्ध की स्थिति बन रही थी। चीन मानों अमेरिका से सुपर पावर छीन लेना चाहता था, अर्थव्यवस्था को तहस नहस कर देना चाहता था और एक बहुत बलशाली, साधन सम्पन्न देश के रूप में पूरी दुनिया में अपना परचम लहराना चाहता था। समुद्र में भी दूर दूर तक कई

किलोमीटर तक अपने टापू बनाकर अपनी हद को विस्तृत कर दिया। एक तरह से मानो युद्ध का बिगुल बजा दिया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी चीन की कूटनीतियों का समर्थन करने के कारण शंका के दायरे में आ चुका था। अनायास ही 1960 से 1980 के मध्य घटी पुरानी घटनाएँ आँखों के समक्ष पुनः जीवंत हो गईं। देश में ब्लैक आउट, पाकिस्तान से हुआ मनमुटाव, बांग्लादेश की घटना, लड़ाकू विमानों की रात रात भर दिल दहलाने वाली आवाज़ें, बी. बी. सी. से होने वाले ख़ुफ़िया प्रसारण इत्यादि। खैर....अब कुछ अच्छा सुनने के लिए कान तरस रहे थे।

बड़ी बेटी आयुषी लगभग 8 महीनों से सिंगापुर में रह रही थी। फरवरी में हमारी भी सिंगापुर जाने की तैयारी थी। पासपोर्ट, वीजा तैयार था। होटल बुक हो चुके थे। फ्लाइट टिकट्स हो चुके थे, पर जितने लोग उतने तरीके की राय। सब अपनी ओर से पूरी तरह से डराने पर आमादा थे, पर चूँकि बेटी खुद सिंगापुर में रह रही थी, तो वस्तुस्थिति को उससे बेहतर कोई नहीं बता सकता था। अन्त में हमने सिंगापुर जाने का निश्चय कर लिया। न टिकट कैंसिल की, न कोई और बुकिंग कैंसिल की। हम 14 फरवरी "वैलेंटाइन डे" के दिन निकल पड़े सिंगापुर के लिए। नागपुर से मुंबई और मुंबई से इंटरनेशनल फ्लाइट से सिंगापुर।

सभी सावधानियाँ बरतते हुए, मास्क, दस्ताने वगैरह पहनकर सिंगापुर की धरती पर हमारा पदार्पण हुआ। लगभग 7 दिनों तक हम सिंगापुर में रहे। वहाँ के समुद्री टापू की सुन्दरता का, जिसे दक्षिण पूर्व एशिया का अन्तिम छोर माना जाता है, हमने बहुत आनन्द लिया। बेहद खूबसूरत साफ सुथरा देश है सिंगापुर। नियम कानून का स्वेच्छा से पालन करने वाले वहाँ के नागरिक, यातायात के नियमों का पालन करती मार्ग पर दौड़ती गाड़ियाँ, वहाँ का मर्लायन, सिंगापुर फ्लायर, सी एक्वेरियम, राष्ट्रीय संग्रहालय, राष्ट्रीय आर्ट गैलरी, गार्डेस बाय द बे का लाइट एण्ड साउण्ड शो, हेलेक्स ब्रिज, इत्यादि का नयनसुख लेकर वापस मुंबई और फिर मुंबई से हम नागपुर लौटे। एयरपोर्ट पर कोरोना वॉरियर्स द्वारा हमारी जाँच हुई, जिसमें हम सभी सुरक्षित और स्वस्थ पाए गए और वापस नागपुर आकर अपने काम में मशरूफ हो गए।

कोरोनावायरस के बारे में और बढ़ा चढ़ाकर सारे खबरी चैनल बताने लगे। खबरें अखबारों की सुर्खियाँ बनने लगीं। देश के प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी जी देश के लोगों से अपने मन्तव्य में धीरज न खोने का निवेदन करने लगे। "मन की बात" में देशवासियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी सलाह देने लगे। जनता कर्फ़्यू को लोगों ने दिल से सार्थक किया।

तभी 10 मार्च 2020 को होली का त्यौहार आया। उस समय हमारी बड़ी बेटी आयुषी ने भी घर से काम करने का निश्चय किया और वह पूरी तरह से चीजों को समेट कर सिंगापुर से भारत (गुड़गाँव) आ गई। मन निश्चिंत हो गया कि चलो बेटी अब अपने देश में है, जब चाहेंगे मिल सकेंगे, जरूरत पर पहुँच सकेंगे।

छोटी बेटी श्रेया भी जनवरी 2020 से मुंबई में ही रह रही थी। उसकी इंटर्नशिप चल रही थी लार्सन एंड टुब्रो कम्पनी में। फरवरी में वह साथ ही सिंगापुर गई थी। उसके बाद वह..... फिर काम पर वापस मुंबई चली गई। घर में नीरसता बढ़ती जा रही थी।

दोनों बेटियाँ बाहर, पति भी बाहर, बस एक ही सहारा था.. मेरा विद्यालय, जहाँ मैं एक शिक्षिका, एक विभागाध्यक्ष, विद्यालय की कोर सदस्य और प्राथमिक प्रभारी के रूप में कार्यरत थी। इसी बीच विद्यालय में बोर्ड की परीक्षा शुरू हो गई। डर के माहौल में भी बच्चे पढ़ रहे थे और अध्यापिका के रूप में मैं अपने पूर्ण मनोयोग से सहयोग दे रही थी। बस अन्तिम दो विषयों के पेपर बचे हुए थे। तभी सरकार के निर्देश के तहत परीक्षा रद्द तो नहीं की गई... बस टाल दी गई।

19 मार्च 2020 का दिन... विद्यालय भी सरकारी निर्देश के अनुसार बंद कर दिया गया। सामाजिक दूरी के नियम पालन किए जाने लगे। हर चेहरे पर मास्क और आसपास हर जगह सैनिटाइजर की खुशबू, हर बिल्डिंग.... हर पब्लिक

यूटिलिटी स्थल को सैनिटाइज किया जाने लगा। कुछ सम्प्रदायों ने सरकारी नियमों को ताक पर रख दिया। अन्ततः लॉकडाउन लग गया विश्व के सभी देशों में।

उसके बाद लगभग एक महीने तक घर पर रहना पड़ा। काम करने की आदत थी और काम था नहीं, तो सोचा कि चलो इस बीच कुछ कोर्स कर लिए जाए। अप्रैल में भगवद्गीता पठन और योगा की क्लास ज्वाइन कर ली और दिन में 2 घंटे भगवद्गीता और योगा को समर्पित कर दिए। सी.बी.एस.सी. बोर्ड को भी लगा कि यही सही समय है, जब सारे शिक्षक शिक्षिकाएँ घर पर खाली बैठे हैं। तो क्यों ना, उनके लिए कुछ कार्यशालाओं का आयोजन कर दिया जाए, जिससे घर बैठे बैठे वह अपने ज्ञान का विस्तार कर सकें। फिर शुरू हो गए वेबीनार - एक के बाद एक। पुणे, दिल्ली, मुंबई, उत्तर प्रदेश से सारे विशेषज्ञ कार्यशाला पर कार्यशाला आयोजित करने लगे। गूगल मीट, ज़ूम एप, वेबैक्स ये तत्काल अस्तित्व में आ गए और अपने पंख फैलाने लगे। तकनीक के माध्यम से लोगों को जोड़ना शुरू किया गया। उनको ट्रेनिंग देना शुरू किया गया। विद्यालयों में जाकर इनके प्रतिनिधियों ने प्रबन्धन समिति से बातचीत करना शुरू कर दिया और फिर शुरू हुआ ऑनलाइन कक्षाओं का चलन।

ऑनलाइन कक्षाएँ लेनी थीं, तो सबसे पहले बड़ी कक्षाओं के छात्रों को जोड़ा गया। पढ़ाने की नई तकनीक का प्रयोग किया गया। सभी ऐप कंपनियों ने अपने 3 महीने के फ्री वर्जन से सभी विद्यालयों को लुभाया, फिर बाद में पेड वर्जन से पढ़ाने की बात की। स्क्रीन शेयर कर सकते थे, बोर्ड पर लिख सकते थे, फ्रंट और बैक कैमरे का प्रयोग कर सकते थे। पूरी क्लास को एक साथ म्यूट कर सकते थे। काफी सुविधाएँ थीं। कुल मिलाकर संतुष्टि मिल रही थी। इसी बीच सी.बी.एस.ई. ने सरकारी आदेशों का पालन करते हुए बचे हुए दो पेपर लेने का ऐलान कर दिया। उसके बाद मूल्यांकन भी किया क्योंकि छात्र परीक्षाफल की प्रतीक्षा में थे। अब कोरोना सब जगह फैल चुका था। घर में रहो तो डर, बाहर निकलो तो डर, परन्तु... काम तो करना था। आखिर शिक्षिका जो ठहरी। अप्रैल, मई और जून इसी तरह से बीते।

जून के महीने में कुछ प्रदेशों में कुछ अभिभावकों ने विद्यालय और अध्यापकों के कठिन परिश्रम को दरकिनार कर, अपना एक विद्रोही संगठन तैयार कर लिया। मोबाइल, लैपटॉप की पढ़ाई को नकार दिया। तथाकथित गलत मंसूबों को हवा देने के लिए राजनैतिक दलों ने भी लोगों को उकसाना शुरू कर दिया। इसके विपरीत पढ़े लिखे समझदार अभिभावकों ने परिश्रम और परिस्थितियों का मूल्य समझा और विद्यालय के द्वारा उठाए गए कदम की प्रशंसा की।

एक शिक्षक इस महामारी के दौर में जहाँ.... तीन गुना बढ़े हुए काम को पूरी निष्ठा से कर सन्तुष्टि का अनुभव कर रहा था, वहीं बच्चों को प्रत्यक्ष न देख पाने का दुःख भी झेल रहा था। यही हाल बच्चों का भी था। विद्यालय की क्या कीमत होती है, इस महामारी ने अच्छी तरह से समझा दिया था। कुछ अभिभावकों ने तो तालियाँ बजाकर शिक्षकों की मल्टीटास्किंग की प्रशंसा की। ऑनलाइन कक्षाएँ चलतीं रहीं.... अभिभावक इन्तजार कर रहे थे विद्यालय के खुलने का...

तभी जुलाई में नयी शिक्षा नीति अस्तित्व में आ गई और फिर से चला वेबीनार का दौर। तमिलनाडु के गवर्नर श्री बनवारी लाल जी पुरोहित हमारे विद्यालय के चेयरमैन हैं। उन्होंने नयी शिक्षा नीति के तहत गाइडलाइन्स ज़ारी की और सभी प्रभारियों को इस पर विचार विमर्श करने का अनुरोध किया। हमारे विद्यालय की डायरेक्टर श्रीमती अन्नपूर्णी शास्त्री मैडम ने भी अखबारों में इस विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस दौरान मैं भी एक लेखिका के रूप में अपनी उन तमाम इच्छाओं का संवर्धन करना चाह रही थी, जिनको समयाभाव के कारण मैं अक्सर दरकिनार कर दिया करती थी। मैं अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन से जुड़ी हुई थी और इस कोरोना वायरस को ठेंगा दिखाते हुए मैंने विचारों को

केन्द्रित किया और अपनी लेखनी की धार तेज की। मई से अगस्त तक में "आपातकाल में सृजन फुलवारी", "हाँ ! मैं आत्मा हूँ", "आर्ष विरासत" ... तीन पुस्तकें लिखीं और प्रकाशित करवा डालीं। साझा संकलन में भी "आपातकाल में सृजन" (2.5 किलो की पुस्तक:एशिया बुक रिकॉर्ड में सम्मिलित), "भाव और भाषा" (हिन्दी दिवस को समर्पित) और "अनोखा वर्ष 2020" में भी अपनी कलम चलाई।

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन द्वारा आयोजित फेसबुक लाइव और यू-ट्यूब चैनल पर भी अगस्त माह में मैंने अपनी प्रस्तुति दी। हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए इस वर्ष 2020 में मुझे अनेक प्रकार से सम्मानित किया गया..... कलम के सिपाही सम्मान, कुण्डलिया विधा रत्न सम्मान, साहित्य साधक सम्मान, लोकप्रिय रचनाकार सम्मान, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, साहित्य सेवी सम्मान, हिन्दी गौरव सम्मान इत्यादि इस कोरोना काल की उपलब्धियाँ थीं। विद्यालय प्रबंधन समिति ने भी इस वर्ष भवन्स कुलपति मुंशी सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान 2020 के लिए मेरा चयन किया। आभारी हूँ अपने विद्यालय के अधिकारियों और मित्रों के प्रति, जिन्होंने मेरे काम की सराहना की और मुझे सम्मान के योग्य समझा।

एक अलग रुझान मेरे भीतर जैसे जन्म ले रहा था। आध्यात्मिक रुचियाँ हावी हो रही थीं। पौराणिक ग्रन्थों का पाठ, सुन्दर काण्ड, गायत्री चालीसा, 108 गायत्री मंत्र, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण इत्यादि का महामारी के इस दौर में, मैं नियमित पाठ करती रही। मेरी दोनों बड़ी बहनों ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग पर दिल्ली और मुंबई से मेरे साथ-साथ पाठ किया। आस्थावान मन अपने देश की महती संस्कृति के प्रति नतमस्तक होता गया और फिर मानों ईश्वर ने अपना हाथ मेरे सिर पर रख दिया हो। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जन-मन तक पहुँचाने के लिए विचारों की लड़ियाँ बुननी शुरू हो चुकी थीं। मैंने फेसबुक को अपना माध्यम बनाया और अप्रैल माह से निर्बाध कथा कथन शुरू कर दिया। विष्णु पुराण, गरुड़ पुराण, भविष्य पुराण, हरिवंश पुराण, भागवत पुराण, उपनिषद्, रामचरितमानस, महाभारत, भगवद्गीता, नीतिशतक जैसे अनगिनत आर्षग्रन्थों के हवाले से महान मनीषियों द्वारा रचित आर्षग्रन्थों में निहित नैतिक मूल्यों को नये काव्यात्मक कलेवर में सचित्र प्रस्तुत करना शुरू कर दिया। प्रतिसाद और प्रतिक्रिया आशा से कहीं अधिक थी। लोग चर्चा करने लगे, विद्वज्जन और विदुषी महिलाएँ बौद्धिक हविष की तलाश में जुड़ती गईं। एक आत्मिक शान्ति और असीम सुख की अनुभूति होने लगी कि लोग इन पौराणिक काव्यात्मक कथाओं के माध्यम से अपनी संस्कृति के करीब आने लगे। विचारों में शुद्धता की खुशबू दूर से ही महसूस होने लगी। नियन्ता और नियति में सदा से मेरा विश्वास रहा है। प्रभु की कृपा थी कि परिवार से प्राप्त संस्कारों को लोग सराहने लगे।

नवम्बर और दिसम्बर में खबर फैलने लगी कि दीपावली के बाद कोरोना वायरस का दूसरा चरण आने को तैयार बैठा है। घबराहट पुनः बढ़ रही थी, किन्तु अब तक लोगों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास हो चुका था और खास बात यह थी कि इतनी नकारात्मकता के उपरान्त भी लोगों ने सकारात्मकता और सरकार का साथ नहीं छोड़ा। 2020 बस 2021 से कुछ ही दूर था...साँसों की गति धीरे धीरे सामान्य हो रही थी...

श्रीमती रंजना श्रीवास्तव
(शिक्षिका/लेखिका)
नागपुर-महाराष्ट्र
मो.9096808191
मेल. srivastavaranjana9@gmail.com

मेरे अनुभव 2020

कहते हैं ना कि, अच्छी या बुरी कोई भी घटना हो, या फिर जीवन में आए अप्रत्याशित पल, हमें जाते-जाते कोई ना कोई अच्छा सन्देश या सबक जरूर दे जाते हैं। कुछ ऐसा ही रहा वर्ष 2020

कभी-कभी नाम या नाम से जोड़कर निकाले गए अर्थ में हम मात खा जाते हैं। जैसे ही अपने आप में विशेष इस ऐतिहासिक वर्ष का आगमन हुआ, मन में जाने क्यों कुछ कर गुजरने का रोमांच उत्पन्न हुआ। सारी दुनिया ने इसे ट्वेन्टी-ट्वेन्टी के रूप में देखा, और देश दुनिया के अधिकांश लोगों ने 2020 के आते ही, ऐसा महसूस किया जैसे, आम और खास सभी खिलाड़ी हों, और सारा विश्व खेल का मैदान।

कवयित्री होने के नाते मैंने भी 2020 पर दर्जनभर कविताएँ लिखी, और वो कविताएँ समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुईं।

6 जनवरी के दिन ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग की घटना सामने आई कुछ सूत्रों के अनुसार वह आग स्थानीय लोगों के द्वारा लगाई गई थी जिसने बाद में भयंकर रूप धारण कर लिया। यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी के इकोलॉजिस्ट के अनुमान से लगभग 48 करोड़ जानवर आग में झुलस कर मारे गए जिसमें पशु पक्षी और रेंगने वाले जीव जन्तु शामिल थे।

आआआहहहहहह! प्रत्येक मानव मन को पीड़ित कर देने वाली इस खबर ने जैसे पत्थर पिघला दिए हों.... सबके मन में सिर्फ एक ही प्रश्न उठ रहा था, किस निर्दयी ने ऐसा जघन्य अपराध किया!!!!!!

हाय रे! उसने जरा भी नहीं सोचा कि, निर्जीव मासूम जानवरों का क्या हाल होगा?..... और अनायास ही मेरे हृदय के उद्गारों से दो पंक्तियाँ फूट पड़ीं.....

नफरतों की आग कुछ इस तरह फैली थी,
बागों को उजाड़ने के लिए।

कि, मासूमों की शहादत पर दगाबाज ही बच निकले थे, उनको लताड़ने के लिए।

वहशी दरिन्दे तो आग लगाकर अपने-अपने घरों में छुप गए। पर धरती माँ तो सब की माँ है आखिर प्रकृति ने ही उस आग को अपनी ममता भरी बारिश से शान्त किया। परन्तु इस आग ने मन में एक चिन्गारी सी लगा दी थी।

क्या मानव इतना गिर गया है! या फिर यह एक शुरुआत है किसी नए भयानक वैश्विक उपद्रव की..... अभी तो बीते हैं सिर्फ 6 ही दिन साल के। जाने क्या नतीजे होंगे मानव की ऐसी चाल-ढाल के।

नए साल की नई उमंग के साथ मैंने अपनी कविताओं को एक काव्य संग्रह का रूप देने का विचार किया। लेकिन मेरे भीतर की शिक्षिका ने अभी इस कार्य की अनुमति नहीं दी विद्यालय में बच्चों की परीक्षाएँ नजदीक थीं अतः मैंने अपना सारा ध्यान सिर्फ बच्चों की पढ़ाई पर लगा दिया। पाँचवीं-आठवीं बोर्ड कक्षाएँ होने की संभावना थी, इस कारण इन दोनो कक्षाओं पर ज्यादा जोर देना शुरू कर दिया। और फिलहाल अपने प्रथम काव्य संग्रह प्रकाशन के सपने को फरवरी की गुलाबी ठंड में डूबी चादर में लपेटकर प्रतीक्षा के आश्वासन से भरीं थपकियाँ देकर सुला दिया।

ट्वेन्टी-ट्वेन्टी की मस्ती लेकर आया यह अनोखा वर्ष, अपने साथ कोरोना जैसी वैश्विक महामारी भी लाएगा..... ऐसी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। दिसम्बर 2019 को चीन में जन्मे कोरोना रूपी इस दानव की खबर जनवरी बीतने से पहले सभी को लग चुकी थी। वैज्ञानिकों के लिए यह घोर चिन्ता का विषय था। परन्तु देश-दुनिया के आम नागरिक अभी तक नये वर्ष के उत्साह में ही मस्त थे।

फरवरी माह में कोरोना वायरस चीन के वुहान में रौद्र रूप दिखाने लगा अतः सरकार ने

वहाँ फँसे हुए भारतीयों को निकालने का अभियान शुरू किया।

कहते हैं सुख-दुख, आगे-पीछे चलते रहते है। फरवरी के अंत में भारत ने फ्रान्स और ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए विश्व की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का खिताब अपने नाम किया। तो शायद नजर ही लग गई थी इस खिताब को मार्च की दिक्कतों भरी शुरुआत इसका प्रमाण है।

मार्च में कोरोना की रफ्तार तेज होने से खेल टूर्नामेंट और अन्य बड़े आयोजनों के रद्द होने के समाचार आने लगे। हमारे देशवासियों ने इस महामारी को गंभीरता से तब लिया जब मार्च में, अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा संपूर्ण लाकडाउन की घोषणा की गई। बड़ी ही अजीबोगरीब परिस्थितियाँ थीं वह, जहाँ देखो बस त्राहि-त्राहि.....

सारे विश्व में हाहाकार मची हुई थी, सभी को धन-दौलत छोड़ कर सिर्फ अपनी और अपनो की, जान बचाने की चिन्ता सता रही थी। स्वभाविक सी बात है मेरा भी वही हाल था जो सभी का था। बचपन से निरन्तर चलती आ रही मेरी कलम भी जैसे थक गई हो। ना मन में कुछ लिखने का उत्साह, ना कोई तीज-त्यौहार मनाने की लालसा। सच कहूँ तो ना दिन की खबर, ना रात की। सिर्फ एक ही जगह ध्यान केन्द्रित कोरोना वायरस....

सारे सोशल मीडिया अकाउंट्स पर "हाय कोरोना" अब कुछ कर गुजरने का उत्साह, मेरे आत्मविश्वास के साथ-साथ गहरी निद्रा में लीन हो चुका था। मन का अथाह सागर जैसे एक छोटी सी बूँद बन चुका था। जिसमें सिर्फ नकारात्मक ऊर्जा रूपी जल का प्रभाव था। कभी-कभी लगता सब समाप्त हो जाएगा। रातों की नींद गायब थी, अर्ध रात्रि तक मन में सिर्फ यही विचार आते रहते... "जाने कैसी-कैसी परिस्थितियाँ सामने आयेंगी" कैसे सामना करेंगे उनका! क्योंकि चीन और इटली की दुर्दशा से मन बहुत अशान्त था।

जिस परिवार में यह वायरस दस्तक देता, सारा परिवार ही नष्ट हो जाता। श्मशानघाट पर लगा मुर्दों का मेला, और कब्रिस्तान में पहले से ही लाशें दफनाने के लिए खोदे गए गड्ढे, शवदाह गृहों की क्षमता में वृद्धि की तैयारियाँ जीते जागते लोगों कों धाराशायी कर देने वाले दृश्य थे। और मार्च के महीने से शुरू हुआ विचारों की धुन्ध का यह मार्च पास्ट, महीनों चला।

अप्रैल के प्रथम सप्ताह में, मोदीजी का देश वासियों को संबोधन तथा लॉकडाउन के दूसरे चरण का ऐलान किया गया। साथ ही 5 अप्रैल को रात्रि 9:00 बजे लाइट बंद करके 9 मिनट तक दिये मोमबत्ती की रोशनी करने का आह्वान किया। "क्या अद्भुत नजारा था" प्रत्येक गली-मोहल्ला, आस-पड़ोस, न्यूज़ चैनल सभी जगह एक जैसा दृश्य, हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, गरीब-अमीर, छोटे -बड़े सभी आपसी तालमेल के साथ दिये और मोमबत्तियाँ जलाते हुए नजर आए। और उसी दिन यह बात सिद्ध हो गई कि मोदी जी एक युगीन प्रधानमंत्री हैं ऐसी वैश्विक महामारी में भी सारे देश को एकजुट करने की कला किसी साधारण व्यक्तित्व में तो नहीं हो सकती.....

अप्रैल में अर्थव्यवस्था में हुए नुकसान भी नजर आने लगे..... अर्थव्यवस्था की सबसे मजबूत कड़ी प्रवासी मजदूर अपने-अपने घर निकल पड़े सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध ना होने के कारण कोई साइकिल चलाकर, कोई पैदल, यहाँ तक कि कंटेनर ट्रकों और कंक्रीट मिक्सिंग मशीन वाहन में छुपकर आनन-फानन में अपने घर लौटे और दुर्घटना का शिकार भी हुए। रेड, ऑरेंज और ग्रीन जोन की परिकल्पना भी सामने आई। लॉकडाउन के कारण सभी नदियों का जल साफ और महानगरों की हवा शुद्ध हो गई।

समय-समय पर मोदी जी द्वारा देशवासियों को संबोधित करना और यह विश्वास दिलाना कि,आप लोग सिर्फ कोविड-19 के नियमों का पालन करें इम्युनिटी बढ़ाने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा जारी गाइड लाइन अपनाएँ अपना और अपनों का ध्यान रखें। हम कोरोना पर विजय अवश्य प्राप्त करेंगे। मन में फिर से बुझा हुआ आत्मविश्वास प्रज्वलित कर देता था।

धीरे-धीरे मैंने भी अपने आप को डर के अंधकार से बाहर निकाल वास्तविक दुनिया में लाकर परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार किया। परिवार में बच्चों और बड़ों सभी के लिए उम्र के अनुसार, योगाभ्यास और व्यायाम शुरू किया। अपने आपको प्रकृति से जोड़ा तथा घर में ही उपलब्ध बीजों से फल सब्जियों के पौधे तैयार किए। तुलसी, ऐलोवेरा, गिलोय जो पहले से ही घर की क्यारियों में उपलब्ध थे, उनको और विस्तृत रूप में लगाया। मार्केट बन्द होने की वजह से, गमले आदि की व्यवस्था भी, घर में उपलब्ध सामग्री की जुगाड़ से ही की और कुछ क्यारियाँ भी घर के आँगन में बनाईं, अब तो प्रतिदिन सुबह से शाम तक बस एक ही उद्देश्य रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उपाय, और बागवानी। प्रकृति माँ की छत्र-छाया में वह अद्भुत क्षमता है, जैसे ही अपने आप को पेड़-पौधों की देखभाल में लगाया, मन से नकारात्मक ऊर्जा जाने कहाँ गुम हो गई....! और निरुत्साहित होकर विषाद के गर्त में गिरी मेरी कलम दोगुने उत्साह के साथ फिर खड़ी हुई। अब मैं बचा हुआ समय पुनः लेखन कार्य को देने लगी।

1 मई मजदूर दिवस मजदूरों के लिए राहत लेकर आया। और मई में ही मुझे साहित्य सेवा का प्रतिफल मिला। आभार अंतरा मेरे काव्य संग्रह प्रकाशन का सपना पूरा हुआ 17 मई 2020 को मेरी प्रथम पुस्तक सृजन फुलवारी (मोदी जी द्वारा विमोचित) के लिए, कलम के सिपाही सम्मान से सम्मानित किया गया।

जून में निसर्ग तूफान ने दस्तक दी। असम में तेल के कुएँ में लगी आग से भारी भरकम नुकसान हुआ। जून की इन प्राकृतिक आपदाओं से आपदा ग्रस्त लोग दो जून रोटी के लिए तरस गए।

जुलाई में महाराष्ट्र पर सबकी नजरें टिक गई जब वहाँ देश के सबसे बड़े प्लाज्मा थेरेपी सुविधा केंद्र का उद्घाटन किया गया।

लॉकडाउन 2.0 में मिली रियायत पर मोदी जी की देशवासियों को दी यह हिदायत लोगों को सचेत करने के लिए काफी हद तक कारगर सिद्ध हुई.....

सावधानी हटी दुर्घटना घटी।

अगस्त अनलॉक 3.0 लेकर आया अगस्त से जिम तथा योग संस्थान को खोलने की अनुमति मिली तब बहुतों को जीवन में योग की अनिवार्यता भी समझ आई।साथ ही मेरी मेहनत का फल भी अब मुझे मिलने लगा था योग-व्यायाम से तन तो मौसमी बीमारियों से बचा हुआ था ही सकारात्मक ऊर्जा से लबालब भरी घर की क्यारियों में लगी सब्जियाँ भी अब फलने-फूलने लगीं थी मन में गजब का संतोष था।

सितंबर में अनलॉक 4.0 शुरू हुआ। इस प्रकार चरणबद्ध तरीके से देश को एक बार फिर पटरी पर लाने का प्रयास किया गया। 14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर मेरे भाव और भाषा सांझा संकलन पर अंतरा द्वारा भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान से पुरस्कृत किए जाने पर आत्मिक संतोष प्राप्त हुआ।

अक्टूबर-नवम्बर शान्तिपूर्वक त्यौहार मनाने में निकल गए। दिसम्बर फिर से जैसे एक नई दिशा देने के लिए हाजिर हुआ हो और एक सपने की तरह दिसम्बर से फिर दिसम्बर में आ गए।

जल्द ही कोरोना की वैक्सीन आने वाली है, यह सुनकर बड़ी प्रसन्ता हो रही है लेकिन, कोरोना की बढ़ती हुई रफ्तार ने एक बार फिर चिन्ता ग्रस्त होने पर मजबूर कर दिया है। मन के इसी चिन्ता भँवर में मैं एक बार फिर जनवरी से दिसम्बर 2020 तक के स्वमूल्याँकन की यात्रा पर निकल पड़ी। जनवरी-फरवरी में निश्चिंत हुआ मनुष्य हर प्रकार के अच्छे बुरे कर्म करते हुए, मार्च में एकाएक भौंचक्का रह गया। यह कैसे हो सकता है! कोरोना जैसी वैश्विक महामारी जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कैसे कहर ढा सकती है...? लॉक डाउन की वजह से साफ-सुथरी हुई प्रकृति नदियों के जल आदि ने मनुष्य को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि, हाय रे मानव तूने यह क्या कर डाला। प्रकृति ने तुझे

इतना कुछ दिया तू सिर्फ उसके दोहन में लगा रहा.... और वह निर्जीव जानवर, पशु, पक्षी उनका भी प्रकृति पर अधिकार है तू हर जगह से उनको लताड़ता गया। कभी कैद करके कभी निवाला बना कर....

ठिकाना मिटा दिया उनका, अपने ठिकाने के स्वार्थ में..

देख ले मानव....! आज वह स्वतंत्र, निडर, निर्भीक होकर प्रकृति माँ की गोद में हँस खेल रहे हैं। बन्द है तो सिर्फ तू ही....अब भी सम्भल जा अपराधी सिर्फ तू ही था...

कोरोनाकाल में मनुष्य काफी हद तक प्रकृति को लेकर जागृत हो चुका है। लॉकडाउन में हुई परेशानियों से वह लोग जो गाँव को गँवारों के रहने की जगह मानने लगे थे, एक बार फिर वापिस अपने-अपने गाँव लौटे हैं आत्मनिर्भर बनने का सपना लेकर। चीन, फ्रान्स, इटली अमेरिका, दुबई, सऊदी अरब सभी देशों में प्रवासी भारतीयों के बुरे हाल को देखकर स्वदेश के लिए मन में प्रेम भी जागा। लौट के बुद्धू घर को आए वाली कहावत भी सार्थक सिद्ध होती दिखाई दी.....

बाहर के खाने की होड़ करने वाले भी, घर के ताजे स्वादिष्ट गर्म भोजन महत्व समझ गए। लोगों ने अपनी दिनचर्या में भी सुधार किया योग,व्यायाम, आयुर्वेद को अपने जीवन में स्थान दिया। कामकाजी लोग जो कार्य की व्यस्तता के चलते अपने अंदर की कलाएँ भूलने लगे थे देश के हर कोने से बहुत सी रचनात्मक कलात्मक गतिविधियाँ सामने आने लगी। ऑनलाइन पढ़ाई का एक नया इतिहास रचा गया। शिक्षकों ने कोरोना का सामना करते हुए, स्कूल शिक्षा विभाग की पहल पर मोहल्ला क्लास एवं ऑनलाइन पढ़ाई द्वारा ज्ञान का दीपक विपरीत परिस्थितियों में भी जलाए रखा। इस तरह कुछ खोकर हमने बहुत कुछ पा लिया

इस ऐतिहासिक वर्ष 2020 में.....।

सोनाली तिवारी "दीपशिखा"
जिला- रायसेन (मध्य प्रदेश)

कुछ यादगार पल लिए 2020

यूँ तो हर साल ही अपने आप में अलग होता है कुछ खट्टे, कुछ मीठे, कुछ कड़वे, कुछ सुनहरे, कुछ यादगार पल लिए पर 2020 ऐसा साल रहा जिस पर मानो ग्रहण ही लगा रहा। पहले कोरोना जो पूरा साल ही लोगों के डर, भय, दुःख का कारण बना रहा। कितने परिवारों ने अपने परिजन खोये इस महामारी में। इस कदर जकड़ा इस ने की कई महीनों का पूर्ण लॉकडाउन रहा सब अपने घरों में कैद हो कर रह गए। नतीजा काम काज भी ठप। कितने ही लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा, व्यापारियों को भी अच्छा खासा नुकसान हुआ और सबसे ज़्यादा इसकी गाज गिरी मजदूरों पर जो बेबस थके हारे,पैदल, भूखे प्यासे अपने परिवार के साथ मिलों का सफर तय करने को मजबूर हुये ताकि अपने घर गाँव पहुँच सकें।

कई महीनों बाद जब लॉकडाउन हटा तो लोग बेफिक्र सड़कों पर बेखौफ निकल आये नतीजा कोरोना के आँकड़े और उस से होने वाली मौतें एकदम तेज़ी से बढ़ने लगे और हालात बत से बतर होने लगे।

यही एक कम न था लोगों और देश भर को सताने के लिए एक के बाद एक तबाही लाते चक्रवाती तूफान कभी निसारगा, कभी वरदाह, कभी निवार, कभी अम्फान तो कभी बुरावी जिसने जान माल,घर बार की काफी तबाही मचाई। उस बीच कभी गैस रिसाव, आगजनी, लैंडस्लाइड, बाढ़, सीमा पर चीन की मनमानी और पाकिस्तान तो है ही आदत से मजबूर। एक के बाद एक प्राकृतिक आपदाएं, घटनाएं और कोरोना ने मिलकर 2020 को सबसे दुःखद साल बना दिया जिस में सिर्फ लोगों ने खोया ही खोया।

देश ने अपने कीमती रत्न खोये पंडित जसराज, राहत इंदौरी, एस. पी. बालासुब्रमण्यम, सरोज खान, ऋषि कपूर, इरफान खान, जयदीप और बेहद ही युवा व उभरता सितारा सुशांत सिंह राजपूत जिस के बाद तो मुंबई फिल्म नगरी पर भाई भतीजावाद, गुटबाज़ी, पक्षपात, आरोप प्रतिरोप, यौन उत्पीड़न, स्कैंडल, ड्रग रैकेट आदि का दौर चल पड़ा जिसने चकाचौंध दिखने वाली मायानगरी का काला रूप उजागर कर दिया।

इस तरह 2020 पूरा का पूरा साल ऐसा साल रहा जिसे कभी भी कोई भी अपनी ज़िन्दगी में याद रखना नहीं चाहेगा। ऐसा साल जिसमें हर त्योहार चाहे होली हो, राखी, करवा चौथ, तीज़, ओणम दिवाली व अन्य त्योहार सब सूने के सूने गए।

त्योहार के अलावा कोई दिन, हफ्ता, महीना ऐसा नहीं गया जिसमें कुछ भी ऐसा खास हुआ हो जिसे याद रखा जाए। कितने घर, कितने परिवार या तो कोरोना से, या उसके प्रभाव से चाहे काम हो या परिवार का लालन पालन, नौकरी पेशा, मजदूर और हमारे अन्नदाता किसान सभी इस से प्रभावित हुए हैं। जन जीवन सभी का बिखर कर सा रह गया है।

2020 बेहद ही दुःख, भय, अशांति देने वाला रहा जिसने सारे सुकून और खुशियों पर ऐसा ग्रहण लगाया की हर दिल आह भर के ही रह गया।

मीनाक्षी सुकुमारन, नोएडा

तथास्तु

तथास्तु!!!! जी, सच में, रामलला साक्षी है, कुछ ऐसा ही हुआ था मेरे साथ। जैसे मन मांगी मुरादे पूरी हो गई हो, लॉकडाउन के बहाने।

ऐसा विराम जिसमे सफ़लता से ज़्यादा जीवन जीने की अद्भुत अनुभूति को महसूस कर पाए। अपने लिए, अपनों के लिए, अपने आशियाने के लिए अमृत पल निकाल पाए। एक लंबा अवकाश, प्रकृति की गोद, राम का धाम, राम से लोग, ऐसी लालसा की सुखद कामनाएं मन सदा कर लेता था। प्रभु की लीला अपरम्पार है वे आपकी शुभकामनाओं की पूर्ति निश्चित रूप से करते ही है। ऐसे मे छलकती आँखे, मुस्कुराते होठ अपने आप आसमान की ओर उठ जाते उस परमशक्ति को नमन करने के लिए।

लंबा अवकाश:- लॉकडाउन, जनता कर्फ्यू, ताली थाली, दीप जलाकर सकारात्मक उर्जा के साथ मै बढ़ गई आगे लंबे अवकाश पर जैसे मोदीजी के इन सब बातों का सबसे गहरा असर मुझ पर ही हुआ हो। आरंभ हुआ मेरी व्यक्तिगत तथास्तु सफर।

प्रकृति की गोद:- प्रकृति के जादुई एहसास से भला कौन बच पाया? क्रूर कोरोना भी प्रकृति प्रेमी निकला उसकी भी दुश्मनी मानों इंसानों से ही थी। लॉकडाउन मे हम बाहर तो नहीं जा सके पर सारी मुरादें घर में ही पूरी हो गई। छत पर मेरी छोटी सी बागवानी के बीच बैठकर मैं प्रकृति के गोद की अनुपम अनुभूति बेहद करीब से महसूस कर पा रही थी। नीला आसमान, सूर्य की किरणें, शीतल पुरवैया का हौले से गालों को सहलाना, झूमती डालियाँ, पक्षियों की हलचल, मीठी मुस्कान भरते नन्हें पौधे, हर मौसम का अद्वितीय एहसास।

राम का धाम:- मेरे निवास के पूजा स्थल में लगी श्रीरामजी की ६ फूट की अतुलनीय तस्वीर में समाया पवित्रता का अद्वीतीय स्पर्श आपको अलौकिक उर्जा से भर देता है बस बेसकीमती समय की जरूरत होती है जो हमे नि:शुल्क मिल गई थी। मौन की अभिव्यक्ति के लिए शब्द कौन रच पाया? फिर सबसे अद्भुत अनुभूति ५ अगस्त का ऐतिहासिक दिन जिस दिन रामलला के मंदिर का हुआ था शिलान्यास, मै तो क्या पूरी

भारतभूमि रोमांचित हो गई थी। आ० मोदीजी के रूप में रामभक्त हनुमान जी के साक्षात दर्शन का होना आपको मौन की दिव्य अनुभूति का एहसास करा देता है। हम जैसे भक्तों के लिए किसी बड़े पुण्य के परिणाम जैसा है आँखे नम हो गई थी। आदित्य योगीनाथजी तथा मोदीजी के सदैव ऋणी रहेंगे सभी रामभक्त।

परिवार के साथ दूरदर्शन पर रामानंद सागरजी की रामायण का प्रसारण मोदीजी को पुनः प्रणाम। सर्वत्र मेरे रामजी ही थे इस तथास्तु यात्रा पर। एक बचपन के वक्त का रामायण था जब यह भी समझ नहीं हुआ करती थी ये सब कहानी के पात्र हैं हाथ जोड़कर बैठ जाया करते थे तथा भावविभोर होकर रामायण का भरपूर आनंद उठाया करते थे। रामानंद सागर जी की रामायण, बेटे को बचपन मे कई बार दिखाया था डीवीडी पर। फिर भी आप चाहे जितनी बार देख लीजिए इसे देखने की लालसा तनिक भी कम नहीं होती। रामानंद सागर जी अपने नाम को सार्थकता प्रदान कर गए रामायण सीरियल के साथ न्याय करके। उनकी आवाज़ में ऐसे ही दिव्यता का वास नही था। रामलला का आशीष था। बारम्बार प्रणाम उन्हें।

राम से लोग:- इस तथास्तु के सफर मे मोदीजी, योगीजी, सोनू सूद, रतन टाटा, अजीम प्रेमजी, सुरक्षाकर्मी, सफाई कर्मी, चिकित्सक आदि अगणित हमारे कोरोणा योद्धाओं ने तन-मन-धन से अपनी जान जोखिम में डालकर देश की रक्षा की। उन सभी योद्धाओं को शिष झुकाकर शत-शत नमन।

पैसा सब कुछ नहीं इसलिए इस वर्ष स्कूल से एक रूपए की आमदनी ना होने का तनिक भी दु:ख नही बल्कि मन मे सुकून बेपनाह अपने सेवकजनों को छुट्टी के बावजूद राम कृपा से वेतन देने में सफल रहे।

मै, मेरे अपने, मेरा आशियाना:- अपने परिवार को अपने हाथों से अगणित प्रकार के व्यंजन बनाकर खिलाना किस अन्नपूर्णा की लालसा नहीं होती? कब थकते है आप? बेहद सुकून भरा एहसास होता है ये, लेकिन इसके साथ पूर्ण रूप से न्याय वही महिला कर सकती है जो पूर्ण रूप से एक गृहिणी हो अन्यथा इस सुख की अनुभूति के लिए आपको अवकाश का इंतजार करना ही पड़ता है। जो सही मायने मे मुझे लंबे अंतराल पर नसीब हुआ था। मेरे अतिप्रिय राजश्री प्रोडक्शन की फ़िल्में देखने का मौका मिला। यू ट्यूब पर विष्णु पुराण की पूरी सीरीज देखने का सुख। लूडो, कैरम, चेस आदि खेल भी खेले गए वर्षो बाद। "फरमान" उपन्यास आलमपनाह पर आधारित एक टीवी सीरियल जिसका प्रसारण दूरदर्शन पर 1994 में हुआ करता था लेख टंडन द्वारा निर्देशित मात्र 14 कड़ियों का धारावाहिक हमारे दिलों दिमाग पर अमिट छाप छोड़ गया था। पुत्र अनुपम के साथ १४ कड़ी के इस सफर में गुजरे जमाने की यात्रा भी कर आए तथा बचपन के दिनों की ढेरों यादें सांझा की। इसी के साथ घर के कोने कोने को स्पर्श करने का मौका मिला। उसमें से भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्य काल की यात्रा की सुखद अनुभूति का खूबसूरत स्पर्श आपके रोम रोम को पुलकित कर देता है।

परिवार से जुड़े सारे वीडियो तथा एल्बम को देखने का मौका मिला। अतीत के खूबसूरत लम्हों को पुनः जीने का मौका मिला यादों के जरिए। इसी बीच बेटे के दसवीं के परिणाम से घर मे बड़ी खुशी का आगमन हुआ। ९८% से किया परीक्षा उत्तिर्ण। यादगार बन गया कोरोनाकाल का १५ जुलाई का दिन।

अतीत के पन्नों में मिली " एक्सीडेंटल लेखिका"

देशभक्ति, सामाजिक, व्यापारिक, साहित्यिक, आर्थिक, घर परिवार आदि अनेक जिम्मेदारियों को अकेले संभाल पाना किसके लिए आसान होता है? आप शौकिया तौर पर भी करते है तो एक वक्त ऐसा आता है कि आप भागते-भागते थक जाते है। शौक भी बोझिल लगने लगता है। उसपर जब आपके पूज्य आपकी सांस माँ, दादी सास माँ बिस्तर पर हो साथ में बच्चे

की जिम्मेदारी। कभी सेवक अच्छे मिलते तो कभी तकलीफ़ देह। इन सबके बीच, सबके साथ न्याय करने की चाहत में आप खुद को भूल ही जाते है तथा जिंदगी मशीन सी सिर्फ भागने लगती है अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की चाहत में। १० वर्षो से लगातार भागती जिंदगी को सच में ठहराव की जरूरत महसूस हो रही थी बेपनाह.....। पुस्तकों की उस अलमारी को जिसमे मेरी तथा लेखक मित्रों द्वारा रचित पुस्तकों को स्थान दिया गया था खोलते हुए मन में विचारों की कतार चल रही थी प्रवाह के साथ।

मैंने किसी साहित्यिक कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ सागर खादीवालाजी को ये कहते सुना था की सांझा संकलन की पुस्तकों का ये हाल है लोग छपवाते है अपनी रचनाएं पढ़ते है फिर रख देते है। बहुत कम पाठक होते है जो पूरी किताब को पढ़ने का शौक रखते है। हँसी आ रही थी मुझे खुद पर सच मे, क्योंकि मै तो इन दोनों पाठकों की श्रेणी मे कहीं भी नहीं थी। कभी ख़ुद की रचनाओं को भी नहीं पढ़ा भागती जिंदगी ने मौक ही नहीं दिया, किताब पलटकर भी नहीं देखा। मै एक "एक्सिडेंटल लेखिका" जिसने कभी भी अपनी रचनाओं को खुद से छपने के लिए कही भी नहीं भेजा जब तक सामने से निमंत्रण नहीं आया। चाहे न्यूज पेपर हो, चाहें सांझा संकलन। जब निमंत्रण मिलता एक दिन पहले लिखती और भेज देती छपने के लिए। कभी कभी तो एक घंटा या आंधा घंटा पहले भी लिखा। आकाशवाणी से भी जब भी बुलावा आया ३ से ४ घंटा इससे ज्यादा कभी न दे सकी। कभी तो ऐसा भी हुआ छापने वालों ने फेसबुक से रचना उठाकर छाप दिया। उनमे से एक नाम रीमा दिवान चड्ढा, सृजन बिंब की संपादक, जिन्होंने, ५ वर्ष पूर्व साहित्य की दुनिया से मेरा परिचय कराया मुझे मुख्य अतिथि के तौर पर निमंत्रित कर के हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में अंतरंग महिला चेतना मंच पर। यहीं वो मंच जंहा से आरंभ हुआ मेरा साहित्यिक सफर।

मेरे अंदर बसी कवयित्री तथा लेखिका को प्रेरित करने का पूर्ण श्रेय जाता है नवभारत के वरिष्ठ पत्रकार, आदरणीय परमात्मानंद पांडेय सर को क्योंकि वे हमेशा न्यायपूर्ण समीक्षा करते तथा उचित होने पर प्रोत्साहन भी देते थे। उनके द्वारा नवभारत के सुरूची मे छापी गई मेरी रचनाओं को बेपनाह सराहा गया उत्साहवर्धन वहीं से शुरू हुआ पर इस क्षेत्र के साथ पूर्णतः न्याय करने के लिए समय नहीं मिला। दूसरा श्रेय मेरे आ०श्वसुरजी श्री राधारमण तिवारीजी को देने मे खुशी होती है। उन्होंने ने भी सदैव प्रोत्साहित किया निष्पक्ष होकर।

तभी नजर पड़ी किताब "हाइकु की सुगंध" जिसके प्रमुख संपादक श्री संजय कौशिक जी है तथा जिसमे संपूर्ण देश के १०० हाइकु कार की रचनाएँ छपी थी इसमें मेरी रचना प्रथम पन्ने पर छपी थी ये मुझे आज ही पता चला। इस सुख की अनुभूति के लिए जैसे नियती ने आज का दिन तय कर रखा था।

हद तो तब हो गई जब ये पता चला की तीन ऐसी किताबें जो २०१७ में छपी थी सांझा संकलन की जिसमे मेरी रचनाएं छपी है मै मंगवाना ही भूल गई। देश के जाने-माने हाइकुकार प्रदीप दास जी को फोन किया तथा क़िताब की राशि उनको भेजकर किताब भेजने की विनती की। शुक्र है किताब की प्रतियां मिल गई मुझे।

आज जाकर जान पाई हूं की कुल ९ सांझा संकलन की किताब मेरी छप चुकी है। ९ मेरा शुभ क्रमांक, इनमें से सिर्फ संपादक अर्पित अनामजी की किताब प्रतिबिंब जिसमे मेरी लघुकथाएं छपी थी बस वहीं पढ़ने का मौका मिला था। ये ९ किताबों का सफर संभव हुआ पूर्णतः नियति के निर्णय से तथा माँ सरस्वती के श्रीचरणों को अर्पित करती हूं तथा ये दसवी किताब है जिसे पहली बार, मैं स्वेच्छा से आगे बढ़कर, अपना संस्मरण भेज रही हूं सखी प्रीति सुरानाजी को, संपादक अंतरा शब्दशक्ति। प्रीति सुराना वो नाम जिन्होंने कितने बार मेरी रचनाओं को फेसबुक से उठाकर अपनी पत्रिका में स्थान दिया तथा मेरी

लेखनी का उत्साहवर्धन किया बिल्कुल नि:शुल्क व नि:स्वार्थ। ९/१२/२० पुनः ९ मेरा शुभ क्रमांक आज मैंने अपने आपको लेखिका या कवयित्री स्वीकार कर लिया तथा इसके साथ न्याय करने की आज प्रतिज्ञा लेती हूं। उन सभी सुधिजनों, पाठको का तथा मार्गदर्शकों का आभार करती हूं जिन्होंने मेरे अंदर की लेखिका को पहचाना, पहचान दी तथा पहचान करवाई। ठहराव, समय व नियतीज्ञ बहुत कुछ निर्धारित करती है।

ऑनलाइन

"सोशल मीडिया" भागती जिंदगी तथा अकेलेपन का बेहद खूबसूरत सहारा। जब से जुकरबर्ग के फेसबुक को जाना है याद नहीं कभी ऐसा एक दिन भी गुजरता हो की मै वहां अपनी उपस्थिति देना भूल जाऊं। सारा सिर दर्द छूमंतर हो जाता है।

पर ऐसा पहली बार महसूस किया महामारी के इस काल मे फेसबुक आपके सिर का दर्द बनता जा रहा था। कही प्रवासी मजदूरों का दर्द, तिरस्कृत पार्थिव शरीर के भयावह सत्य का दर्द, मौत की कतारों का दर्द, कहीं बीजेपी-कांग्रेस का दर्द, तो कहीं हिन्दू- मुसलमान का दर्द। न्यूज़ चैनल भी लड़ते रहते दिन रात। न्यूज़ पेपर को भी मैंने लगाया नहीं हाथ। आलम कुछ ऐसा था कोरोना से पॉजिटिव लोग कोरोना निगेटिव का शिद्दत से इंतजार करते पर फेसबुक की निगेटिविटी से कतराते। आखिरकार ले लिया मैने यहां से भी अवकाश...३ महीने का।

वही दूसरी तरफ बाक़ी श्रेत्रो मे ऑनलाइन दुनिया कोरोना काल मे आशीष साबित हुई। बच्चों की शिक्षा, शॉपिंग, व्यापार, मीटिंग, नौकरियां, वर्कशाप, कवी सम्मेलन, वेबिनार, ई-न्युज पेपर आदि सब कुछ शारीरिक दूरी बनाते हुए संभव व सफल हो पाया।

झूम, गूगल मीट, वेबिनार आदि बहुत सारे वीडियो कान्फ्रेंस कालिंग ऐप का उपयोग तेजी से बढ़ गया तथा कोरोनाकाल में बहुउपयोगी साबित हुआ।

देश आभारी हैं प्रधानमंत्री आ०मोदी जी का, जिन्होंने बेहद प्रशंसनीय तरीके से इस लाइलाज वैश्विक महामारी के दौर मे भयावह आबादीवाले, भयावह विविधता तथा नकरात्मकता के बावजूद हमारे देश का सफल मार्गदर्शन किया बेहद सयंम व सूझ-बूझ के साथ जबकी अमेरिका तथा इटली जैसे समृद्ध देशों ने भी घुटने टेक दिए थे तथा WHO भी असफल रहा इसका सही नेतृत्व करने में।

देश सदैव ऋणी रहेगा उन सभी कोरोना योद्धाओं का जो इस लड़ाई मे शहीद हो गए तथ जो आज भी दायित्व निभा रहे है अपनी जान हथेली पर रखकर।

परमशक्ति से एक और तथास्तु की कामना वैक्सीन सफल हो तथा विश्व कोरोनावायरस से मुक्त हो। सकरात्मकता की उर्जा के साथ सक्रिय हो, सफल हो। अपरिमित आभार उस परम शक्ति का जिसने हमें तथा हमारे अपनों पर दया बनाई रखी। तथा आज मै इस संस्मरण का एक अंश बन सकी।

कोरोनाकाल एक अभिशाप

"माँ" लॉकडाउन के साथ अपनी बीमारी की वजह से अपने कमरे में लॉकडाउन हो गई थी। गत ३५ वर्ष से रोजाना तीन इंसुलिन का दर्द उनको जिंदगी के प्रति उदासीन नहीं बना पाया था। बेहद कर्मठ, बेपनाह जिम्मेदार, बेहद प्यारी इंसान। पांच वर्ष पूर्व हृदय की सर्जरी से भी सफलतापूर्वक गुजरकर निकली थी। अक्टूबर २०१९ में उनकी दोनों गुर्दो ने भी उनका साथ छोड़ दिया। फिर भी वे हारी नहीं थी। भाग्यशाली थी, आज के युग में राम लक्ष्मण से पुत्र उन्हें मिले थ। ऐसे पुत्र जो तन मन धन से माँ के लिए समर्पित थे, एक साल से लगातार, बिना थके अपने परिवार, अपने व्यवसाय सब कुछ छोड़कर दोनों भाई माँ की ताकत बनकर खड़े रहें।

धीरे धीरे माँ की शक्ति कम होती जा रही थी। नियति का चक्र चला २१ सितंबर ने माँ को शक्तिहीन कर दिया। माँ पूरी तरह बिस्तर पर।

ये पल किसी भी इंसान को तोड़ने के लिए काफी होता है फिर माँ बुद्धिजीवी तथा कर्मठ महिला थी उम्र भी मात्र ६५ वर्ष,। मुझे मालूम था ये दर्द वे नहीं बर्दाश्त कर पाएंगी। मैं तुरंत सब कुछ छोड़कर, बेटे को भी घर पर ही छोड़ दिया क्योंकि श्वसुरजी के पास भी किसी का होना जरूरी था फिर मालूम था सफर लंबा हो सकता है। सोचकर निकली थी जब तक दफ्तर बंद है आखिर तब तक पूरा समय माँ का। माँ के पास पहुंच गई। जबकि मेरे भाई, भाभी, माँ की सेविका सभी उनके लिए समर्पित थे पर अब माँ हारने लगी थी इस सत्य को वे स्वीकार नहीं करना चाहती थी की वे पूर्ण रूप से दूसरों पर निर्भर हो गई है।

मै उनके गिरने से लेकर उनके आखिरी समय तक उनके साथ थी।उनकी हिम्मत बनने की कोशिश करती रही पर माँ अपनी हिम्मत को स्वयम मे तलाशती और वो तलाश पूरी न हो पाती।

मुझे अवकाश चाहिए था लंबा प्रभु ने चार गुना दिया। क्योंकि शायद वे जानते थे अवकाश का सही वक्त यहीं था। अंतिम समय में माँ को भरपूर समय दिया इसका सुकून है अन्यथा दर्द उम्र भर का।

माँ से शिकायत करू कितना?
दर्द दिया भी तो दिया कितना?

१८/१०/२० माँ पंचत्वों मे विलीन हो गई
आख़िरी सांस तलक याद आओगी माँ।
!!ओम शांति !! ओम शांति!! ओम शांति!!

पूनम तिवारी "हिंदुस्तानी"
१५७,के.टी.नगर, नक्षत्र गार्डन
काटोल रोड, नागपुर, 9371118311

अनुभवों और उपलब्धियों से भरा वर्ष 2020

यह जीवन एक खिलौना है,
कभी पाना है, कभी खोना है।
कभी थोड़ी देर की खुशियाँ हैं,
कभी जीवन भर का रोना है।

ऐसा ही बीता 2020 का यह वर्ष। बहुत से खट्टे-मीठे-कड़वे अनुभव हुए। शुरुआत तो कड़वे अनुभवों से ही हुई। बाएँ हाथ का कंधा और अंगूठा रैप्चर हो गया जो आज तक ठीक नहीं हुआ। उसके लिए जो दवाएँ खाईं उनसे इतना बुरा हाल हुआ कि मल मूत्र निष्कासन के मार्ग इस तरह अवरुद्ध हो गये कि जीना बेजार हो गया। आवेग इतना तीव्र कि फौरन शौचालय भागना पड़ता था मगर निष्कासन मार्ग पर इतने सख्त पहरे थे कि हवा तक बाहर नहीं निकल सकती थी। प्रसव में भी इतनी पीड़ा नहीं होती जिस पीड़ा से मुझे गुजरना पड़ा।

खुशी भी आई। जनवरी में छोटी बेटी की 25 वीं मैरिज एनिवर्सरी थी। फरवरी में सबसे छोटे देवर के बेटे की शादी थी। अप्रैल में हमारी शादी की गोल्डन जुबली थी। कोई नहीं आ पाया। बस घर के लोग ही शामिल थे। पूरे परिवार के साथ ज़ूम एप पर हमने अपनी एनिवर्सरी मना ली। अभी कुछ दिन ही बीते थे कि चारों देवरों के परिवार के कई सदस्यों को कोरोना ने अपनी चपेट में ले लिया। उसी दौरान बड़ी ननद की मृत्यु हो गई। उनके पति का देहावसान भी इसी वर्ष हुआ था। छोटी ननद को पैरालिसिस हो गया। उसके पति का दो वर्ष पूर्व लम्बी बिमारी के बाद निधन हो गया था। पास की ही रिश्तेदारी (पति के चाचा, ताऊ, बुआ, मौसी) के परिवार में कई कोरोना से ग्रस्त होकर काल के गाल में समा गए व किसी का हृदयाघात या अन्य बिमारी से निधन हो गया।

अपनी कॉलोनी में पड़ौस में कई लोगों का कोरोना से निधन हुआ। एक की खबर से अभी उबर भी नहीं पाते थे कि दूसरी खबर आ जाती थी। आए दिन कभी किसी घर पर तो कभी किसी घर पर नोटिस चस्पा हुआ रहता था। पता इसलिए लग जाता था कि कालोनी का एक ग्रुप केवल

सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए ही बनाया हुआ है। उम्र का तकाजा और गम्भीर बीमारियों की वजह से चाह कर भी कहीं नहीं जा पाए। केवल फोन पर ही अफसोस जाहिर करना पड़ा जिसका हमेशा अफसोस रहेगा, क्योंकि शुरू से ही सबके सुख- दु:ख में शामिल होने की आदत रही है।

कोरोनाकाल में बाई के आने पर भी प्रतिबंध था। 6 महीने तक अपने टूटे हुए हाथ से काम किया। उन दिनों पति ने बहुत सहयोग किया। सब्जियाँ काटने का काम वही करते थे हैं।

बड़ी बेटी (सन् 2009 में जिसके पति का निधन हो गया था) मसूरी के एक बोर्डिंग स्कूल में ग्यारह वर्ष से नौकरी कर रही थी। दो वर्ष पूर्व उसकी एक आँख की रोशनी खत्म हो गई थी। हर महीने आँख की एंजियोग्राफी होती थी और इंजेक्शन लगता था। कोरोना काल में इंजेक्शन लगना बंद हो गया जिसकी वजह से दूसरी आँख से भी बहुत कम नजर आने लगा। जिसका नतीजा यह हुआ कि उसे नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ा। अब अपने दो बच्चों के साथ मेरे पास ही रहने के लिए आई हुई है। बेहद अवसाद में है। वहाँ वह रेडियो पर लाइव प्रोग्राम भी देती थी।स्वतन्त्र जीवन जीने की आदत भी पड़ चुकी थी। उसको मोटिवेट किया कि अपने लिखने के शौक को जीवित कर। अपने जीवन के संस्मरण लिख। कविताएँ लिख।एक व्हाट्सएप ग्रुप से जोड़ा। दो महीने में बड़ी मुश्किल से उसे इस अवसाद से बाहर निकल पाई हूँ। उसके अवसाद ग्रस्त होने की वजह से मुझे पाँच बार ऐपिलैप्टिक फिट पड़े जिसकी वजह से बेहद कमजोरी हो गई। ऐसा क्यों हुआ जबकि मैं दोनों समय नियत समय पर अपनी ब्रेन ट्यूमर व अन्य कई बीमारियों की दवाई खाना कभी नहीं भूलती।

अब मेरे छोटे दामाद कोरोनावायरस से ग्रस्त हैं और मेरी छोटी नातिन के पैर में फ्रैक्चर हो गया है। वैसे भी वह नातिन दिव्यांग है लेकिन मेरी बेटी दामाद और मैं इस बात से तनावग्रस्त नहीं है, क्योंकि हमारा यह मानना है कि शायद ये पूर्वजन्म के कर्म हैं। बेहतर है कि रोकर बिताने की बजाय खुशी- खुशी पूर्वजन्म में किये पापों का कर्ज उतारते जाओ। वैसे भी सुख- दुख तो आने जाने हैं। यह बात जरूर है कि दुख आता है तो जाने का नाम नहीं लेता। बिन बुलाए मेहमान की तरह आता है और डेरा जमाकर बैठ जाता है। सुख आता है, थोड़ी देर रुकता है और बिना बताए चला जाता है। लेकिन जब...

सुख को मैंने जी भर चाहा, तो दुःख में क्यों नीर बहाऊँ
दुःख सुख उसको अर्पण करके, क्यों न अपना दिल बहलाऊँ।

इस वर्ष जो उपलब्धियाँ मिलीं, वे भी कुछ कम नहीं हैं। अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन द्वारा- यह आपातकाल है एकल संग्रह, भाव भाषा निर्झरिणी साझा संग्रह, संस्मय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित- नई उम्मीद नया आसमान (एकल काव्य संग्रह) व पाती प्रीत भरी, भाग-2, समदर्शी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित- अजब अनोखे खेल व जीवन एक खिलौना, दोनों ही एकल काव्य संग्रह हैं। *दो पुस्तकें- क्या -क्या न सहे हमने सितम और नया मोड़, अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन में प्रकाशनाधीन हैं।* यह उपलब्धि कुछ कम तो नहीं।

लॉकडाऊन के कारण ही यह सब संभव हो पाया क्योंकि कहीं आना-जाना प्रतिबंधित था। अपनों के दु:ख से दु:खी हुए। उसमें किसी का वश नहीं था। जहाँ अपना वश था, वो कर्म किया और उसका इतना अच्छा प्रतिफल मिला जो आशातीत था।

राधा गोयल,
विकासपुरी, दिल्ली

2020-जिसे कभी भूल नहीं पाऊँगी

बचपन से ही इतिहास के समुद्र में जीवनसाथी ने विचरना आरम्भ कर दिया था। जिस आयु में बच्चे केवल पाठ्यक्रम की पुस्तकों तक सीमित रहते थे वे अपने विद्यालय और आसपास के पुस्तकालयों से इतिहास विषय से सम्बन्धित पुस्तकें लाकर पढ़ते थे।बाद में एम०ए० भी इतिहास में किया। तो अपने उसी विशद ज्ञान के चलते वे मुझे बहुत सी जानकारियों से समृद्ध करते रहते थे।

जब 2020 आरम्भ हुआ तो उन्होंने मुझे बताया था कि देखना यह वर्ष भी बहुत कठिनाइयों से भरा हुआ कठिनता से बीतेगा क्योंकि इतिहास बताता है कि हर सौ साल के बाद ऐसा ही वर्ष आता है जो दुख-परेशानियों, बीमारियों से भरा भयावह सिद्ध होता है। इससे पहले के 1920, 1820,1720, 1620,1520 आदि किसी भी वर्ष के बारे में पढ़ो तो ऐसा ही मिलेगा। अब देखो यह वर्ष कैसा जायेगा?

सुन कर मन थोड़ा डर तो गया ही था। सोचा मानव के वश में होनी-अनहोनी को टालना तो है नहीं, बस अपना विवेक-बुद्धि जागृत रखनी होगी। तब देखते हैं कैसे बीतेगा ये वर्ष!

०२ फरवरी को दिल्ली में नीरजा मेहता जी के काव्य मंजरी साहित्यिक समूह का चतुर्थ वार्षिकोत्सव "फुलवारी" था। उसमें सहभागिता करने पति के साथ दिल्ली पहुँची थी। अपने डॉगी चीनू को बेटी की देख-रेख में छोड़ कर आई थी। दिल्ली पहुँची ही थी कि बेटी ने उसके अस्वस्थ होने का समाचार दिया तो अपने पैरों के दर्द को तो भूल ही गई और कार्यक्रम में आधे दिन की सहभागिता कर तुरंत देहरादून लौट आए। उसकी चिकित्सा शुरू हुई और चलती रही।

फरवरी माह आया बेटी ने शुभ समाचार सुनाया कि उसने गर्भ धारण किया है और वर्ष के अंत में हम नाना-नानी की पदोन्नति के लिए तैयार रहें।

बहुत अच्छा लगा था सुन कर। रिश्तों की सीढ़ी की अगली पायदान पर पैर रखने का अवसर मिलने वाला था। चीनू की चिंता भी मन को घेरे हुए थी। सोचा वर्ष का यह पहला बहुत सुखदायक समाचार है तो आगे भी सब अच्छा ही होगा। पर कहाँ.....चीन के कोरोना वायरस के देश में आने के समाचारों ने हिला डाला। दूसरे देशों में कोरोना की भयावहता देख सभी डरे जा रहे थे। पहले एक दिन से आरम्भ होकर लॉकडाउन की नियमित-अनियमित कड़ियों ने मानव के जीवन को बुरी तरह झकझोरा ही नहीं बल्कि बदल ही डाला।

घर में बंद होकर रहना हमें कुछ विशेष कठिन नहीं लगा क्योंकि इतना घूमने-फिरने की आदत हमें नहीं थी। शॉपिंग मेनिया, बाहर खाने का मेनिया भी नहीं था। इसलिए घर में रहना कष्टकारी नहीं अनुभव हुआ। छूटे-भूले काम करने के अवसर मिले। उन कामों को करके, अपने मनपसंद कामों को करके विशेष आनंद की अनुभूति होने लगी। स्वयं से मिलने का भरपूर अवसर मिलने लगा, घर से, आपस में अनकही बातों को कहने का अवसर मिला, अपनी छूटी हुई रुचियों को जीने का अवसर मिला। इससे भी बढ़ कर बिना कहीं बाहर जाए भी आनंद अनुभव किया जा सकता है... यह अनुभव मिला, मितव्ययिता को कई रूपों में सीखा। सृजन के कई आयाम खुले।

यह सब चल ही रहा था कि चिकित्सा के मध्य हमारा डॉगी चीनू गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गया। खाना-पीना सब उसने छोड़ दिया। कोरोना का भयावह वातावरण, बेटा नोएडा में फँसा हुआ, बेटी गर्भवती होने के कारण आने में असमर्थ, हम दोनों साठ की आयु से ऊपर और चीनू की अवस्था गम्भीर.... करें तो क्या करें? बेटे के मित्र से फोन पर बात की। उसने डॉक्टर से घर आकर इलाज करने की करने की प्रार्थना

की। तब पच्चीस दिन तक डॉगी को ड्रिप चढ़ती रही, न जाने कितने इंजेक्शन लगे। बेटा भी नोएडा से आ गया।कभी आशा बँधती यह ठीक हो जायेगा। तीन रातें पाँच-पाँच मिनट में देखते कि साँस चल रही है या नहीं। डॉक्टर ने कह दिया कि अब यह नहीं बचेगा। पर मेरे पतिदेव आशा छोड़ने को तैयार नहीं थे। डॉक्टर से पूछ कर सरसों के तेल में अजवायन, मेथी, लहसुन, लौंग आदि डाल कर पकाया और उससे दिन-रात में सात-आठ बार मालिश की। पतिदेव की मेहनत रंग लाई और धीरे-धीरे वह ठीक हो गया। कहाँ तो पतिदेव जी उसे लाने पर जब-तब गुस्सा करके छोड़ आने की बात करते रहते थे और उसके बीमार होने पर इतने समर्पित भाव से उसकी सेवा की और उसे ठीक करके ही छोड़ा। इस सब में पति और चीनू का स्नेह और आत्मीयता का एक ऐसा अनोखा रिश्ता बना जिसे शब्दों में परिभाषित करना नितांत असंभव है।

कोरोना और लॉकडाउन ने जीवन और जीने के तौर तरीकों को पूरी तरह बदल दिया था और अब भी जीवन समझदार लोग उसी तरह जी रहे हैं। जो बदलाव को नहीं अपनाते वह स्वयं अपना जीवन तो कष्टमय बनाते ही हैं दूसरों के लिए भी काँटे बोने का काम करते रहते हैं। परिचितों के जिन परिवारों में पुरानी पीढ़ी के बड़े-बूढ़े थे वे कोरोना के नियम मानने को तैयार ही न होते थे। कई परिचितों की ऐसी समस्याओं से अवगत होने का अवसर फोन पर मिलता था। उन्हें ही समझाती कि घुमा-फिरा कर युक्ति से नियमों का पालन करवाने का प्रयास करो, धैर्य खोने से अपनी ही हानि है।

इस अनोखे और डरावने वर्ष ने पिता तुल्य पापा के परम मित्र डॉ० राजनारायण राय को हमसे छीना। कैसी विडम्बना थी की कोरोना के चलते उनके अंतिम दर्शनों तक से वंचित रही, आंटी को धैर्य और साहस बँधाने भी कई माह बाद जा पाई। मेरी परम मित्र शारदा त्रिपाठी के पति भी परमधाम पहुँचे।कितने ही परिचितों, साहित्यकारों, सिने जगत के कलाकारों, खिलाड़ियों के जाने के समाचारों ने व्यथित कर डाला। मन यही सोचता कि यह भयावह वर्ष और क्या करने वाला है, क्या लेकर जाने वाला है।

इसी बीच अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन और संस्था की स्वामिनी प्रीति सुराना, जिन्हें मैं आयरन लेडी कहा करती हूँ, का संदेश मिला कि एक योजना के तहत पंद्रह रचनाएँ भेजनी हैं। कोरोना की भयावहता के बीच यह सुखदायक समाचार तपती गर्मी में किसी ठंडी हवा के झोंके सा लगा। तुरंत कविताएँ भेज दी जिसकी सुखद परिणति "आपातकाल में सृजन फुलवारी" के रूप में हुई। एक और एकल संग्रह की प्रस्तावित योजना के लिए प्रीति से हाँ कह दी थी पर एकल संग्रह की सामग्री को एक जगह सहेज ही नहीं पा रही थी। योजना कुछ कारणों से आगे बढ़ती रही पर मैं तब भी संग्रह की सामग्री को रूप नहीं दे पायी। मन में निराशा के बादल छाने लगे यह सोच कर कि क्या मेरी यह पुस्तक आकार ले भी पायेगी? फिर प्रीति का अंतिम संदेश इस योजना के बारे में मिला तो कमर कस ली कि अब यह काम तो होना ही है।दो दिन की मशक्कत से अपने इस अधूरे काम को पूर्णकाम कर प्रीति को वाट्सअप पर ही चार टुकड़ों में अपनी पुस्तक की सामग्री भेजी, किस तरह भेजी उसकी चर्चा आगे करूँगी।

बेटे का दिन और रातें अपनी कार में बीतती। कोरोना के मरीज और उनके घरवाले अस्पताल में, तो सुरक्षा की दृष्टि वह कार में बैठा रहता, उसी में खाता उसी में सोता। ऐसे में मैं उसे अपनी पुस्तक की सामग्री का पीडीएफ बनाने को कहने का सोच भी नहीं सकती थी। अस्पताल और घर की भागदौड़ के बीच टुकड़ों में ही सामग्री प्रीति को भेजी यह सोच कर कि वह मेरी विवशता को समझ लेगी।ऐसा ही हुआ। वह अन्तरा परिवार के हर सदस्य की परिस्थिति को समझती है, उसके साथ पूरा सहयोग करती है। मैं तो ईश्वर का सदा धन्यवाद करती हूँ कि उसने मुझे अन्तरा परिवार से जुड़ने का सौभाग्य दिया और प्रकाशक के रूप में प्रीति ने पुस्तक प्रकाशन को इतना सरल बनाया

कि हर व्यक्ति अपनी पुस्तक के प्रकाशन के सपने को साकार करने लगा।

सब कुछ यथावत चल रहा था। बेटी-बेटे से फोन पर बातें होती रहती, अपने-अपने कामों-विचारों का ब्यौरा दे-दे कर न आ पाने, न मिल पाने की कमी को कम करते रहते थे। फिर जीवन में २४ सितम्बर हमारे लिए ऐसा काला दिन बन कर आया जिसकी सपने में कभी कल्पना भी नहीं की थी। पति मोहल्ले के किसी काम से घर से बाहर गए हुए थे जब लौटे तो पसीने में लथपथ। देख कर मेरे तो होश उड़ गए। सदा फिट रहने वाले पति को ऐसे देख कर अकेली क्या करूँ.... दिमाग जैसे बंद हो गया। वह गैस का दर्द कह रहे तो झट अजवायन और काला नमक गर्म पानी से दिया। जहाँ फोन करूँ वह लगे ही न। पड़ोस की अंजलि को फोन कर तुरंत किसी गाड़ी वाले को साथ लेकर आने को कहा। जो पैसे मिले उन्हें ले कर तीन पड़ोसियों के साथ अस्पताल जाने को निकले। इनकी बेचैनी देख देख दिल बैठा जा रहा था। कई व्यवधानों को झेलते हुए कैलाश हॉस्पिटल की एमर्जेंसी में पहुँचे। वहाँ बैड पर लेटते ही इनके हृदय की धड़कनें रुक गई। मेरी साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे.... किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में अस्पताल वालों को साँस वापस लाने का परिश्रम करते देखती रही। मेरे बड़े जेठ जी और पति के परम मित्र उदयपाल सिंह नेगी जी पहुँच गए थे। बेटे के मित्र अंकुश खरे को फोन कर बुला लिया था जिसने आते ही बेटे के आने तक सब अस्पताल की कार्यवाही सम्भाल ली थी। लगभग बीस-पच्चीस मिनट के परिश्रम के बाद बीस प्रतिशत साँसें लौटने पर पति को वेंटिलेटर पर रखा गया। पाँच दिन के बाद उन्होंने आँखें खोली। पंद्रह दिन बाद उन्हें घर लेकर लौटे। घर के एक कमरे को आई सी यू बना कर उसमें उन्हें रखा। अति कमजोरी के कारण एंजियोग्राफी नहीं हुई।

२४ सितम्बर से ही चीनू भी गुमसुम हो गया था। खाना कभी-कभी ही खाता। अपने मालिक की प्रतीक्षा में उनके एक्टिवा के पास ही बैठा रहता था। डेढ़ महीने बाद पुनः पति की जान जोखिम में पड़ी। बेटे की सूझबूझ और रखे हुए सहायक की सहायता से रुकती हुई साँसों को चलाते हुए ढाई मिनट में फिर अस्पताल पहुँचे। अपने मालिक से आठ अक्तूबर को चीनू मिला। उसी रात उसकी तबियत खराब हुई। नौ अक्तूबर की शाम अपने मालिक के सारे दुखों को अपने ऊपर लेते हुए उसने अपने प्राण त्याग दिए। २०२० हमारे चीनू को हमसे छीन कर ले गया.... इस दुख को जीते जी तो भूल ही नहीं सकती।

दूसरे दिन सी सी यू के मॉनिटर में ब्लॉकेज के संकेत मिले तो चिकित्सकों ने तुरंत एंजियोग्राफी करने का निर्णय लिया। एक आर्टरी में ९८% ब्लॉकेज था, उसमें स्टंट डाला गया। बारह दिन अस्पताल में रह कर उन्हें वापस लाये। डेढ़-दो मिनट जब पहली बार हृदय की धड़कनें बंद हुई थी उस समय मस्तिष्क ऑक्सीजन न पहुँचने पर हुई क्षति को दूर करने के लिए संघर्ष अब भी जारी है। मेरा और बेटे का संसार फिलहाल घर तक सीमित है और मैं सृजन तो दूर अध्ययन से भी अभी कोसों दूर हूँ।

कैसे भूल पाऊँगी इस २०२० को जिसने हमारे चीनू को हमसे छीन लिया, समाज के लोगों की सेवा में प्रतिपल तत्पर रहने वाले मेरे पति को और हमें इतना कष्ट दिया है।ऐसे में अपनी उपलब्धियाँ भी नगण्य और महत्वहीन अनुभव हो रही हैं। इन्हीं कष्टमय दिनों के बीच एक सुखदायक समाचार भी मिला। बेटी ने बेटे को जन्म देकर हमें नाना-नानी बनने का सौभाग्य दिया।

आज लिखते-लिखते कवि मंगलेश डबराल जी के जाने का समाचार मिला। वर्ष २०२०..... अब तो रुक जाओ। कुछ खुशियाँ भी लोगों के आँचल में डाल दोगे तो क्या तुम्हारा कुछ बिगड़ जायेगा। बहुत हुआ.....अब बस भी करो।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अनोखा वर्ष 2020 करतब

वैसे तो जीवन के प्रत्येक बदलते वर्ष में ना जाने कितनी... अविस्मरणीय, अप्रत्याशित, चटपटी, मीठी, खट्टी, कुनकुनी धूप से हल्की गर्म और कुछ गुनगुनी दूध सी नरम, कभी तोहफे में मिले, कुछ दोस्तों के दिए सरप्राइज़, कभी भाई बहन के बहुत प्यार के साथ कुरियर मे मिले उपहार, नित्य प्रति तुलसी में जल चढ़ा कर पाई अरदास, कुछ ईश्वर से बिन मांगे मिले आशीर्वाद और कई आंख मूंद मन्नत के धागे बांधकर मिले वरदान से मन को हर्षित करती दिल के सुनहरे- रूपहले कोने में दस्तक देती यादें! कितना कुछ है बताने के लिए परंतु शब्दों की तय सीमा भी बाध्यता है फिर भी अपनी बातों को कम पंक्तियों में ही लिखकर भी इस साल हुए सारे किस्सों के छोटे-छोटे हिस्सों को बताकर शायद मैं अपने साथ बीते पलों को साझा कर लूंगी।

अच्छा एक शब्द उन्नीस बीस को बचपन से सुनते आई थी। कभी अपनी माँ और कभी दादी मां के मुंह से अरे बिटिया! ऐसा मत करो, देर तक कॉलेज की लाइब्रेरी में मत रहना, कोई भी बात बोलो तो सोच समझकर बोलो, कपड़े ध्यान से पहनो कहीं, दूसरे घर जाना है तुम्हे..... कहीं उन्नीस बीस ना हो जाए... जीवन के उस पड़ाव पर तो इस शब्द का फर्क नहीं समझ पाई परंतु २०१९ से २०२० में प्रवेश के बस कुछ ही दिनों के भीतर फर्क मालूम शुरू हुआ इस शब्द जाल के फेरे हुए बदलते वर्ष का।

भई मैंने तो अपनी तरफ से इस वर्ष का नामकरण भी कर डाला... करतब.... क्योंकि जिस तरह मदारी अपनी डुगडुगी बजाकर अपने जमुरे को उस पर नचाता है ठीक वैसे ही आज कोविड भी समस्त मानव जाति के लिए मदारी से कम नही.... चलिए आगे बढते हैं.....

इस वर्ष सबसे पहले अपने दोनों बच्चों के भविष्य को लेकर कुछ उत्साहित और कुछ चिंतित भी थी आप सोच रहे होंगे दोनों चीजें एक साथ कैसे हो सकती है। क्योंकि दोनों बच्चे उम्र के उस पड़ाव पर है जहां पर उनको अपना करियर का चुनाव करना था। बेटा मास्टर्स की डिग्री में प्रवेश के लिए प्रयासरत और बिटिया भी अपने जीवन को एक नई दशा और दिशा में आगे बढ़ने की और अग्रसर और दूसरा कारण यह है जिस जगह में रहती हूँ वहां से पलायन भी कर जाती, परंतु वाह रे वाह!....."वक्त का फेरा" साल के शुरूआती महीनों में ही दिल्ली दंगों ने जिंदगी की रफ्तार पर ब्रेक लगाना शुरू किया क्योंकि मेरे हसबैंड दिल्ली में ही कार्यरत हैं। परंतु दंगो के दौरान ऑफिस को बड़े नुकसान का सामना करना पड़ा। इसका प्रभाव मेरे घर की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ना लाजमी था लगभग एक,डेढ महीने के बाद आफिस का काम सुचारू रूप ले पाया सही बात तो यह है कि....

जाहि विधी राखे राम ताहि विधि रहिए

सब कुछ सहर्ष स्वीकार किया और किया भी क्या जा सकता था। खैर...साथ ही साथ मेरी बिटिया की हाईस्कूल की परीक्षाएं भी "राम राम" कहकर जैसे तैसे कोविड की उडती खबरों के बीच समाप्त हुई परन्तु मार्च/अप्रैल आते आते कोविड भारत में भी अच्छी तरह पैर पसारने लगा था। इसी बीच होली का त्योहार भी दूर ही दूर से शुभकामनाएं देकर मनाया गया और उसके तुरंत बाद लॉकडाउन ऐसा वक्त जो कभी ना देखा, ना कभी सोचा, ना कभी सुना अचानक सब कुछ बंद....सभी कुछ से पर्याय है सारे रास्ते, बाज़ार, माल, सिनेमा घर, मेडिकल, सुरक्षा बलों को छोड़ अन्य सभी सरकारी और गैर सरकारी सेवाएं, रेलगाडियां, बस, हवाई अड्डे जो जहाँ था वही

रोक दिया गया। ऐसा लगा मानो धरती ने घूमना जैसे बंद कर दिया...पर कहीं ऐसा भी लगा था कि कुछ दिनों के लॉकडाउन के बाद सामान्य जिंदगी जल्द ही शुरू हो जाएगी और जिंदगी की गाड़ी पटरी पर आ जाएगी परंतु भविष्य में क्या होने वाला है? यह किसी को नहीं पता।

परन्तु लाकडाऊन उन 21 दिनों को मैंने अपनी जिंदगी के खुशनुमा दिनों में से गिना....ना किसी का आना ना ही जाना बस छुट्टियां ही छुट्टियां मानो ईश्वर ने घर और अपने बच्चों के साथ वक्त बिताने के लिए यह लाकडाऊन किया हो कोचिंग कार्य के कारण अत्यधिक व्यस्तता की वजह से मैं अपने दोनों बच्चों को भी वक्त का नहीं दे पाती थी। अब दोनों बच्चों और परिवार के साथ बहुत सारा समय बिताया, दिन भर खूब मस्ती धमाल तरह तरह के खाने पीने की चीजों को बनाना सीखा।

अरे हां! एक बात और क्योंकि लाकडाऊन तो अचानक ही हुआ हमारी सोसाइटी शहर से थोड़ा दूर है। यहां आस पास अब बडे स्तर पर डवलपमेंट हो रहा है नज़दीक ही काफी बिल्डिंग में चिनाई का काम चल रहा है। तो एक बड़ा मजदूर वर्ग यहां पर कार्यरत है। अचानक हुए लॉकडाउन के कारण उन सभी के लिए भी मानो सब कुछ रुक सा गया। परंतु हम सभी सोसाइटी के सदस्यों ने मिलकर लोगों के भोजन का और बाकी की जरूरत के सामान की भी यथासंभव मदद की सच मानिए तो यह सब करते हुए अच्छा भी लगा और कहीं ना कहीं दिल के किसी कोने में टीस भी रही कि कोरोना के कारण एकदम सब कुछ उथल पुथल हो गया। इसी बीच मेरी सखी का भी स्थानांतरण हो गया उनसे बिल्कुल घर जैसा व्यवहार है कई दिनों तक मन बहुत व्यथित हुआ।

अच्छा अब अपने साथ हुए एक अच्छे वाकये के बारे में जिक्र करती हूँ, कि लॉकडाउन के वक्त फेसबुक देखते समय अचानक पहुंची अंतरा शब्द के पटल पर और इश्वर ना जाने कौन सा इशारा कर रहा था हाँ... यह भी हो सकता है मैंने कुछ अच्छे कर्म किए होंगे कि अंतरा परिवार से अचानक जुड़ गई है और अब अप्रैल माह के शुरूआत में ही मेरे लेखन कि कब शुरुआत हुई मुझे खुद ही नहीं पता।

वैसे लिखने पढने का शौक तो मुझे बहुत पहले से था परंतु अंतरा समूह में जुड कर मुझे एक नई दिशा मिली लगभग पहले हफ्ते के भीतर ही मेरी रचना.... कहाँ गए को स्थान मिला तहे दिल से शुक्रिया अंतरा मेरे भीतर छिपी इस प्रतिभा को मुझ ही से परिचय कराने के लिए,नया आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए और सबसे बड़ी बात एक नई पहचान मेरे नाम के साथ जोड़ने के लिए बस अब क्या! अब तो मुझे रोज मिलने वाले विषय पर लिखने का नशा सा हो गया। इस कभी कहानी, मुक्तक, गीत, लेख, संस्मरण, लगभग सभी तरह की रचनाओं को लिखने की कोशिश करती हूँ और अंतरा पटल पर सबकी मिलती सराहना और अगर कुछ गलत लिखा है तो उस पर सुधार कराना यह भी सब अंतरा समूह का प्यार ही है। इनके अलावा सांझा संकलन, मासिक पत्रिका में मेरे लेख को स्थान मिलना, अंतरा समूह पर ही मेरा प्रथम लाइव साथ ही यूट्यूब के कॉन्पिटिशन में द्वितीय पुरस्कार तो मेरे लिए अप्रत्याशित ही था। मई जून और जुलाई भी कभी घंटी बजा और कभी दीपक जला कोचिंग के बच्चों की आनलाइन क्लास लेते धीरे-धीरे ऐसे ही निकल गए इसी बीच सभी त्योहार भी दस्तक देकर आने और जाने लगे सभी त्यौहारों को बड़ी सादगी से मनाया। बस ईश्वर को बार-बार यही धन्यवाद किया कि मेरे सभी घर के लोग, मेरे सभी परिचित लोग, सभी दोस्त स्वस्थ और अपने घरों में सुरक्षित हैं। साथ ही घर में कई बार खुशियों के पल पर देन में भी उपर वाले ने कोई कंजूसी नहीं

की परन्तु अचानक मेरी मां और दादी माँ दोनों की तबीयत बिगड़ने के कारण मैं बहुत परेशान रही परंतु ईश्वर की कृपा से और स्थितियां धीरे-धीरे सुधर रही है और आने वाली खबरें कोविड वैक्सीन का भी इशारा कर रहीं हैं। अब इसी हफ्ते मेरे बेटे का मास्टर्स डिग्री के लिए भी कॉलेज में चयन हो गया।

मगर कई बार इस बात का अफसोस होता है कि जिन बच्चों को मैं पढाती थी। उनमें एक समूह ऐसा भी है जो कि हमारी सोसाइटी के निकट के गांव से आते थे। उन सभी के साथ बहुत मेहनत की और वह बच्चे अच्छी तरह पढ़ना सीखे रहे थे। अचानक कोरोना के कारण उनको पढ़ाना बंद कर दिया अब जब भी स्थितियां फिर से सुधरेंगी तब उनको पढाने की फिर से शुरूआत करूंगी जिससे कि वह बड़े होकर समाज में एक अच्छा स्थान पा सकें और सभी अच्छे नागरिक बने।।

आने वाले साल के लिए मेरी यह योजना है कि घर के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निर्वहन के साथ ही अपने लेखन को और निखार सकने की मेहनत से पुरजोर कोशिश करूंगी कि आने वाले साल में दो कदम आगे बढ़ पाऊँ क्योंकि कहते हैं ना.....

"जीवन चलने का नाम"

"चलते रहो सुबह शाम"

लीना शर्मा
कोटा(राज.)

खट्टे मीठे अनुभव 2020 में

मैंने अनुभव किया मेरे जीवन में कितनी कठनाई का सामना कर, मैने कुछ सुकून के पलों को पाया! मेंरा कुछ खट्टा अनुभव तो रहा जिसे में आज भी भुला नहीं पा रही हूँ! वो हे मेरे परिवार की सबसे बड़ी हस्ती मेरे ससुर साहब जिनका अभी 1 महीने पहले ही देहांत हो गया, हमारे परिवार को उनके जाने से बहुत ही छति पहुंची हे, साथ ही यह कोरोना काल जिसमे और भी अपनों को हमने खोया हे! इस पल को भूलना बहुत ही मुश्किल हैं पर जीवन हैं इसमें कभी दुःख तो कभी सुख हैं, इस दुःख की घड़ी में कई कठिनाई आयी! उन कठिन पलों में कही न कही बाबू जी का आशीर्वाद छुपा हुआ था! हमारी बेटी की मेडिकल की काउंसलिंग उसी समय थी हमने बहुत मुश्किल से काउंसलिंग में उसे बैठाया भगवान ने भी बहुत परीक्षा ली, मुसीबत पर मुसीबत आती गयी! घर में बड़े होने के कारण पूरी जिम्मेदारी हम दोनों ही जॉब में हैं मेरा प्राइवेट जॉब हैं छुट्टी मिलना भी मुश्किल छुट्टी ली भी तो without payment, उसी समय पैसों की इतनी कमी और सारी जिम्मेदारी हमारी, घर में सभी बड़े छोटो का ध्यान रखना पर मैने हार नहीं मानी बिटिया को बोला बेटा सब ठीक होगा तुम काउंसलिंग अटेंड करो! जब आखिरी लिस्ट अलॉट हुई तो बेटी का नाम उसमें आ गया बेटी को बढ़िया मेडिकल कॉलेज मिल गया यह मेरा कठिनाइयों से निकल कर, खट्टे अनुभव के साथ मीठा अनुभव रहा बाबू जी के आशीर्वाद से बिटिया डॉ की डिग्री पा लेगी! यही 2020 के खट्टे मीठे अनुभव हैं मेरे

श्रीमती भारती शर्मा,
होशंगाबाद, म.प्र.
8720895588,9827553960

ये अनोखा वर्ष 2020

"देखो तो यह बीता साल,
क्या-क्या हमें दिखला गया,
एक आंख में खुशी के आंसू,
दूजी में गम के दे गया"।।

बीता साल यानी 2020, एक ऐसा वर्ष जो अपने आप में एक इतिहास लिख गया। जिंदगी के शायद सारे रंगों को इस वर्ष ने हमें दिखला दिया। बीते समय के बारे में आज लिखने बैठे तो शब्द ही कम पड़ गये। हम सब की जिंदगी पर सबसे ज्यादा गहरा असर डालने वाला समय रहा।

जनवरी की शुरुआत मेरे लिए अत्यंत दुखद। अकल्पनीय, अकथनीय और असहनीय पल थे, जब मेरा एक अपना लाड़ला, प्यारा ही अचानक हम सबका साथ छोड़ कर चला गया। मन मस्तिष्क तो जैसे शून्य सा हो गया। कुछ दिन बीते। और बाद में जनवरी का मध्य समय गहन अवसाद से घिरे मेरे मन में एक खुशी की किरण लेकर आया, जब संक्रांति के शुभ दिन पर मैं पहली बार दादी बनी। नाती हुआ। आंगन में खुशियां बरसी, और फिर बढ़ती हुई जिम्मेदारियां और खुशियां मन के कोने में अपना दायरा बढ़ाती जा रहीं थीं।

फरवरी का माह कुछ परंपरागत रीति रिवाजों के बीच बीता। फिर भी मन में अभी भी दुख की एक टीस उठ जाती थी। समय सुख और दुख के साये में बीत रहा था।

शुरू हुआ मार्च का महीना। होलाष्टक पर्व की शुरुआत के साथ। और अब विदेश के साथ-साथ देश के कुछ बड़े शहरों से करोना वायरस की उड़ती-उड़ती खबरें मिलने लगीं थीं। हमारे यहां अभी कुछ कहीं डर नहीं था। 15 मार्च को हमने अपनी समाज का होली मिलन समारोह उत्सव मनाया और अचानक ही दो दिन बाद डर और भय के बादल से मंडराने लगे। विदेश की भयावह तस्वीरें टीवी पर देख कर, मन में सोचा बस अब घर से नहीं निकलना। और फिर अचानक स्थितियां तेजी से बदलीं।

22 मार्च को 14 घंटे के लिए जनता कर्फ्यू, और उसके बाद से 24 मार्च से पूरे देश में 21 दिन का लॉकडाउन। स्कूल-कॉलेज, बाजार सिनेमाघर, सभी धार्मिक स्थल, शादी-ब्याह पूरा देश बंद। गली-मोहल्ले सूने से हो गए। सड़कों पर पसरा सन्नाटा डराने लगा था। लोगों में करोना के साथ-साथ रोजगार बंद होने की भी चिंता सताने लगी थी। किंतु संकट भरी स्थिति को देखते हुए फिर सबने हिम्मत बांधी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना शुरू किया। सब अपना काम स्वतः करने लगे।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए मास्क, सेनेटाइजर, हैंड वॉश, योग उसकी रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल हो गया। कभी सोचा भी न था कि कभी ऐसे मुंह को ढँककर रखना पड़ेगा। आदमी ने आदमी से दूरी बनाना शुरु कर दी। अब तो घर के प्रवेश द्वार पर ही सैनेटाइजर की बोतल रखी जाने लगी। बाहर तो निकले ही नहीं और जब अति आवश्यक कार्य से निकले तो घर आकर कपड़ों को गर्म पानी से धोया। कीटाणु नाशक साबुन का प्रयोग करना शुरू कर दिया। बुजुर्गों और बच्चों का विशेष रूप से ध्यान रखना शुरू हो गया। गर्म पानी पीना एवं भाप लेना भी नियमित दिनचर्या में शामिल हो गया।

देश में करोना का प्रभाव और व्यापक होने लगा था। मन में भय और आशंकाएं और अधिक बढ़ने लगी थी। रात का कर्फ्यू भी लग गया था। और अब एहसास होने लगा था कि यह सब मानव के कुकर्मों का ही नतीजा है। अफसोस कुछ लोगों की करनी का खामियाजा आज पूरी मानव जाति भुगत रही थी, और फिर कुछ शब्द अपने आप ही लेखनी से निकल पड़े कि....

प्यासी धरती रोई आज,
मानव ने किए हैं ऐसे काज,
गली-मोहल्ले सूने हो गए,

कैसा कलयुग आया आज।।

कोरोना तो है एक बहाना,
प्रकृति भी है कहती है आज,
अपनी करनी देख रे!मानव
हाथ मले पछताए आज।।

शाकाहार का दामन छोड़के,
तनिक भी तुझको आई न लाज,
बेजुबान जानवर हैं मारे,
देख खड़ा पछताए आज।।

फिर आया नवरात्रि पर्व और हम सब ने मां जगदंबे की पूजा, आराधना घर पर ही श्रद्धा पूर्वक की और इस संकट की स्थिति को समाप्त करने की प्रार्थना की। अब बड़े बुजुर्गों के साथ बच्चे भी अपनी साफ सफाई का ध्यान रखने लगे एक बात अच्छी देखने को मिली कि अब बच्चे भी बड़ों को स्वास्थ्य संबंधी हिदायतें दे रहे थे।हमने अपने बच्चों को सड़क पर घूमने वाले जानवरों के लिए दाना पानी का इंतजाम करने का काम सौंपा।पक्षियों के लिए भी नियमित दाना-पानी रखा जाने लगा।

अप्रैल का महीना इसी तरह बीता जा रहा था। बाजार कुछ शर्तों के साथ दैनिक उपयोगी वस्तुओं के लिए खुलने लगे थे।समय अभी भी संकट का था। और अब हम सीमित संसाधनों में ही खुश रहना सीख गए।

मई माह की शुरुआत। हम बेटियों को अब इंतजार था, कि कब कोरोना खत्म हो, और हमें कुछ दिन पीहर जाने को मिल जाये। अब बच्चों ने घर पर ही रखे समानों से कुछ-कुछ बनाना शुरू कर दिया। हम गृहणियों का अब अधिकतर समय रसोई में ही बीतने लगा।

फिर जून के माह में हमने सामाजिक स्तर पर कई कार्यक्रम ऑनलाइन शुरू किए। हमारी कई साहित्यिक संस्थाएं जोर शोर से काव्य पाठ इत्यादि के कार्यक्रम करने लगी ताकि नीरसता के इस समय में एक नई ऊर्जा का संचार हो सके। माह के अंत में कुछ हाई स्कूल के स्तर की कक्षाएं ऑनलाइन शुरू हो गई। शादी-ब्याह, पार्टियों, जलसो पर अभी भी रोक बरकरार थी।

अब कुछ मरीजों के ठीक होने की खबर भी आ रही थी। इससे मन को एक सुकून सा मिला। आज डॉक्टर साक्षात भगवान का रूप नजर आ रहे थे। और उनके लिए हमने कुछ शब्दों को लड़ियों में पिरोने की कोशिश की...

करोना जैसी महामारी में,
हम सबको एहसास हुआ
डॉक्टर को भगवान सब कोई
यूं ही नहीं कहते सदा।।

मानव हित की खातिर देखो,
अपना जीवन संकट में डाला,
अपने परिवार को छोड़कर,
रात-दिन एक कर डाला।।

हमारे पुलिसकर्मी, स्वास्थ्य कर्मी और सफाई कर्मचारियों की तारीफ करने के लिए तो शब्द ही नहीं थे, जो पूरे चौबीस घंटे, मुस्तैदी के साथ अपनी जान जोखिम में डाल अपना फर्ज निभा रहे थे। साथ में कई समाजसेवी संस्थाएं भी कार्य कर रही थी। सबके भोजन, पानी, मास्क, सैनिटाइजर की व्यवस्था आदि।

अभी भी सब कुछ सही नहीं था, हां कुछ सही हो रहा था तो वह प्रदूषण का घटता स्तर। प्रदूषण का स्तर काफी कम होने लगा था। सड़कें, आसमान आज साफ नजर आ रहे थे। पशु-पक्षी आज स्वच्छ हवा में सांस ले पा रहे थे। नदियां वास्तव में आज पवित्र नजर आ रहीं थीं। गली-मुहल्ले सूने थे तो क्या हुआ... अब छतें पतंग, माझा और चकरी के साथ गुलजार होने लगी थीं।

गली-मोहल्ले सूने हो गए,
छतें हुई गुलजार,
घिर्री और माझा के संग,
सब पतंग उड़ावें यार।।

घरों में कौड़ी, सांप-सीढ़ी, लूडो, कैरम और शतरंज की बाजी बिछने लगीं थीं। जिन्हें बीते दौर में मोबाइल के कारण हम और हमारे बच्चे कहीं

पीछे छोड़ आए थे। और बहुत दिनों बाद हमारी लेखनी से कुछ सुखद पंक्तियां निकली कि....

खुशियों के भी फूल खिलेंगे,
गम के यह बादल छटेंगे,
जन-जन भी हर्षायेगा,
करोना भाग जाएगा।।

थमें पहिये फिर से चलेंगे,
मशीनों के शोर सुनेंगे,
हर चेहरा मुस्कुराएगा,
करोना भाग जायेगा

इस बीच हमारे दो काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुए। जुलाई माह में सावन की शुरुआत। हम सब स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करते हुए, अच्छे समय के इंतजार में दिन गुजार रहे थे। सावन माह में घर पर ही भगवान शिव की पूजा-आराधना की। और फिर आया अगस्त माह। हम भाई-बहनों का सबसे पवित्र राखी का त्यौहार। करोना देश में अभी भी अच्छी तरह अपनी जड़ें जमाए हुए था। हम सब ने मौली की राखियां बनाकर,अपने कान्हा जी को बांधी और अपने भाइयों की सलामती की प्रार्थना की। हां मन में एक कसक जरूर थी, और जिसे हमने कुछ पंक्तियों में ढालने की कोशिश की...

सूखा सावन
न सावन के झूले ही पड़े,
न कजरी के मेले भी सजे
न तान छिड़ी मल्हार की
कैसी सदियां गुजार रहे।।

पीहर भी देखो जा न सके,
वीरा को राखी न बांध सके,
कैसा सूखा सावन बीता,
कैसी सदियां गुजार रहे।।

इस बार बच्चों ने घर पर ही अपने हाथ से मिट्टी के गणपति जी बनाएं और दस दिनों तक उनकी पूजा-अर्चना की। देश पर आए संकट को समाप्त करने की प्रार्थना की।

फिर आया सितंबर माह। हमने अपने गणपति को अपने घर की बगिया में ही विसर्जित किया। उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। सितंबर माह में हिंदी दिवस के चलते पूरे माह साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किए गए। पूरे माह हिंदी महोत्सव चलता रहा। हम गृहणियों ने घर बैठे कई सम्मान पत्र भी प्राप्त किए, जो हमारे लिए बहुत गर्व की बात थी। और अब वैक्सीन बनने की खबर भी आने लगी थी। मन को कुछ सुकून सा मिलने लगा।

अक्टूबर माह के आते-आते करोना का कुछ असर कम तो हुआ। किंतु स्थिति अभी भी नाजुक थी। समय संभल कर चलने का था। अक्टूबर माह, हिंदू त्योहारों से भरा हुआ। शुभ नवरात्रि आई किंतु वह भी देश हित की खातिर कुछ शर्तों पर मनाने को मिली। हमने भी मां अंबे की स्थापना, आराधना घर पर ही की। उनसे इस डर भरे समय से निजात दिलाने की विनती की।

जुलूस और जलसों पर रोक अभी भी बरकरार थी और फिर हम सब व्यस्त हुए दिवाली की साफ सफाई में सभी से विशेष अपील की गई कि घर की साफ-सफाई के साथ-साथ सब लोग अपने स्वास्थ्य का विशेषकर धूल से बचने का प्रयास करें,अपने नाक-मुंह ढक कर ही कार्य करें। साथ ही साथ अपनी शारीरिक क्षमता का विशेष ध्यान दें ताकि कोरोनावायरस आसानी से हमला न कर सके। आज मोबाइल और टीवी हमारे लिए बहुत उपयोगी साबित हो रहे थे।

और फिर नवम्बर में अच्छे समय के आने की कल्पना के साथ हमने दीपावली खुशी-खुशी मनाई। प्रदूषण को देखते हुए सरकार ने कहीं-कहीं पटाखों पर रोक भी लगाई। इसके साथ-साथ मौसम में ठंड बढ़ने से करोना का दूसरा दौर भी शुरू होने का डर था। विदेशों में इसका व्यापक असर देखने को भी मिल रहा था और फिर वही हुआ जिसका डर था। त्यौहार के उत्साह में लोगों ने लापरवाही बरती और जिसके फलस्वरूप कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों की संख्या में

एकदम से इजाफा हो गया, और एक बार फिर सरकार को देश की खातिर सख्ती बरतने पर मजबूर होना पड़ा।

और अब हुई दिसंबर माह की शुरुआत। मन में उपजते इन खूबसूरत विचारों के साथ कि साल का शेष समय अच्छे से गुजर जाए ताकि हम आने वाले साल 2021 का स्वागत खुशी-खुशी कर सकें।

हां इस पूरे साल के दौरान मेरी एक सबसे बड़ी उपलब्धि थी, मेरा विशेष हिंदी काव्य संग्रह "त्योहारों के रंग-काव्य के संग" जिसमें मैंने अपने बड़े बुजुर्गों द्वारा विशेष त्योहारों पर अपने मुखारविंद से सुनाई गई शिक्षाप्रद लोक कथाओं को, सरल भाषा में काव्य रूप में, ढालने की एक छोटी सी कोशिश की। और जिसे अंतरा शब्दशक्ति द्वारा ही प्रकाशित किया गया। जो मेरे लिए एक बहुत ही गर्व का विषय है। इस पूरे समय में मुझे कई छोटे-बड़े लोगों का साथ मिला, जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन दिया। आज मैं उन सब का तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने अवसाद भरे इस समय में मुझे एक नई चेतना प्रदान की।

बीता साल तो हम सबके लिए एक इतिहास बन गया। जिसे आगे न जाने कितने सैकड़ों सालों तक याद किया जाता रहेगा। पूरे वर्ष स्कूल ही नहीं खुल पाए। आधा साल तो ऐसा लगा मानो जिंदगी ठहर सी गई हो। कई नौजवानों की नौकरी चली गई। काम धंधा भी ठप्प हुआ।किंतु हर व्यक्ति ने संकट भरे इस समय का सामना हिम्मत से किया। एक दूसरे की मदद की। बहुतों ने कई अपनों को खोया किंतु हिम्मत न हारी।

लोगों ने फिर से अपना व्यापार शुरू किया। किंतु अब आगे का समय भी संभल कर चलने का है। वैक्सीन अभी नहीं बनी। हमें अभी काफी समय मास्क, सैनिटाइजर एवं आपसी दूरी बनाकर गुजारना होगा। अपने बुजुर्ग एवं बच्चों को इस संकट से बचाना होगा। देश को, समाज को फिर से विकास की पटरी पर लाने का प्रयत्न करना होगा। एक दूसरे की स्थिति को भी देखना समझना होगा। क्योंकि यदि अभी हम नहीं संभले तो फिर हम काफी पीछे हो जाएंगे।।

साधना छिरोल्या
दमोह (मध्य-प्रदेश)

अनुभवों और उपलब्धियों भरा वर्ष 2020

31 दिसम्बर की रात बड़ी अनोखी रात होती है। पटाखों की आवाज़, गीत और साज़ सब तैयार रहते हैं नए वर्ष के आगमन के लिये।प्रत्येक व्यक्ति का मन हर्षोल्लास और उत्साह से भरा होता है नए वर्ष को अपनाने के लिये,अपने जीवन में उसे शामिल करने के लिए।प्रत्येक व्यक्ति नई आशाओं और उम्मीदों के साथ स्वागत करता है नए वर्ष का। हमारा पूरा परिवार भी कुछ इसी तरह से नए साल का इंतजार कर रहा था। आखिर नया वर्ष आ ही गया।नई आशाओं की किरणे लेकर नया सूरज भी आसमान में आ गया।

नए वर्ष का हो गया
आगाज़ देखो धड़कन में,
आएगी नयी सुबह ले
उत्साह और सुख जन जन में,
होने लगी देखो प्रवेश
आशाएं नयी जीवन में
भरने लगा उत्साह अब तो
देखो ना सबके तन मन में

जनवरी महीने की शुरुआत अच्छी रही।जनवरी माह का दूसरा सप्ताह बहुत अच्छा गया। हमारे स्कूल (यू.एस. ए. विद्या निकेतन-तुमसर, भंडारा) में वार्षिकोत्सव था, दो दिन का। अभी हाल ही में नया ऑडिटोरियम बन कर तैयार हुआ था और इस बार उसी में प्रोग्राम होना था। पूरा प्रोग्राम बहुत अच्छे से सम्पन्न हो गया। पेरेंट्स का भी अच्छा फीड बैक (प्रतिपुष्टि) आया। ये हमारे लिए और हमारे स्कूल के लिए बहुत ही खुशी की बात थी।

जनवरी अभी आधी ही बीत पाई थी कि इसी बीच अचानक मेरे पिताजी (ससुर जी) की तबियत ख़राब हो गई, जब यहाँ के और फिर नागपुर के डॉक्टर्स ने भी जवाब दे दिया तो हम उन्हें मण्डला ले गए 21 की सुबह चार बजे मण्डला पहुँचे और 21 जनवरी शाम साढ़े चार बजे वो इस दुनियाँ को अलविदा कह गए। ये हम सभी के लिए एक अपूर्ण क्षति थी और नए साल की शुरुआत का एक कड़वा अनुभव भी।

पिताजी के साथ रहकर उनके अनुभवों से हम सभी को बहुत कुछ सीखने को मिला।कई सालों से वो हमारे साथ ही तुमसर में रह रहे थे।

समय पंख लगाकर उड़ रहा था।कब नया वर्ष शुरू हुआ और कब जनवरी भी बीत गया पता ही नही चला हमलोग मण्डला से वापस तुमसर आ चुके थे।पिता जी के बिना घर सूना सूना सा लग रहा था।बुजुर्ग व्यक्ति का घर मे होना अपने आप में बहुत अहमियत रखता है।घर भरा भरा लगता है लेकिन होनी को कौन टाल सकता है।

वार्षिकोत्सव समाप्त हो चुकने के बाद अब बच्चों की पढ़ाई तेजी पर थी क्योंकि सभी बच्चों के फाइनल एग्जैम्स पास ही थे।मेरे लड़के का भी 12वी का बोर्ड एग्ज़ाम नजदीक ही था। सब कुछ सामान्य सा चल रहा था कि अचानक ऐसा समाचार सुनने में आया कि एक नई बीमारी फैल रही है।जिसको सर्दी- खासी हो वो अपना मुँह और नाक ढककर रखें और अन्य लोग उससे दूर रहें। शुरु शुरू में तो हम सभी टीचर्स इसे मज़ाक में लेते रहे लेकिन देखते ही देखते इस बीमारी ने महामारी का रूप लेना शुरू कर दिया था, इस बीमारी का नाम कोविद-19 दिया गया जिसे सामान्य भाषा में लोग "कोरोना" कहने लगे थे। विदेशों से इस बीमारी से हज़ारों लोगों के मरने की खबरे आने लगी थी। हमसभी लोग भी घबरा गए और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु हमारे देश को बचाये रखना। परन्तु कुछ भी सामान्य नही था। हम लोगों के लिए ये पल बड़े भयावह थे। जहाँ तहाँ स्कूल कॉलेज बन्द होने लगे थे।

हमारे स्कूल के बच्चों के दो पेपर अभी बचे थे, कुछ समझ मे नहीं आ रहा था क्या करें। उधर मेरे बेटे के बोर्ड के एग्जाम्स चल रहे थें।

ये मार्च 2020 की बात है, इस महामारी ने अपने पाँव फैलाना शुरू कर दिए थे। कोई भी शहर कोई भी गांव इस बीमारी से अछूता नही था।

आनन फानन में हमे भी स्कूल में बच्चों के दो पेपर पोस्टपोंड कर स्कूल को बंद करना पड़ा। अब चिंता बेटी की हो रही थी,क्योकि मेरी बेटी "नीट" की कोचिंग के लिए हैदराबाद गई हुई थी। वहाँ उसके होस्टल में रहने वाली लड़कियों में से बहुतों ने अपने घर वापस जाना शुरू कर दिया था। उसको वापस लाने के लिए बस या ट्रेन से जाना तो खतरे से खाली नही था, अब विकल्प केवल कार का ही बचा था किंतु बात मेरी बेटी की और सभी की सुरक्षा की थी इसलिए निश्चय हुआ कि कार से जाना सर्वथा उचित होगा। और फिर कार से ही मेरी बच्ची सहित सभी लोग सुरक्षित घर आ गए। अब हमारा पूरा परिवार साथ था और सुरक्षित भी।

इस बीमारी के चलते हम जैसे घर में कैद कर दिए गए हों लेकिन एक बात की खुशी भी थी कि हम सबको एकसाथ रहने का इतना बड़ा मौका मिला था।ये मेरे लिए तो बहुत ही खुशी भरे पल थे जिसमें मेरे पति और मेरे दोनो बच्चे सब साथ थे।मैं और मेरी बेटी हमदोनो मिलकर नए नए व्यंजन बनाने की कोशिश करते और कुछ हद तक सफल भी हो जाते थें।

इस महामारी के चलते, सभी NEET, JEE, MHT-CET कॉम्पिटीटिव एक्जाम्स की तारीख भी अनिश्चित समय के लिए आगे बढ़ा दी गईं। अप्रैल के शुरू होते होते ही दुनियाँ के हालात बहुत बिगड़ चुके थे, मौते तो रुकने का नाम नहीं ले रही थी, पता नही सब लोग कौन से पाप की सज़ा भुगत रहे थे। बच्चों की पढ़ाई, गरीबो का रोजगार, सभी ऑफिस ठप्प पड़ चुके थें। मजदूर मजबूर होकर अपने अपने घर वापस जाने लगे थे, जिनके पास साधन नहीं थे या पैसा नही था वो अपने परिवार के साथ पैदल ही अनिश्चित यात्रा पर निकल पड़े थे।

ये समय बहुत ही दुःखद और भयावह था, जिसमें हम चाहकर भी कुछ नही कर सकते थे। अब तो हालात बद से बद्दतर होते जा रहे थे। रोज ही हर देश से, देश से क्या हर राज्य से हजारों के मरने की सूचनायें आने लगी थी। ऐसे हालात देखते हुए सरकार ने देश में पूर्णतः लॉकडाउन घोषित कर दिया। जीवन तो जैसे रुक सा गया हो, अपने जीवन में मेरा यह पहला बहुत ही दुःखद अनुभव था जिसमे दो तीन महीने घर से बाहर न कहीं जाना, न किसी को अपने घर बुलाना। यदि सुरक्षित रहना चाहते हो तो बस अपने घर में ही रहो, बाहर तब तक नही निकलो जब तक अतिआवश्यक कार्य न हो।

अब तो रह रहकर यही बात दिमाग में आ रही थी कि इस बार शायद गर्मियों में (जून में) मायका जाना नही हो पायेगा। न तो मम्मी से मिल पाऊँगी और न ही अपनी बेबी भतीजी (जो कि दिसम्बर में जन्मी थी) को देख पाऊँगी। लेकिन कर भी क्या सकते थे। बाहर के हालात ही ऐसे थे कि लगता था घर मे ही चुपचाप पड़े रहो।

पूरी दुनियाँ के हालात टीवी पर देख देखकर बहुत दुख होता था और आज भी है। कितने डॉक्टरों की, पुलिस की, सफाई कर्मचारियों की जिंदगी दाँव पर लगी थी, कैसे वो देश और देश के लोगों को बचाने के लिए बिना दिन रात देखे बस अपना फर्ज निभाने में लगे थे; न अपने परिवार की चिंता न खुद की फ़िकर, बस सामने था तो केवल अपना फर्ज़। इन्ही हालातों के चलते मैंने चंद पंक्तियाँ लिखी थी,जो इस प्रकार हैं-

आओ इक दीपक जलाऐं

देखो शहर सुनसान कैसा हो गया,
इंसान अब अपने ही घर में खो गया,
मिल के एक दूजे को फिर ढाढ़स बधाऐं,
आओ आशाओं का इक दीपक जलाऐं।।1।।
दिन की रौशनी में भी छाने लगा अंधेरा,
आता नहीं पहले-सा अब रोज़ सवेरा,
फिर से कोशिश कर नया इक कल बनाए,
हौसले का आओ इक दीपक जलाऐं।।2।।
घुल गया कैसा हवाओं में जहर,
मच गया कोहराम, ये कैसा कहर?
मुश्किलों के इन पलों को यूँ बिताएं,
आओ मिल इक प्रीत का दीपक जलाएं।।3।।
लड़ रहें जो जंग रहकर घर से बाहर,
दांव पर जीवन को अपने यूँ लगाकर,
मिलकर उनका हौसला कुछ यूँ बढ़ाऐं,
इक दिया उनको समर्पित कर जलाऐं।।4।।

अब तो पूरी दुनियाँ का रूप ही बदल गया था। रोज टीवी पर मौत के आँकड़े देखते और सिहर उठते थे की ये सब क्या हो गया अचानक। इस तरह से नए वर्ष के शुरुआती महीने बहुत ही दुख और कठिनाई में बीते। मौत थी कि रुकने का नाम नही ले रही थी। लाशों को दफनाने के लिये जमीं कम पड़ रही थी। लेकिन मुझे अंदाजा भी नही था कि जून का महीना मेरे लिए भाग्यशाली साबित होगा।

मेरी सबसे छोटी ननद (जो कि मेरी एक अच्छी मित्र भी हैं और छोटी बहन भी) को साहित्य में योगदान के लिए कई सर्टिफिकेट मिल रहे थे, नयी नयी उपलब्धियां देखकर बहुत अच्छा लगता था किंतु मन में कई बार लगता काश मुझे भी लिखने मौका मिलता तो मैं भी कोशिश जरूर करती। फिर मैंने इस बारे में उनसे जानकारी ली क्योंकि मुझे भी लिखने का शौक था। तब उन्होंने मुझे इस महान अंतरा शब्दशक्ति समूह से जोड़ा और फिर ये सिलसिला चल पड़ा। मेरी लेखनी को और मेरे विचारों को जैसे पर मिल गए हों। ये पल बहुत अनमोल थे मेरे लिए। इस समूह से जुड़ने के बाद मुझे अंदर से जो एक आत्मसंतुष्टि मिली है वो मैं शब्दो में बया नही कर सकती। आज भी मैं दो लोगो को नहीं भूली हूँ और न ही कभी भूलूँगी, पहली वो जिन्होंने मुझे इस ग्रुप से जुड़वाया यानी मेरी दीदी नवनीता दुबे नूपुर एवं दूसरी वो जिन्होंने मुझे इस समूह में स्थान दिया यानी हमारी प्रीति सुराना दीदी। प्रीति दीदी जैसी सहृदय, कर्मठ, सबको साथ में लेकर चलने वाली, अपने कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित एवं लगनशील महिला मैने अभी तक अपनी जिंदगी

में नहीं देखी है। ईश्वर उनपर अपना आशीर्वाद सदा बनाये रखे और उन्हें लम्बी उम्र अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करें।

समय बीता जुलाई माह आ गया। लॉकडाउन भी अब तक समाप्त हो चुका था लेकिन खतरा अभी भी कम नही हुआ था। नियमो का पालन बहुत आवश्यक था। यदि आप कहीं बाहर जा रहे है तो मुँह पर मास्क जरूर लगाएं। घर आकर बिना हाथ सेनेटाइज किये किसी भी वस्तु और व्यक्ति को न छुए। हाथों को हर आधे घंटे में साबुन से अच्छे से धोएं। ऐसे कुछ नियम बीमारी से बचाव के लिए बनाये गए थे जिनका पालन हमलोग अभी भी कर रहें हैं।

धीरे धीरे समय और आगे बढ़ा, अब लोगो में डर कुछ कम हो गया था किंतु खतरा अब भी उतना ही था। धीरे धीरे सभी लोगों ने अपना अपना व्यवसाय शुरू कर दिया। आखिर पेट तो पालना ही था और परिवार भी चलाना था। लेकिन बच्चोँ के स्कूल खोलने पर सरकार अब तैयार नही थी क्योंकि स्कूल खोलना मतलब सोशल डिस्टनसिंग का खत्म होना यानी सीधा सीधा बीमारी को आमंत्रण देना। इस कारण अब बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने के लिए ऑनलाइन क्लासेस शुरू कर दी गई। ऑनलाइन क्लासेस का ये मेरा पहला अनुभव था जो कि बहुत ही अच्छा और सक्सेसफुल रहा।

मेरे लिए ये पल बहुत ही खुशी भरे और खास थे, जिनमे मैंने कुछ नया सीखा था। बच्चों की पढ़ाई घर बैठे सुचारू रूप से चल रही थी, यहाँ तक तो ठीक था किंतु समस्या तब आई जब हम प्राइवेट स्कूल के टीचर्स की पेमेंट रूक गई। सरकारी स्कूल के शिक्षक तो तनख्वाह के मामले में सुरक्षित थे, पर प्राइवेट स्कूलों में, (मुख्यतः महाराष्ट्र में) न तो बच्चों की फीस आ रही थी और न ही हमे तनख्वाह मिल पा रही थी।ये समय भी बहुत कठिन था क्योंकि हम अपने बचत के पैसो से घर का खर्चा चला रहे थे।

जुलाई में मेरे बच्चों के जो पेपर रुकें हुए थे उनका फिर से एग्ज़ाम हुआ,फिर रिजल्ट भी आया। मेरे बेटे और बेटी दोनो का रिजल्ट अच्छा आया। लेकिन जनरल कैटेगरी होने के कारण, उसके जितने मार्क्स आये थे उस आधार पर मेरी बेटी का "नीट" में सेलेक्शन होना कठिन लग रहा था।

देखते देखते अगस्त के महीना आ गया। अगस्त आते ही याद आता है रक्षा बंधन का एक महत्वपूर्ण और भाई बहन के प्यार से भरा प्यारा त्यौहार। इस बार तो जो राखी घर में पिछले साल की खरीदी हुई रखी थी उन्हें ही पोस्ट कर दिया। यहाँ तक कि भगवान को भी पुरानी राखी ही बांधी। घर मे ही मिठाई बनाई और रक्षाबंधन मनाया।

सितम्बर माह शुरू हो चुका था। बहुत से पालको की फीस आना शुरू हो चुकी थी। सितम्बर के अंत तक मेरे बेटे का दाखिला छत्तीसगढ़ के एक अच्छे कॉलेज में हो गया और बेटी के एग्ज़ाम की कॉउंन्सलिंग नवम्बर में होनी थी तो साल खाली न जाये तो उसका भी जबलपुर के एक अच्छे कॉलेज में ग्रेजुएशन के लिए दाखिला दिलवा दिया। सितम्बर का महीना दो कारणों से मेरे लिए खुशी भरा रहा,पहला तो ये की मेरे बच्चों को अच्छे कॉलेजेस में दाखिला मिल गया था और दूसरा ये की हमे इस महीने आधी तन्ख्वाह मिली। इसी माह से मेरी बेटी की ऑनलाइन क्लासेस शुरू हो चुकी थीं। अब तक तो लॉक डाउन समाप्त हो चुका था पर हाँ खतरा तो अब भी था इसलिये नियमों का पालन करते रहना जरूरी था।

अक्टूबर माह के शुरु होते ही मेरे बेटे की भी ऑनलाइन क्लासेस शुरू हो गईं थीं।दशहरा भी आया और चला गया। अब तक तो सभी त्यौहार, जन्मदिन और शादी की वर्षगाँठ सबकुछ घर में ही मनाया, घर मे ही मिठाई और केक बनाकर। अब बारी थी दिवाली उत्सव की, नवम्बर आते ही तैयारियां शुरू हो जाती हैं दीपावली त्यौहार की। हमलोग दीवाली हमेशा मंडला में ही मनाते हैं इसलिये इस बार भी वहीं गए। कई महीनों बाद घर से निकलना हुआ था। सभी बहुत खुश थे। मेरी भतीजी का मुंडन भी जबलपुर में था 21

नवम्बर को, तो मुझे भी बहुत खुशी हो रही थी कि उससे मिल तो पाउँगी। तो इस तरह से नवम्बर में सभी रिश्तेदारों से जी भर के मुलाकात हो गई वरना फोन पर ही बातचीत होती रहती थी। मैं अपनी भतीजी, भाई, भाभी, मम्मी और छोटी बहन से मिलकर बहुत खुश थी और मेरे बच्चे भी नानी और सबसे मिलकर बहुत खुश थे। हम जबलपुर में एक ही दिन रुके क्योकि छुटियाँ ज्यादा नही थी,पर फिर भी सबसे मुलाकात हो गई थी, मेरे लिए ये बड़ी खुशी की बात थी।

यूँ कह ले नवम्बर माह मेरे लिए खुशियों से भरे मीठे पल लेकर आया था। धीरे धीरे कब चुपके से ठंड हमारे घरों में घुसने लगी पता ही नही चला। अब दिसम्बर शुरू हो चुका था। मेरी बेटी की बी.ए.एम. एस. की कॉउंसलिंग शुरू हो गई थी, यदि एक अच्छा सा गवर्नमेंट कॉलेज मिल गया तो बहुत अच्छा रहेगा ऐसा हमलोग सोच रहे थे। इस तरह से मैं कह सकती हूँ कि यह वर्ष मेरी जिंदगी में यदि दुःख के पल लाया तो वहीं दूसरी ओर खुशियों भरे पल भी लाया।

2020 का यह वर्ष मेरे लिए मिलाजुला रहा और शायद सबके लिए ही ऐसा रहा होगा क्योंकि इस साल कोरोना महामारी के चलते सभी ने मुश्किलों का सामना किया होगा किसी न किसी रूप में। अब तक तो आधा दिसम्बर बीत चुका है,कुछ ही दिनों बाद फिर एक नए साल का आगाज़ होगा नयी आशाएं और उत्साह के साथ.....

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आने वाला नया वर्ष 2021 सबके जीवन में नयी मनचाही खुशियाँ लेकर आये।।

अनुजा दुबे

अनुभवों और उपलब्धियों भरा वर्ष 2020

हाथ जोड़कर शीश झुका कर,
प्रभु नमन मैं करती हूँ।
तेरी दी हुई साँस और कर से,
संस्मरण मैं लिखती हूँ।

गतिमान जीवन की चलती हुई साँसे अपने साथ विगत पलों का लेखा-जोखा रखती हुई आगे बढ़ रही हैं साथ ही एहसास की छुअन दोहराती हुई कभी तो ऑखों की कोर को नम करती हैं तो कभी हौले से होठों पर मुस्कान ला देती हैं।

यूँ ही जिंदगी के कई साल गुजर गए लेकिन.... 2020 ने तो अपनी अलग ही छाप सारे विश्व में छोड़ी है फिर भला मैं कैसे अछूती रहती,आखिर में भी तो इस धरा पर मानव तन लिए हुए घर परिवार और समाज की एक हिस्सा हूँ।

इसीलिए जैसे ही कोरोना महामारी की भारत में प्रवेश की सूचना मिली तो सारे देश संग मैं भी चिंता में पड़ गई कि आखिर आगे अब होगा क्या?

सदियों से सुन रखा था कि जब भी धरती पर प्रकृति विरुद्ध कार्यों की अति हुई है तो.. नियति फिर कुछ दिन के लिए सारे अधिकार स्व हाथों में ले लेती है। और.... तब मानव सदैव ही प्रकृति समक्ष नतमस्तक दिखाई पड़ा है।

वर्तमान समय में भी वैश्वीकरण के इस दौर में हम सभी ने ये अनुभव किया, कोरोना महामारी के कारण आज सारा विश्व एक ही संकट का सामना करते हुए जैसे.... नियति के द्वारा ही अपरोक्ष रूप से गृहों में कैद कर दिया गया है। मानो प्रकृति स्व वजूद संग अपनी निर्मलता को स्वयं अपने हाथों से ही बचा रही है।

क्योंकि... वह सदा से हमारी सहचरी है जीवन दायिनी है तो मानो वह हमारे कल के जीवन को पोषित कर रही है।

उस समय सारे लोग घरों में कैद, देवालय बंद सड़कें बंद गलियाँ सूनी लेकिन हर दिल की धड़कन बढ़ी हुई। लॉकडाउन के लगते ही जो जहाँ

था वहीं रह गया जिसके अपने पास थे वह संभले पर जिनके अपने दूर थे वह चिंता में पड़ गए।

परंतु इस विषम परिस्थिति में हमारे देश के प्रतिनिधि ने सारी जनता का मनोबल बढ़ाने के लिए शंखनाद की घोषणा की, और तब उस शाम सारे भारत में ताली- थाली और शंख ध्वनि से गूँजता हुआ वह दृश्य एक-दूजे का संबल बना।

संध्या काल की उस उस बेला में,
कितना सुंदर दृश्य दिखा।
ताली थाली शंख बजे जब!
सारा भारत गूँज उठा।
ध्यान रखा सब ने सभी का,
खुद ही दूर हुए सबसे!
मन से सबका साथ निभाया,
कोरोना भागे भारत से।
मूलभूत जो सेवा दे रहे थे!
सब ने उन्हें प्रणाम किया।
ताली-थाली शंख बजाकर,
सब ने उनको नमन किया।

इस प्रकार का अनुभव ना पहले सुना था ना देखा था सारा भारत घरों में कैद हो गया था केवल जीवन की अति आवश्यक सेवा देने वाले अपनी जान हथेली पर रखकर मूलभूत सेवाएं दे रहे थे और सच्चे अर्थों में अपना मानव धर्म निभा रहे थे।

इस वातावरण में लोग अवसाद में ना पहुँचे, इसलिए टी.वी. पर अच्छे-अच्छे धार्मिक धारावाहिकों का प्रसारण प्रारंभ हुआ, जिससे सभी को मानसिक सहारा मिला। साथ लोग घरों में थे इसलिए सब ने एक दूजे की साँसो की कीमत, आपसी स्नेह-प्यार ममत्व एवं अपनत्व को समझा। जिससे परिवारों में स्नेह-प्यार का माहौल बढ़ा।

जिंदगी में मूलभूत आवश्यकताओं की क्या कीमत होती है, एक -एक रुपया कितना महत्व रखता है इसका एहसास सभी ने किया।"साथ ही संयम क्या होता है इसका पूर्ण एहसास हुआ जिसे मैंने भी स्वयं के साथ निभाते हुए सबको समझाया।

खुद से खुद पर करो नियंत्रण!
दूर विपत्ति होगी तब।
घर आंगन फिर खुशियाँ होंगी,
महामारी दूर भागेगी जब!

सभी अपनों से जब भी फोन पर बात हुई, सब का मनोबल बढ़ाते हुए धैर्य की महत्ता को समझाया। इंसा-इंसा के प्रति फर्ज निभाओ, सब अपनी जान बचाओ। इसी बात को बार-बार दोहराया। ईश्वर पर विश्वास बढ़ा लो सब घर को ही सुंदर मंदिर बना लो, और यह पंक्तियां भी लिख कर भेजीं...

यूँ तो आपाधापी में,
चलता था जीवन का मेला।
पर आज कोरोना के कारण,
सजा लो घर में ही मेला।
अपनों को तुम समय खूब दो,
कर दो दूर शिकायत अब।
कोरोना तो भागेगा ही,
घर से प्रार्थना कर लो सब!

इस प्रकार इस महामारी ने लोगों की दूरियाँ तो बढ़ा दी लेकिन सबको दिलों से जोड़ दिया, सबके सिर पर एक ही संकट था, सबके मन में एक ही भाव उठते थे कि कैसे सब कुछ ठीक होगा... कब? सभी अपनों से मिलना होगा। सबने दूर रहते हुए भी एक दूसरे की सलामती के लिए दुआएं और प्रार्थना कीं। क्योंकि यही सच है कि.....

भेद मिटता है अपने पराए का,
जब संकट गहराता है।
मानव से मानव का रिश्ता,
दूरियाँ नज़दीकियाँ बनाता है

उस दौर में सबने दूर रहते हुए भी सभी अपनों का ख्याल रखा सबकी खोज खबर रखी, सबको मानसिक बल दिया। इसीलिए तो कहा गया

है कि.. अपनत्व के दो मीठे बोल डूबते के लिए तिनके का सहारा सा बन जाते हैं।

मानव मन वैसे भी जल्दी विचलित होने लगता है और यदि संकट का दौर हो तो.. तब तो वह आशंकाओं से घिरने लगता है ऐसे में अपनों द्वारा दिया गया संबल, अपनों का प्यार ही रंग लाता है। जो सबने वर्तमान परिस्थिति में महसूस किया।

प्रत्येक व्यक्ति ने अपने आपको, अपने परिवार को मानसिक दृढ़ता देकर सकारात्मक ऊर्जा संग सुरक्षित रखने की कोशिश की।

साथ ही परिवार की महत्ता संग समय नियोजन, कलाओं का विकास, आर्थिक प्रबंधन, स्वदेश प्रेम आदि को अपने भीतर दृढ़ता से समाहित किया। देश की बागडोर के प्रमुख स्तंभ आद. मोदी जी के वक्तव्यों को मानते हुए ताली-थाली से लेकरदीप प्रकाश तक भारतीय एकता का परिचय भी दिया।

मेरा परिवार भी इस दौर में एक व्यवस्थित जीवन शैलीमें ही रहा। जो हम सबके लिए मानसिक मजबूती की राह रहा। सबने सबका स्वभावगत हमेशा की तरह पूर्ण ख्याल रखा। अपने-अपने कार्यों को करते हुए साहित्य और आध्यात्म का भी सहारा लेकर समय को एक चुनौती मान ईश्वर पर पूर्ण विश्वास आस्था रख अपने कार्यों को एवं दूसरों की मदद को एक पूजा माना। यद्यपि मेरा बड़ा बेटा सर्विस में होने के कारण अपने परिवार के साथ हम से दूर ही था ईश्वर की कृपा से अभी दिवाली हम ने मिलकर मनाई।

मैं हर समय सभी अपनों से जुड़ी रही और परिस्थितियाँ सामान्य होंगी इस विश्वास के साथ परिवार को संभालती रही। सारे तीज त्यौहार घर पर पूर्ण आस्था श्रद्धा विश्वास के साथ परिवार सहित मनाते चले गए और ईश्वर के प्रति पल - पल विश्वास को बढ़ाते चले गए।

राखी जैसे पावन त्यौहार पर राखियाँ इसलिए नहीं भेजी गई कि सब सुरक्षित रहें किसी पर कोई मुसीबत ना आए। धीरे-धीरे परिस्थिति के बदलाव के संग जीवन प्रारंभ हुआ, कुछ परिचित लोग इस वर्ष विदा ले लिए, जिससे बीच-बीच में मन विचलित हुआ। लेकिन सूर्यास्त की लाली के बाद प्रातः सूर्योदय की लालिमा अवश्य दिखेगी इसी विश्वास के साथ इसी हिम्मत के साथ घर परिवार और स्वयं को संभाला।

साथ ही अपने अंदर के कवि संग लेखक रूप को भी पूर्ण रूप से बाहर आने दिया, और हर दिन गद्य- पद्य की अनेक विधाओं में सृजन किया।

इस समय देश की विभिन्न संस्थाओं ने लेखन गतिविधियों को बढ़ा दिया था जिससे लोग अवसाद से बचते हुए अधिकतम सृजनात्मक कार्य करें।

चूँकि मैं भी अंतरा शब्दशक्ति के साथ-साथ अनेक संस्थाओं से जुड़ी हुई हूँ तो मैंने भी प्रत्येक दिन गद्य पद्य की अनेक विधाओं पर लेखन कार्य किया और सकारात्मक रचनाएं प्रेषित की। और लोगों को विश्वास दिलाया कि....

सब दिन रहत न एक समान,
कभी धूप तो कभी शीतल छाँव
सूर्यास्त के बाद ही होता,
सूर्योदय का नव प्रकाश

वर्ष 2020 मेरी साहित्यिक छवि को बढ़ाने वाला उपलब्धियों भरा वर्ष रहा मैं मुख्य रूप से अंतरा शब्द शक्ति परिवार की सदस्या हूँ उससे मुझे ढेरों उपलब्धियाँ मिलीं साथ ही अन्य संस्थाओं से बहुत सारे डिजिटल सम्मान पत्र प्राप्त हुए एकल काव्य संग्रह एवं साझा संकलन प्रकाशित हुए।

मेरी उपलब्धियाँ:- अंतरा शब्दशक्ति द्वारा- (1) आपातकाल में सृजन फुलवारी (काव्य संग्रह) प्रकाशन सहित कलम के सिपाही का सम्मान प्राप्त हुआ, (2) मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने

का नई (साझा संकलन), (3) नारी तुम केवल श्रद्धा हो (साझा संकलन), (4) माँ (साझा संकलन), (5) स्त्री तुम सशक्त हो (साझा संकलन), (6) भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, (7) वेब अंकों में रचनाएं प्रकाशित, (8) अंतरा के माध्यम से यूट्यूब पर वीडियो प्रस्तुति में तृतीय स्थान की प्राप्ति। (9) जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि जिससे 2020 याद रहेगा अंतरा की फेसबुक लाइव प्रस्तुति प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ जिसे 5000 से अधिक लोगों ने देखा। (10) मेरा छठवां काव्य संग्रह अहसास के धागे जिसे मैंने अपने पूज्य पिताजी को समर्पित किया है शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। (12) देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में एक बाल्को (वेदांता) द्वारा हिंदी दिवस पर वीडियो प्रस्तुति में प्रशंसा सहित ट्रॉफी मिली, फेसबुक पेज सप्ताहिक प्रतियोगिताओं में जबलपुर मध्य प्रदेश द्वारा लगातार सम्मान मिल रहे। (13) साहित्य श्री सम्मान, (14) कलम योद्धा सम्मान, (15) महाकौशल काव्यश्री सम्मान, (16) मध्य प्रदेश गौरव सम्मान, (17) ज्योतिर्मय सम्मान, साहित्यिक मित्र मंडल जबलपुर मध्य प्रदेश की रविवारीय प्रतियोगिताओं में, (18) श्रेष्ठ सृजन सम्मान, (19) उत्कृष्ट सृजन सम्मान, (20) सर्व श्रेष्ठ सृजन सम्मान, निरंतर ऑनलाइन मिल रहे हैं। (21) ज़ूम प्रस्तुति पर प्रशस्ति पत्र, (22) साप्ताहिक विधाओं के लेखन में कार्य करने से अनेक बार प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त हुए। मीन साहित्य संस्कृति मंच द्वारा, (23) फूलवती सम्मान (हरियाणा), (24) पर्यावरण रचना में प्रशस्ति पत्र (जयपुर), (25) पर्यावरणीय रचना पर सम्मान (असम), (26) मातृभाषा संस्थान की आयोजित प्रतियोगिताओं में करीब 55 डिजिटल प्रमाण पत्र मिले, संस्मय प्रकाशन से प्रकाशित, (27) स्त्रीत्व (साझा संकलन), (28) कोरोना काल एवं साहित्य ग्राम(साझा संकलन), (29) हमारे अखिल भारतीय गहोई रश्मि कला साहित्य मणि जबलपुर से शिक्षक सम्मान उत्तम रंगोली सम्मान, काव्य सृजन सम्मान प्राप्त हुए। (30) दुर्ग गहोई समाज द्वारा कृष्ण झांकी फोटो प्रतियोगिता एवं सावन गीत ऑडियो प्रस्तुति आदि पर डिजिटल सम्मान प्राप्त हुए,

इस प्रकार 2020 खट्टे मीठे अनुभव संग उपलब्धियों भरा वर्ष रहा। लेकिन.... अभी भी हम सबको सबका ध्यान रखना होगा और स्वास्थ्य संग सुरक्षा के नियमों का पालन करना होगा, ताकि सबके घर-आंगन खुशियाँ आती रहें।
अंत में बस यही कहना चाहूँगी कि....

तेज अंधड़ में भी,
पेड़ पर बैठे परिंदे को,
होता है विश्वास अपने पंखों पर।
यूँ ही तू! भी मानव चला चल,
अपनी जीवन डगर पर।।

सीता गुप्ता
दुर्ग, छत्तीसगढ़

2020 कुछ खट्टी कुछ मीठी यादों के साथ...

नए साल का आना किसे अच्छा नहीं लगता हम नए वर्ष का कई तरह से उसका स्वागत करते हैं लेकिन 2020 कुछ ऐसा रहा मैं उसके बारे में कुछ विवरण करना चाहती हूं कुछ अच्छी बातें कुछ खट्टी याद है यह साल आया भी एक खौफ मन में आगया था। जब हम ने सुना कि एक महामारी फैलाने वाली बीमारी आ चुकी है उस समय यह एक चर्चा का विषय सा बन गया था। जैसे ही यह बीमारी धीरे धीरे फैल रही थी लोगों का डर भी बढ़ता जा रहा था हमने कभी यह जरूर सुना था

कि कोई ऐसी महामारी बीमारी फैलती है लेकिन आज हमने अपनी आंखों के सामने इस भयानक बीमारी को देख लिया जब हमारे देश में लॉकडाउन लगा था जो जहां था वह वही का रह गया लोगों को इस लॉक डाउन में अपने परिवार के साथ लंबा समय बिताने के लिए मिला। इसे मनोरंजन बनाने के लिए हर परिवार ने अपने लिए कुछ ना कुछ विशेष जरूर किया। कई महीने घर में रहने से लोगों के जीवन में व्यापक बदलाव आया है दिनचर्या की भागदौड़ के साथ कई तरह के तनाव से लोग दूर रहे हालांकि इसी बीच कुछ लोगों को घर में रहने से भी अत्यधिक तनाव भी हुआ लॉकडाउन में क्या कुछ लोगों के जीवन में आए बदलाव भी हुए। परिवार के साथ यह समय कैसे गुजर गया पता ही नहीं चला मैंने अपने पूरे जीवन में अपने परिवार के साथ इतनी सुकून के साथ वक्त नहीं गुजारा था परिवार के साथ यह समय निकलता चला गया और मेरे परिवार ने सख्ती से लॉक डाउन का पालन किया। लव डॉन के बाद से संक्रमण तेजी से ना पहले इसकी जिम्मेदारी हमारी है। हालांकि अब लोगों में एक बदलाव तो जरूर आएगा लोग अपने और समाज के बचाव के लिए शारीरिक दूरी का पालन करेंगे इसके साथ ही साफ सफाई पर भी विशेष ध्यान देने लगे हैं मुझे अपने परिवार के साथ वक्त गुजारने का पूरा समय मिला हम लोग घर पर कई तरह के इंडोर गेम खेलें यह वक्त भयावह तो है मगर इससे जुड़ी कुछ मीठी यादें सालों तक मेरे मन में बनी रहेगी एक बात को सब ने अच्छे से समझा वो ये था। की करो ना से डरना नहीं है केवल सुरक्षा के साथ युद्ध करना है बस ऐसी ही कुछ यादें रह जाएंगी 2020 की। जो हम कभी भूल नहीं पाएंगे वह पल वह साथ कुछ मीठी खट्टी यादें।

किरण बिचपुरिया
रायपुर छत्तीसगढ़

माँ का संघर्ष

माँ जीवन का सबसे बड़ा आधार होती है मनुष्य कि जिंदगी में सबसे खास माँ होती है माँ ईश्वर का दिया हुआ सबसे अनमोल तोहफा है माँ सीमित है, मां अविरल है, मां आराध्य है, निश्चल प्रेम है, मां ईश्वर है, मां दुआ है, गुरु है, मां परमेश्वर है, मां जीवन का आधार है घर में इंसान अपने सभी परिवार वालों से जुड़ा हुआ होता है हमेशा सबसे खास मां होती है। पांच बहनों में मैं घर की सबसे छोटी बेटी हूं ज्यादा खुशी तो नहीं हुई थी जब मैं पैदा हुई थी पर पिताजी जी ने कभी भी बेटियों में फर्क नहीं समझा भाई सबसे छोटा है वह सबका लाडला है स्नेह से परिपूर्ण हैं चार बड़ी बहनों की शादी हो गई सब लोग बहुत खुश थ जिंदगी चल रही अपने हिसाब से बात उस समय की है जब मैं कक्षा 10 पास करके आगे की पढ़ाई के लिए कोशिश कर रही थी लेकिन ग्रामीण परिवेश होने के कारण बाहर पढ़ने जाने की अनुमति नहीं थी फिर मेरी मां जिन्होंने हमेशा मेरी शिक्षा को लेकर आगे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है पर ईश्वर को शायद कुछ और ही मंजूर था हल्की हल्की सर्दियां थी फरवरी का महीना था अचानक शाम को 5:00 बजे मां की तबीयत खराब हो गई पूरा शरीर सुन्न हो गया यानी पूरे शरीर में लकवा मार गया किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था सब घर वाले बहुत परेशान थे नज़दीक गांव के कंपाउंडर को बुलाया गया तो उन्होंने तुरंत शहर किसी बड़े अस्पताल में ले जाने के लिए बोल दिया पिताजी ने जल्दी से गाड़ी बुलाकर मां को शहर लेकर आ गए वहा माँ को आपातकालीन ICU ले जाया गया माँ की हालत नाजुक थी 3 दिन पश्चात मां को होश आया इनकी हालत में ज्यादा सुधार नहीं था अस्पताल

में ही रखा गया 20 दिनों के पश्चात उनको हॉस्पिटल से छुट्टी मिली पर वह चलने फिरने मे असमर्थ ही थी सभी घर वाले बहुत परेशान थे जहाँ ले जाने का बोलते वही लेके भी जाते थे सभी जगह लेकर गए सब जगह दिखाया पर कोई फायदा नहीं था अभी बड़ी बहने मां के पास ही आई हुई थी मैं और मेरा भाई बहुत छोटे थे भाई को पढ़ने लिखने के लिए शहरी जाना पड़ता था मां की बीमारी के बाद जिंदगी जैसे थम सी गई थी लेकिन बड़ी बहनों ने मुझे मेरी मां के जैसा प्यार दिया सभी लोगों की सेवा व देखभाल से मां की तबीयत में थोड़ा बहुत सुधार होने लगा तीन-चार सालों में वह थोड़ा-थोड़ा सहारे से चलने लगी बचपन में मां को मशीन की जैसी काम करते हुए देखा था जो इंसान हमेशा कोई ना कोई काम करने वाला होता है वह एकदम लाचार हो जाता है दूसरों पर आश्रित हो जाने के बाद व्यक्ति का खुद पर काबू नहीं रहता मां का सपना था कि मैं पढ़ाई-लिखाई करके कुछ बन जाऊं

पढ़ाई अनवरत जारी थी आज शिक्षा के क्षेत्र में ज्यादा तो नहीं तीन विषयों मे स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की है दिन निकल रहे थे सब कुछ अच्छा चल रहा था समय पंख लगा कर उड़ रहा था तभी इस वर्ष कोराना ने दस्तक दी पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया नहीं चाहते हुऐ भी लोगों की आम जिंदगीया मुश्किल हो गई चारों और जनजीवन प्रभावित हो गया मां का जो हर महीने का चेकअप होता है कोराना के चलते है वह भी नहीं करवा पा रहे थे बीमार व्यक्ति को बाहर लेकर जाना भी खतरे से खाली नहीं है थोड़ा बहुत समय बीता फिर जून के अंत में मां को हॉस्पिटल लेकर गए सभी प्रकार की शारीरिक जांचे की गई कुछ रिपोर्ट अच्छी थी कुछ में प्रॉब्लम थी डॉक्टर मां के साथ बहुत ही सादगी और प्रेम से बात किया करते थे सभी जाँच के बाद डॉक्टर ने अगले दिन आने का बोला अगले दिन सवेरे ही मैं अस्पताल पहुंच चुकी थी मां की रिपोर्ट आ चुकी थी रिपोर्ट लेकर डॉक्टर के पास गई डॉक्टर ने किसी दूसरे डॉक्टर के पास भेज दिया तुरंत ही दूसरे से डॉक्टर से संपर्क किया डॉक्टर ने रिपोर्ट देखी तो बड़े भारी मन से जवाब दिया की माता जी को (ca. Base of tounge) जीभ का कैंसर बता दिया यह सब सुनते हैं दिमाग सुन्न हो गया आंखों से आंसू निकल पड़े है भगवान जो पहले से ही इतनी परेशान और बीमार है उनके साथ ही ये सब होना था डॉक्टर ने दिलासा देते हुए हिम्मत से काम लो डॉ मम्मा को जानता था पिछले बारह तेरह सालों से कि जो होगा भगवान पर भरोसा रखो यह सब सुनकर भगवान पर से विश्वास डगमगाने लगा हे भगवान कौन से जन्म की परीक्षा ले रहे हो बाहर आकर पापा को फोन करके हॉस्पिटल से निकले का बोल मैं घर आ रही हूं घर पहुंच कर मां को देखा तो सोचा काश मां ठीक होती अपने मन को शांत करके पापा के पास जाकर अपनी रुके हुए शब्दों को डॉक्टर की कही बातों को पापा को बताया यह सब सुनते ही पापा निशब्द हो गए पापा की आंखों में पानी आ गया डा. ने कैंसर हॉस्पिटल ले जाने का बोल दिया इतनी सारी बीमारी और कोराना काल इन सबके बीच दूसरे शहर कैंसर का इलाज करवाने के लिए जाना ही होगा मां को देख कर बड़ा ही प्यारा आ रहा था मां बड़े प्यारे सिर पर हाथ फेर रही थी मां को बचपन से देखा था मां दिनभर भगवान की पूजा करना भक्ति करना व्रत उपवास करना मां के मुंह से कभी किसी के प्रति बुरा नहीं सुना था पीठ पीछे कभी किसी के लिए कुछ नहीं बोलती जो कहना मुंह पर बोल दिया बीमार होने के बावजूद भी चिंता जताते रहना पर क्या कर सकते हैं जिंदगी ठहर सी गई फिर भाई को बताया उसने सुना मां की इस नई बीमारी के बारे में तो परेशान हो उठा है फिर मम्मा को दूसरे शहर कैंसर का इलाज करवाने के लिए कैंसर अस्पताल ले जाया गया अनजान शहर परेशानियों के साथ अस्पताल पहुंचे वहां पर भी कोराना जांच की बाद अस्पताल में भर्ती किया गया तभी अचानक मां के पुराने डॉक्टर वहां नजर आए उन्होंने मां को देखा और पहचान लिया उन्होंने चिंता जताते हुए किसी भी प्रकार की मदद की

जरूरत हो तो बताने को कहा अपने नंबर देते हुए मम्मा को एक पैनल के तहत अस्पताल में भर्ती कर दिया किसी को अंदर आने की अनुमति नहीं परिवार का एक सदस्य ही रुक सकता है कैंसर जैसी बीमारी का नाम सुन के मन कांप उठता है इसका इलाज इतना दर्दनाक वह भयानक होता है इंसान की हालत वैसी खराब हो जाती है फिर दूसरे दिन जाँचो का सिलसिला शुरू हुआ एक के बाद एक जांच की गई लेकिन डॉक्टर को कुछ समझ नहीं आ रहा फिर डॉक्टर ने बायोप्सी की जांच की उसमें भी कुछ नहीं आया दुबारा जांच की गई फिर भी नहीं समझ आया फिर कोई दूसरे प्रकार की जांच की गई डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहां बेटा चिंता की कोई बात नहीं है आपकी मां को कैंसर नहीं भी हो सकता है डा. से बात करके बाहर आकर पापा को फोन किया और सारी बातें बताई फिर किसी दूसरे डा.ने दूसरी जांचे करवाने की सलाह दी तो मां को लेकर और दूसरी जांच करवाने की तैयारी की और जांच करवाई और मम्मा को लेकर घर आ गए डॉक्टर ने 5 दिन की दवाई दी दवाइयां लेने के पश्चात 5 दिन बाद फिर से अस्पताल लेकर गए जहां डॉक्टर ने माँ को भर्ती कर लिया और मां का का इलाज सुचारू रूप से चालू कर दिया गया है एक-दो दिन में रिपोर्ट भी आने वाली थी कैंसर से समबन्धित सभी तरह की जाँच करवाई अत: रिपोर्ट आ गई जिसमें कैंसर का खतरा नहीं था TB की बीमारी आई हैं शायद जिंदगी के मुश्किल वक्त में भगवान ने प्रार्थना सुन ली थी और मां के टी बी का ईलाज शुरू किया गया भगवान को धन्यवाद देते हुए कि मां के ठीक होने की कामना के साथ आज उनका इलाज चल रहा है वह थोड़ा ठीक है हम सबके बीच हैं यही जिंदगी की सबसे बड़ी खुशी है मां नहीं होती हैं तो घर-घर नहीं रहता मैं अपनी मां से बहुत प्यार करती हूं और मेरी मां तो मुझसे भी कहीं ज्यादा प्यार करती हैं आपसे सब से भी है यही कहना है जब तक आपके पास माँ-पापा जैसी अनमोल धरोहर है आप अपने माता पिता को सम्मान दें क्योंकि यह अनमोल तोहफा आपकी जिंदगी में हमेशा नहीं रहता बेटियों के लिए मां-बाप क्या होते हैं यह सिर्फ बेटियां ही समझ सकती है मेरी सभी बड़ी बहनों ने मुझे मां के जैसे ही प्यार करती हैं पर माँ जो होती है ना सबसे अलग होती है पूरे घर की बागडोर होती है मां भगवान आपको हमेशा खुश रखे माँ आप की सभी बीमारियां ,पीड़ाये और तकलीफें दूर कर दे, हे भगवान किसी को कुछ देना या नहीं देना लेकिन मां-बाप हमेशा देना भगवान का बहुत-बहुत धन्यवाद जो मुझे इतना प्यार करने वाले माता-पिता मिले भगवान आप दोनों को लंबी उम्र दे आप दोनों हमेशा साथ रहे हम सभी बच्चों पर आपका आशीर्वाद बना रहे जीवन में कभी कोई गलती की हो तो माफ कर दीजिएगा।हम सब बच्चों की तरफ से आपको बहुत बहुत धन्यवाद।दाता और मम्मा आप दोनों को सादर प्रणाम लिखने के लिए बहुत कुछ हैं लेकिन शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है अपने शब्दों को विराम देते हुए आपका आभार प्रकट करती हूँ।आपकी बेटी मीनू।

माँ तो माँ होती है
माँ घर की साज होती हैं
पापा जिंदगी की आस होते है
मां के बिन सब सून
ना कोई खुशी, ना कोई प्यार
माँ पापा है मेरी जान
इन को सारी खुशी देना भगवान

"20/20"

करते विदा हम जाओ खुशी से
वर्ष २०२० अब तुम्हारे जाने का समय आया।
तुम्हारे आने पर हमने,
ज़ोर शोर से नव वर्ष का पर्व मनाया।
सारे संसार ने अपने लिए एक सुंदर स्वप्न सजाया।
तुम अपने साथ किसको लाए,
ये तुमने हमसे छुपाया।
आने के बाद तुमने अपना रंग दिखाया,
करोना ही करोना पूरे विश्व में फैलाया।
हर आदमी के सर पर काल मंडराया,

कई बच्चों को तुमने अनाथ बनाया।
अच्छे भले लोगों को नौकरी से निकलवाया,
चलता हुआ धंधा बंद करवाया।
पूरे विश्व को युद्ध के मोड़ पर ले आया,
शादी, विवाह, मौत, बीमारी में,
अपनों को अपनों से दूर करवाया।
अच्छे भले चेहरे को मास्क से ढकवाया,
फिर भी तू नव वर्ष कहलाया।
पूरा विश्व तुम्हें ना भुला पाएगा,
दिन रात तुम्हारे किस्से,
अपनी आने वाली पीढ़ी को सुनाएगा।
जाते-जाते एक मेहरबानी करते जाना,
जो अपने साथ ले आए थे, उसे अपने साथ लेते जाना।
अरे तुम चले जाना फिर कभी नहीं आना 2020
अब तेरे जाने का समय आया
2020 तूने जो बुरा- बुरा किया
हमारे साथ होगी शांति विश्व में
तेरे जाने के साथ।।

मीनाक्षी राजपुरोहित "मीनू"
बस्सी अजमेर (राजस्थान)

अनोखा वर्ष 2020....

21वीं सदी का 20 वां वर्ष पूरा होने जा रहा है। वैश्विक स्तर पर इस वर्ष को आने वाले दिनों में कोरोना वर्ष या कोरोना काल के रूप में याद किया जाएगा।

हालांकि मैं अपनी बात शुरू से ही शुरू करती हूं। रात के लगभग दो बजे होंगे हमारे मोबाइल की घंटी बजी देखा तो अभिन्न सखी रमा थी। हेलो.. हैप्पी ट्वन्टी ट्वन्टी... रमा की बच्ची तू इतनी रात में मजाक करने के लिए फोन कर रही है, मैं झल्ला कर कह उठी। मजाक नहीं डियर मैं हैप्पी न्यू ईयर कह रही हूं तब मुझे याद पड़ा यह आज 2020 की पहली सुबह है। अच्छा-अच्छा तुझे भी हैप्पी न्यू ईयर, और इस तरह 2020 की मधुर शुरुआत हुई।

शीतलहरी चल रही थी कुंभ के मेले की गहमागहमी चरम पर थी मेरे परिवार ने मकर संक्रांति का पर्व कुंभ स्नान के लिए निश्चित किया। अपार भीड़ के उपरांत भी सब कुछ व्यवस्थित था।

प्रयागराज के निवासी होने के कारण प्राय: कुंभ में एक दो स्नान स्वभाविक हैं कभी सम्मानित कुटुंबियों के कारण, कभी अपनी धार्मिक आस्था के चलते। लेकिन सबसे रोमांचक अनुभव पहली बार हुआ ....हेलीकॉप्टर से पूरे मेले का विहंगम दृश्य देखना हमारे लिए, अविस्मरणीय क्षण था.....

समय का पंछी अपने गति से उड़ रहा था कि इसी बीच चीन से एक नए वायरस के पैदा होने से कुछ मौतों की पुष्टि विश्व मीडिया में हो गई, चीन में मीडिया सरकारी कर्मचारियों की तरह काम करता है। अतः पहले तो इस बात को दबाने की कोशिश की गई परंतु अंततः जनवरी में भारत में एक व्यक्ति की मौत की पुष्टि हो गई, तो हमारे प्रधानमंत्री ने बड़ी शक्ति से अकस्मात पूरे देश में पूर्ण लॉकडाउन की घोषणा कर दी, इससे एक दिन पूर्व जनता कर्फ्यू के नाम से इस विषय में जनता का मन वे टटोल चुके थे।

23 मार्च को मेरे बेटे का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाने का उत्साह था। परंतु इस समारोह को सादे ढंग से मनाया गया।

वैश्विक स्तर पर कोराना का कहर बढ़ता ही जा रहा था, विश्व के सभी देश लॉक डाउन का शक्ति से पालन कर रहे थे।

भारत में अभी भी गरीबी पूरी तरह दूर नहीं हो सकी है, लगभग 50% जनसंख्या शहरों में रोज कमाने खाने वालों की है, हमारे काम करने वाले झाड़ू बर्तन, साफ सफाई और कपड़े धोने का कार्य ही करते हैं। और खाना बनाने का

कार्य मैं और मेरी बहू पूरे चाव से करते हैं। बहरहाल उन सब की यथोचित आर्थिक सहायता करके पूर्णता छुट्टी कर दी गई। और क्योंकि सभी घरों में कैद थे सो सभी सदस्यों ने अपनी अपनी क्षमता के अनुसार अपने कार्य स्वयं निपटाने प्रारंभ कर दिए। जल्दी ही सब कुछ स्वभाविक लगने लगा परंतु संक्रमित लोगों की संख्या में और कोरोना से होने वाली मौतों की खबरों से मन विषाद से भर उठा, टीवी पर पुराने धारावाहिक रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण, शक्तिमान, इत्यादि दोबारा से दिखाए जाने लगे तो कुछ हल्का होने लगा।

इसके साथ ही अपने साहित्यिक रुचि वाले मित्रों के साथ खूब ऑनलाइन काव्य गोष्ठीयां हुईं हिंदी साहित्य की सेवा में मैं कुछ अधिक सक्रिय हो पाई, कूंची कैनवस पर कुछ तस्वीरें उकेरी, वर्षों से अधूरी पड़ी रचनाएं पूरी हो पाई, और तो और प्रकाशन की राह पर एक लघु कहानी संग्रह की कहानी ने, मौजूदा परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन कर सकी, एवं कुछ लघु कथाओं में बढ़ोतरी हुई।

संयोजक ने विषय का चुनाव इतनी विद्वता से किया है कि न डायरी से सहायता मिल पा रही है ना आत्मकथा की शैली बन पा रही है। अब अपनी 2020 की कहानी में कुछ अपने खट्टे अनुभव जुड़े, मेरी जेठानी को कैंसर जैसी घातक बीमारी ने ग्रसित कर लिया। उन्हें दो बार हवाई टैक्सी से दिल्ली पहुंचाना पड़ा।

देश, पूरे समाज और घरेलू हालात कुछ ऐसे बन गए थे कि मन विरक्ति से भर उठा यहां तक कि पति की पदोन्नति का समाचार हमें अखबार में पढ़ने को मिला, मेरी आंखों में आंसू इस बात से आ गए, कि अब तक की सभी क्रमिक या पुरस्कार स्वरूप मिली पदोन्नति की सूचना पति हमें कितने उत्साह से देते थे, खैर उन्हें "बधाई हो" के चार अक्षर और चाय विस्कुट और धन्यवाद से यह प्रमोशन सेलिब्रेट हो गया।

इस बीच दिल्ली, गाजियाबाद और नोएडा से दूसरी ओर महाराष्ट्र गुजरात से उत्तर प्रदेश और बिहार के बिहारी मजदूरों के सब्र का बांध टूट गया। उत्तर प्रदेश और बिहार में आसपास की सीमा से सटे राज्यों से लाखों लोगों ने उत्तर प्रदेश और बिहार में वापस जाने का फैसला कर लिया। और अपने जरूरी सामान की गढरियां बांधे पैदल साइकिल और अपने रिक्शों से हजार किलोमीटर की दूरी तय करने निकल पड़े। लाखों लोगों के बाहर निकल आने से लॉक डाउन की धज्जियां उड़ गई। प्रादेशिक सरकारों ने अपने- अपने स्तर पर निर्णय लिए, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी जी ने सर्वप्रथम यह निर्णय लिया कि नोएडा, गाजियाबाद, दिल्ली, और आसपास के डिपो में जितनी बसें उपलब्ध थी वह सड़क पर उतार दी, दूसरी ओर बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने घोषणा की कि बिहार में कदम नहीं रखने देंगे, अंततः प्रधानमंत्री जी ने मानवता को सर्वोत्तम माना और सड़क पर उतरे प्रत्येक आदमी को उसके घर तक पहुंचाने और खाने-पीने की व्यवस्था प्रत्येक राज्य के मुख्यमंत्री को करनी पड़ी।

सरकार की मशीनरी के पुर्जे भी तो इंसान ही थे। देश ने पहली बार पुलिस और सरकार की नीति के प्रति समर्पित सरकारी कर्मचारी देखे, प्रधानमंत्री के नेतृत्व का कौशल देखा। इन कर्मचारियों की हौसला अफजाई कितनी जरूरी थी यह आज आंकड़ों से समझा जा सकता है।

जब अमेरिका में मरने वालों की संख्या लाख के पार हो रही थी, कब्रिस्तान में आरक्षण नहीं मिल रहा था, ताबूतों की लंबी कतारें लगी हुई थीं, तब तक भारत में मौतों की संख्या एक हजार भी नहीं हुई थी। इन कर्मचारियों और पुलिसकर्मियों के उत्साहवर्धन के लिए मोदी जी ने घर-घर में घंटा-घंटी और थाली कटोरी पिटवाई वह भी छत पर खड़े होकर, क्या इससे अभूतपूर्व कोई अभिनंदन हो सकता था, तो दूसरी ओर अमेरिकी राष्ट्रपति अर्थव्यवस्था की दुहाई दे रहे थे। एक बार तो अमेरिकी राष्ट्रपति का एक मूर्खतापूर्ण बयान आया कि "मैं मास्क नहीं पहनता"

हालांकि परिणाम पूरे विश्व ने देखा कोरोना जैसी आपदा पर भी वैश्विक स्तर के नेता राजनीति ही करते रहे, परंतु मोदी जी ने किसी की नहीं सुनी, वह हमेशा हाथ जोड़कर, विनम्रता पूर्वक जनता से लॉकडाउन के लिए समय मांग लेते, सरकार द्वारा आर्थिक सहायता तो सीधे खाते में जमा कर दी गई परंतु इससे पेट नहीं भरा जा सकता था। मोदी जी ने गांव गांव में 6 महीने का राशन इकट्ठा बंटवा दिया, और इस बात की पूरी व्यवस्था रखी कि खाद्यान्न सब्जी और दूध जैसी बुनियादी आवश्यकता की चीजों की आपूर्ति सुनिश्चित होती रहे। परंतु पलायन की जो पैदल भीड़ निकल पड़ी थी वह सड़कों पर ही नहीं रेलवे लाइनों पर भी रेंग रही थी। "ट्रेनें तो बंद है" यह सोच कर कुछ लोग चलते चलते रात गुजारने के लिए भी रेलवे लाइन पर सो जाते, इधर रेलवे ने कुछ राहत ट्रेनों का संचालन शुरू किया तो मानवीय आपदा में मानवीय त्रासदी का सबसे खौफनाक मंजर देखने को मिला, रेलवे लाइन पर सोए रोजी रोटी के तलब गारों की लाशें और रोटियां एक साथ बिखरीं थीं। रेलवे ने इसे गंभीरता से लिया और उसका हल ढूंढा, तो एक नई समस्या आ खड़ी हुई, रेलों को 24 घंटे का सफर चार दिन में पूरा करना पड़ता था, क्योंकि नियमित ट्रैक ही चालू रखे जा सकते थे।

दिल्ली देश की राजधानी भी है, राज्य सरकार के मुखिया श्री केजरीवाल और मोदी जी दोनों इस मोर्चे पर राजनीति से हटकर सेवा भाव से काम कर रहे थे, देश ने स्वतंत्रता दिवस भी उत्साह पूर्वक बिना किसी धूमधाम के मनाया, परंतु अब जैसे समय की गति बदल रही थी, देश को ग्रीन, रेड, येलो अलग-अलग तीन भागों में चिन्हित किया गया। एवं जहां इतनी सख्ति की आवश्यकता थी उतनी ही सावधानी रखी गई जनता ने चैन की सांस ली, स्थानीय प्रशासन ने अपने-अपने क्षेत्रों को इमानदारी पूर्वक आंकड़ों से साबित किया।

मानवता से महान शायद कुछ हो भी नहीं सकता और वह संसार में हमेशा बनी रहेगी जब तक मानव सभ्यता बनी रहेगी मानवता बनी रहेगी। देश में इंसान तो क्या एक पशु पक्षी ने भी भूख से दम नहीं तोड़ा, जबकि मानवता से भूख नहीं मिटती, नैनी स्टेशन पर एक ऐसी ही घटना देखने को मिली, रेलयात्री जो चार दिनों से भूखे ट्रेन में सफर कर रहे थे प्लेटफार्म पर (प्रोग्राम के अनुसार किसी अन्य ट्रेन के लिए यात्रियों के लिए रखा गया था) खाने के पैकेट लूट लिए.... रेलवे पुलिस लाचार खड़ी देखती रह गई, आखिर पेट भरने की कोशिश करने वाले का आप क्या बिगाड़ सकते हैं। उसे गोली तो नहीं मार सकते ना।

आज देश की राजनीति में किसान आंदोलन का बोलबाला है तब यह बात प्रासंगिक हो उठी है कि सरकार एक हद तक ही अपने समर्थन मूल्य पर खरीद कर सकती है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि जनसंख्या के अनुपात में सरकार के पास कितना खाद्यान्न मौजूद था। जो गांव के घर -घर तक 6 महीने का खाद्यान्न पहुंचाया जा सका... आखिर अनाज के भंडारण की व्यवस्था मैं खर्च आता है, वैसे अनुमान अभी भविष्य के गर्त में है। परंतु देश के व्यापारी वर्ग को अपनी मुनाफाखोरी को कम करना ही पड़ेगा। और आशा है कि जल्दी ही अनाज व्यापारियों को यह बात समझ में आ जाएगी, जो मंडियों और मंडी समितियों पर काबिज हैं जो कि किसान को सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य से कम मूल्य पर खरीद अपराध माना जाएगा हमें देश की उस कृषि व्यवस्था का भी ज्ञान है कि जब किसानों को अपनी उपज से अधिक खाद्यान्न खरीद कर सरकार की मांग को पूरा करना पड़ता था। जिसे इंदिरा गांधी की सरकार ने लेवी के नाम से लागू किया था। यानी किसान को अपने ऊपर से ज्यादा अनाज खाद्यान्न सरकार को देना पड़ता था। अर्थात सरकार के पास फौज के लिए भी पर्याप्त खाद्यान्न नहीं था, पैदावार बढ़ाने के उपाय जितनी तीव्र गति से बढ़ाए गए उसका खामियाजा भी किसान ही भुगतें यह अनुचित होगा, उसे अन्य देशों की तरह सब्सिडी के सहारे नहीं चलाया

जा सकता। भारत में कृषि को उद्योग की तरह ही जीवित रखना होगा।

खैर देश के मौजूदा प्रधानमंत्री पर भरोसा है कि वह इसका कोई संतोषजनक हल निकाल ही लेंगे। हां इस बीच जून का महत्वपूर्ण महीना बीत गया, जो प्राय: पर्यटन के लिए निश्चित रहता था, जब पति के साथ उच्च न्यायालय के कार्यालय में लंबा अवकाश होता था तब हम लोग इस माह में गर्मी में निजात पाने के लिए किसी पहाड़ी पर्यटन स्थल का चयन कर लेते थे।

20 जून हमारी विवाह की सालगिरह है,जो पूरे उत्साह से अपने मनपसंद पर्यटन स्थल मैं बिताई जाती थी, पर लॉकडाउन के बीच बहुत ही सारे ढंग से इसे हमने अपने घर पर ही मनाया।

दिसंबर के महीने में शीतलहरी शुरू होने से पहले कुछ स्तरीय पुरस्कार महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, कलम के सिपाही, मातृका शिक्षा गौरव सम्मान, उत्तम समीक्षक सम्मान, मातृका गौरव सम्मान, एवं मातृका विवेक सियाराम सम्मान.... आदि पुरस्कारों से मन प्रफुल्लित हुआ।

अंत मैं 7 दिसंबर को भैरव अष्टमी का समारोह जो एक पारिवारिक परंपरा के रूप में पुरखों के जमाने से बड़ी धूमधाम से मनाया जाता रहा है, भंडारा एवं वस्त्र दान की परंपरा के साथ संपन्न हुआ।

हालांकि 2020 में अभी भी पंन्द्रह दिन बाकी है.... परंतु बहुत गई थोड़ी रही की तर्ज पर आशा है कि इस सदी का द्वितीय दशक सकुशल बीतेगा, और इक्कीसवीं सदी का 21 वां वर्ष का स्वागत हम पूरे उत्साह से करेंगे।

ललिता नारायणी

कभी खुशी कभी ग़म-वर्ष 2020

उम्र के साथ वर्ष निकलते जाते हैं। अनेक अनुभवों से भरी ज़िदगी आगे बढ़ती जाती है पर कभी सोचा न था कि जीवन में ऐसा समय भी आयेगा, एक ऐसे वर्ष का सामना भी करना पड़ेगा जब ज़िंदगी थम सी जायेगी। ऐसा एक अनोखा, खट्टे-मीठे, कड़वे अनुभवों से भरा अविस्मरणीय वर्ष रहा सन 2020. पूरे विश्व को अपनी महामारी की चपेट में लपेट कर कितने ही लोगों की जान लील गया और कितने ही लोगों की रोज़ी-रोटी छीन कर ले गया। मानसिक पीड़ा से गुज़रते हुए भी लोगों ने आस नहीं छोड़ी और विश्व भर के वैज्ञानिक इस महामारी से छुटकारा पाने के लिए जी तोड़ कोशिश में लगे हुए हैं।

प्रारंभिक दो माह में एहसास ही नहीं हुआ कि आगे आने वाला समय कितना कष्टप्रद होने वाला है। नहीं जानती थी कि ये वर्ष हमको अपनों से दूर कर देगा और अकेलेपन में समेट लेगा। वर्ष 2020 के आरंभ होने से पहले चीन में होने वाली इस बीमारी के बारे में सुना था लेकिन तब ये कभी नहीं सोचा था कि हमारे देश को भी इसका सामना करना पड़ेगा, आर्थिक तंगी से गुज़रना पड़ेगा। हर साल की तरह नए वर्ष को धूमधाम से मनाते हुए उसका स्वागत करते हुए हमने 2020 में प्रवेश किया, इस बात से अनभिज्ञ कि ये वर्ष पूरी दुनिया पर कहर बन बरसेगा।

2 फरवरी 2020 को मैंने अपनी साहित्यिक संस्था 'काव्य मंजरी साहित्यिक मंच (रजि)* का चतुर्थ वार्षिकोत्सव बहुत धूमधाम से देहली में मनाया। देश भर से अनेक रचनाकार इस उत्सव में सम्मिलित हुए। नौ एकल पुस्तकों के साथ मंच के एक साझा काव्य संग्रह का भव्य लोकार्पण हुआ। साहित्य, शिक्षा, कला, संगीत, समाज आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों सम्मान दिए गए, कवियों ने अपने सुमधुर काव्य पाठ से समां बांध दिया। कितना स्नेह और अपनेपन से भरा अवसर था, न मास्क न सामाजिक दूरी किन्तु देश की स्थिति को देखते हुए अब सोचती हूँ तो लगता है यदि उस समय ये आयोजन न किया होता तो शायद आगामी दो-तीन वर्ष तक नहीं कर पाती।

1 मार्च 2020 को मैंने अपने पति और भाई-भाभी के साथ पांच दिन की भोपाल, उदयगिरि, सांची, पंचमढ़ी की सुखद यात्रा की। अपने देश में तब इस बीमारी से बहुत कम लोग संक्रमित थे और उस समय कहीं कोई भय का माहौल भी नहीं था। हम वहाँ बिना कोई दूरी बनाए और मास्क लगाए घूमे। पाँच दिन की यात्रा के बाद जब हम देहली हवाई अड्डे पर उतरे तब यहाँ हमको कुछ लोग मास्क लगाये दीखे। उस समय भी इसकी गंभीरता का एहसास नहीं हुआ। 7 मार्च 2020 को मैं अपने नाती के चौथे जन्मदिन पर गयी, उसके बाद वापस आकर पाँच महीने घर में कैद हो गयी। 10 मार्च को होली थी लेकिन देश में कुछ बढ़ते संक्रमण के कारण लोग भयग्रस्त थे इसलिए रंगों के इस पर्व में मिलन के रंग फीके ही रहे।

देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दूरदर्शन द्वारा देशवासियों को सुरक्षित रहने के आवश्यक दिशा निर्देश दिए और 22 मार्च को एक दिन का जनता कर्फ़्यू लगा दिया। उसी दिन शाम 5 बजे 5 मिनट के लिए उन्होंने ताली, थाली बजाकर उन सभी सुरक्षाकर्मियों (डॉक्टर, नर्स, पुलिस, सफाई कर्मचारी) का आभार प्रकट कराया जो अपनी परवाह किये बिना देश की सेवा में दिन-रात लगे थे। अद्भुत दृश्य था जब सभी अपने घर की बालकनी और दरवाज़े पर खड़े होकर ताली, थाली, शंख बजा रहे थे। इसी तरह 5 अप्रैल को रात्रि 9 बजे 9 मिनट के लिए घर की बिजली बंद करके एक दीया, मोमबत्ती या मोबाइल फ्लैश लाइट जलाने की अपील प्रधानमंत्री मोदी जी ने जनता से की। अपनी संस्कृति का परिचय देते हुए वो इसे कोविड-19 से लड़ने की संजीवनी के रूप में देख रहे थे। अमावस में दीवाली सी रोशनी का एहसास कराता ये अनुभव भी अपने आप में अनोखा था। पर इस कोरोना ने रुकने का नाम नहीं लिया, ये बढ़ता ही गया, फैलता ही गया।

इन सब परेशानियों के बीच खुशी का अवसर आया और मेरे बेटे का रिश्ता तय हो गया। 2 अप्रैल 2020 रामनवमी का दिन हमने बेटे के रोके के लिए तय किया लेकिन इससे पहले ही 25 मार्च 2020 को देश में 21 दिन का संपूर्ण लॉकडाउन घोषित हो गया और इस तालाबंदी की तारीख़ आगे बढ़ती गयी और बेटे का रोका वहीं रुक गया। हम इस महामारी के खत्म होने का इंतज़ार करते रहे पर ये मुआ बढ़ता ही गया।

तालाबंदी और घर की चाहरदीवारी, इसमें क़ैद कुछ सुनहरे अवसर भी आये जब पूरे घर ने घर के कामों को अपने हाथ में ले लिया। घर के पुरुषों ने भी गृह कार्य में पूरा सहयोग दिया। मिल-जुलकर काम करने का आनंद ही कुछ अलग था। एक ने रसोई का काम किया, दूसरे ने सफाई का तो तीसरे ने कपड़ों का, ऐसे में बिना गृह सहायिका के कब काम निपट जाता पता ही न चलता। न कहीं जाना, न किसी का आना--ऐसे में घर की एकता ही सबका संबल बनी। समय की पाबंदी नहीं, सबका साथ बैठकर भोजन करना, विभिन्न पकवान तैयार करना और घर में ही एक अलग उत्सव का सा माहौल होना, इस खूबसूरत एहसास ने, साथ ने अकेलापन और तालाबंदी महसूस नहीं होने दी।

इन सबके मध्य साहित्य के लिए भी समय मिल गया। नित नया सृजन होता रहा, साहित्यिक समूहों में ऑनलाइन काव्य गोष्ठियाँ प्रारम्भ हो गईं, पुस्तकों का ऑनलाइन विमोचन होने लगा और फ़ेसबुक पर लाइव कार्यक्रम होने लगे। सामाजिक संजाल से जुड़े साहित्यकार अब लाइव आयोजनों में एक-दूसरे के सम्मुख आने लगे। मुझे भी चार बार लाइव आने का अवसर मिला। वर्ष 2020 ने नये-नये आयाम स्थापित किये, अनोखे अनुभव दिये और घर बैठे ही बाहरी कार्य करने भी सिखा दिये।

वर्ष 2020 अनमोल उपलब्धियों का भी वर्ष रहा। अनेक प्रतियोगिताओं में ऑनलाइन प्रशस्ति-पत्र प्राप्त हुए। साथ ही मैंने अपने मंच से भी कई प्रतियोगिताएं आयोजित कराईं और विजेताओं को सम्मानित भी किया। अनेकों संस्थाओं ने पुस्तकों का प्रकाशन भी किया। सौभाग्य से मुझे भी कुछ पुस्तकों में स्थान मिला।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा "स्त्रीत्व" और "कोरोना काल एवं साहित्य ग्राम" में मेरी रचनाएँ, अयन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित "महिला साहित्यकारों की समस्याएँ" पुस्तक में मेरा आलेख, साहित्य सेवा द्वारा प्रकाशित "खुला आसमान" साझा काव्य संग्रह में मेरी रचनाएँ, वर्तमान अंकुर द्वारा प्रकाशित "नारी नारायणी" और "वो इक्कीस दिन" में मेरी रचनाएँ, सत्यम प्रकाशन द्वारा प्रकाशित "नरेंद्र मोदी मेरा अभिमान" में मेरी रचना का प्रकाशन हुआ। अंतरा शब्द शक्ति द्वारा प्रकाशित मेरा एकल संग्रह "आपातकाल में सृजन फुलवारी", साझा काव्य संग्रह "भाव और भाषा" आदि में मेरी कृतियों को स्थान मिला। शीघ्र ही अंतरा शब्द शक्ति द्वारा साझा संस्मरण संग्रह में मेरा ये संस्मरण प्रकाशित होगा।

समय व्यतीत होता गया और लॉकडाउन अनलॉक होने लगा। कोरोना संक्रमण की संख्या घटती बढ़ती रही। आम जनता के लिए मुश्किल भरा वक़्त था। काम काज के बन्द होने से आर्थिक तंगी ने घेरा, कुछ को महामारी ने जकड़ा, बहुतों ने अपने प्रिय जन को खोया। देश पर भी विपत्ति आई। गलवान घाटी में चीनी सैनिकों ने हमारे देश के सैनिकों पर हमला किया और तब से निरंतर चीन की ओर से हमारे देश को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

इसी बीच राखी के पर्व पर मेरे पति को हल्का दिल का दौरा पड़ा। उनको अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उनकी एंजियोग्राफी और एंजियोप्लास्टी हुई। मार्च के महीने से जो हम घर में बन्द थे वो मजबूरी में पाँच महीने बाद अगस्त में घर से बाहर निकलना पड़ा। कोरोना काल में दिल्ली जैसे शहर में अस्पताल के चक्कर काटे और उससे बच कर जब हम वापस आये तो लगा कोई जंग जीत आये। डॉक्टर की राय से पति की देखभाल करने लगे और धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य ठीक होने लगा।

त्योहारों के कारण दिल्ली में कोरोना संक्रमितों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। ऐसा लगता मानो हर कोई संक्रमित है। एक डर भी था और उससे लड़ने की हिम्मत भी थी। इधर बेटे की शादी की तारीख (16 फरवरी 2021) निश्चित करी और साथ ही रोके के लिए भी मन बना लिया और 1 नवंबर 2020 को घर में ही दोनों परिवारों ने मिलकर रोके की रस्म पूरी की। दीपावली का पर्व भी पास आ गया था और उसकी तैयारी करते हुए घर में हम सबकी तबियत कुछ खराब सी लगने लगी। बेटे की और मेरी तबियत तो ठीक हो गयी किन्तु धनतेरस के दिन सुबह पति को तेज बुखार आया, उसी दिन डॉक्टर ने कोरोना टेस्ट की सलाह दी और पति को घर में आइसोलेट होने को कहा। दो दिन बाद रिपोर्ट पॉजिटिव आई और इनको 14 दिन के लिए एक कमरे में बन्द होना पड़ा। अंतिम दो दिन पति की तबियत ठीक नहीं लग रही थी तो अस्पताल में भर्ती कराया जहां इनको कोविड निमोनिया बताया गया। ईश्वर की कृपा से अब पति ठीक हैं लेकिन जाते-जाते इस वर्ष ने, इस महामारी ने हमको अपने चपेट में ले ही लिया।

आज 2 दिसंबर है और जिस समय ये संस्मरण लिख रही हूँ उस समय पति अस्पताल में ही हैं, कल शायद घर आयेंगे। प्रतीक्षा है उनकी और ईश्वर से प्रार्थना है कि वो शीघ्र स्वस्थ हों। बेटे का विवाह भी समीप है और पति की सहायता से उसकी रूपरेखा भी तैयार करनी है। अंत में यही कहूँगी कि साल का अंतिम महीना है और चाहूँगी काश कि इस महामारी का भी अंत हो और वर्ष 2021 सबके लिए एक नई सुबह लेकर आये। इस वर्ष कई बुरी खबरें सुनने को मिलीं। अनेक फिल्मी हस्तियों के साथ कुछ प्रसिद्ध साहित्यकारों आदि ने भी इस महामारी में अपनी जान गंवाई। इस तरह अनेक कड़वे, दर्द भरे अनुभवों से भरे इस साल की यादें शायद कभी नहीं भूल पाऊँगी। खुशी के लम्हे भी आये किन्तु ये वर्ष जो पीड़ा दे गया वो कहीं-न-कहीं हृदय को रुला गया।

कभी खुशी कभी ग़म में घिरे एक बार फिर हम नए वर्ष के स्वागत के लिए खड़े हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि इस बार सबके दुःख को खुशी में बदल दें और वर्ष 2020 को सदा के लिए लॉकडाउन कर दें और जीवन को एक बार फिर सुनहरी सुबह से भर दें।

डॉ नीरजा मेहता 'कमलिनी'
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

क्या कहा आपने कैसा बीता 2020?

तो जवाब है उसके संख्यात्मक स्वरूप जैसा 2020 ही है अर्थात आधी धूप आधी छाँव या कहीं खुशी कहीं गम नई नई उम्मीदों और नए आत्मविश्वास के साथ आरंभ हुआ वर्ष 2020 अपनी मेहनत और परमपिता परमेश्वर पर अटूट श्रद्धा और विश्वास के साथ साहित्य साधना में यह सोचकर में लीन हो गई की अच्छाई और बुराई तो हमारे कर्मों में छुपी होती है हम चाहें तो बाँस से बांसुरी बनाकर जीवन को मधुर बनाए और चाहे तो तीर बना कर दूसरों को घायल करें।

सुखद अनुभव

हमारे इष्ट देव भगवान सूर्य हैं। इसलिए जनवरी में सूर्य उपासना पर्व, "मकर संक्रांति" से ही प्रतिवर्ष की योजनाएं निर्धारित करती हूं।इस दिन सूर्यदेव दक्षिणायन से उत्तरायण होते हैं अर्थात पूर्व से उदय होकर उत्तर दिशा से होकर पश्चिम में अस्त होते हैं। अस्तु-जन श्रुति है कि उत्तर दिशा में, सूर्योदयकाल में दौड़ते अश्वों की तस्वीर लगाने से भाग्योदय होता है जबकि वास्तविकता तो यह है कि सूर्यदेव नव स्फूर्ति व अंधकार से प्रकाश का प्रतीक और दौड़ते-भागते चारों अश्व, उद्यम के जागृत अस्त्र-सत्य, धर्म, कर्म और अर्थ (धन) का प्रतीक हैं जो जीवन में सफलता हेतु अति आवश्यक हैं। उत्तम स्वास्थ्य हेतु डॉक्टर पति देव के सहयोग से समाज में आयुर्वेदिक चिकित्सा का आयोजन,शासकीय आयुर्वेद चिकित्सालय के सौजन्य से किया क्योंकि हमारा मेरा उद्देश्य है -

पीड़ित मानवता की सेवा करना, यह सिद्धांत हमने जीवन में उतारा है। कर्मठ, धर्मपरायण चिकित्सकों ने ही, मानवता को हंसते-हंसते सँवारा है।

फरवरी माह में मां सरस्वती की आराधना, उनके अटल सिंहासन हेतु की ताकि महाविद्यालय में प्रगति के द्वार खुल सकें। वांछित सफलता मिले ना मिले, यह तो भाग्य की बात है। किंतु हम जीवन में प्रयास ही ना करें, यह गलत बात है। मार्च-अप्रैल में महाविद्यालय में परीक्षा की तैयारियों हेतु छात्राओं का मार्ग दर्शन करके उनमें आत्मविश्वास जगाना हर शिक्षक का कर्तव्य होता है क्योंकि-

मुश्किलों से भाग जाना आसान होता है।
जीवन का हर पहलू इंतिहान होता है।।
डरने वालों को कुछ नहीं मिल सकता है।
लड़ने वालों के कदमों में जहान होता है।।

प्राचार्य होने के कारण इसी सद्भावना को साथ लेकर हम निरंतर विद्यार्थियों के लिए प्रयासरत रहते हैं। वैश्विक प्रकोप के खट्टे अनुभव "जीवन एक संग्राम है।" जो हमेशा एक जैसा नहीं हो सकता। अनायास ऐसी आँधी आ जाती है जो हमारे जीवन को भी झकझोर देती हैऔर हमारे सपनों को चूर चूर कर देती है। मार्च में हायर सेकंडरी की परीक्षाएं चल रही थी जहां एक ओर सर्वे-प्लान के अनुसार प्राध्यापक कार्यरत थे वहीं दूसरी ओर परीक्षा आरंभ होने की जोरदार तैयारियां भी चल रही थीं कि अचानक चीन से कोरोना वायरस के संक्रमण का तीव्र झोंका आया जिससे बचाव हेतु राष्ट्रीय एवं प्रांतीय सरकार द्वारा संपूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई। आम व्यक्तियों को घरों में अनिवार्य रूप से रहने हेतु लॉकडाउन के अंतर्गत निर्देश दिए गए। विद्यालय, महाविद्यालय, कोचिंग संस्थान, औद्योगिक प्रतिष्ठान, समस्त कंपनियों पर लॉकडाउन के शासकीय आदेशानुसार

दैनिक गतिविधियों पर पूर्णतः रोक लगा दी गई। जिससे दैनिक वेतन भोगियों की आय लगभग समाप्त हो गई। शासकीय प्रतिष्ठान निजी प्रतिष्ठानों में मई माह से "वर्क फ्राम होम" की नीति लागू हो गई। अनेक संस्थानों में लाखों व्यक्ति बेरोजगार हो गए।इस आपत्ति काल से अंतर्मन व्यथित था।

मुझे अपना परिवार, रिश्तेदार, मित्र सभी स्वस्थ सुरक्षित् रखना है। यही हमारी अमूल्य धरोहर हैं। धनसंपदा और समद्धि तो जिंदगी में फिर अर्जित कर सकते है आज स्वयम् को स्वस्थ रखना अनिवार्य हैं। इसलिए परसेवा में जुट गयीं

राष्ट्रीय निशुल्क दवाइयां, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं, मास्क सेनेटाइजर आदि सामग्री वितरित की गई। व्यक्तियों, परिवारों, समाजों की सहायता हेतु अनेक समाजसेवी संस्थानों ने कार्य करना आरंभ किया। जान हथेली पर रखकर कोरोना संक्रमित व्यक्तियों की सेवा डॉक्टर एवं नर्सों द्वारा रोग प्रतिरोधी ड्रेस पहन कर, दिन-रात अपनी सेवाएं दी गयीं। सर्व धर्म के व्यक्ति सेवा कार्य हेतु मैदान में उतर पड़े। तमाम कोशिशों के बावजूद मरने वालों का आंकड़ा हजार को पार कर लाखों पर पहुंच गया। विश्व महामारी का ऐसा प्रकोप, ऐसी तांडव लीला हुई जिसने पूर्व सभी रिकॉर्ड तोड़ दिये। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में भी इतनी जन धन हानि नहीं हुई थी। विश्व से परिवारों की ओर बढ़ते संक्रमण ने दहशत और भय का वातावरण निर्मित कर दिया। उद्योगों, संस्थानों, में प्रतिष्ठानों में कार्यरत व्यक्तियों में से, आधे से अधिक वेतनहीन, बेरोजगार हो गए। कई निजी विद्यालयों और महाविद्यालयों में स्टाफ की जून तक की सैलरी बंद कर दी गई। शासकीय आदेशों के बावजूद भी निजी संस्थानों में स्टाफ की सैलरी 30 से 50% कर दी गई जिससे उनकी पारिवारिक स्थिति दयनीय हो गई मेरी परिचित शिक्षक और सहायक प्राध्यापक ने मानसिक रूप से विक्षिप्त होकर, आत्मघाती कदम उठाने का प्रयास किया। मैंने उन्हें समझा-बुझाकर स्थिति पूर्ववत होने का आश्वासन दिया तथा घर पर ही इस विषम स्थिति का सामना करने के लिए मास्क मेकिंग, पापड़, बड़ी, अचार, मसाले, जैसे गृह उद्योग चलाने का परामर्श दिया। जीवन संग्राम में योद्धा की भाँति शौर्य दिखाना है, विचलित होकर पीठ नहीं दिखाना है यही मानव धर्म है।।

मीठे अनुभव

विवाह के उपरांत मेरी पीएचडी करने की तीव्र इच्छा थी किंतु सासू मां का स्वास्थ्य ठीक ना होने से तथा परिवार की प्रथम बड़ी बहू होने के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों का दायित्व मुझ पर आ गया। आदर्श पुत्र की तरह पति देव ने मेरी प्रतिभा को समझते हुए भी कुछ वर्ष रुक जाने का निर्देश दिया। घरेलू कामों से निवृत्त होकर मैं प्रतिदिन समाचार पत्र पत्रिकाएं पढ़ती थी। सन 1984 में एक बार प्रतिस्पर्धा में मैंने अपना लेख भेजा इसमें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ नवभारत समाचार पत्र की ओर से पोस्टमैन पुरस्कार की राशि देने आए। पिताजी ने द्वार खोला वे यह सुनकर बहुत खुश हुए। अंदर आकर उन्होंने सब को बुलाया और मुझे आशीर्वाद दिया। मां से कहा हमारी बहू इतनी गुणवान है और हम इस हीरे को परख नहीं पाए। फिर उन्होंने मेरी पढ़ने लिखने की इच्छा जानकर, पी एच.डी. हेतु खुशी से हामी भर दी। पिताजी और पतिदेव की स्वीकृति मिलते ही मैंने शोध कार्य प्रारंभ कर दिया। अध्यापन कार्य शासकीय गृहविज्ञान महाविद्यालय में प्रथम बार प्रारंभ किया। तभी से आज तक प्राध्यापन कार्य करते हुए आज आदित्य महिला महाविद्यालय में प्राचार्य पद पर कार्यरत हूं। 21 मार्च 2020 को अनिश्चितकालीन लॉकडाउन का राष्ट्रीय स्तर पर आदेश जारी किया गया। इस घोषणा से मेरे लिए इस समय घर पर रहना किसी सजा से कम नहीं था मैंने कोई रचनात्मक कार्य किया जाए यह सोचकर नवरात्रि में 25 मार्च को मैंने एक ऑनलाइन सामाजिक संस्था अखिल भारतीय गहोई रश्मि कला साहित्य मंच की नींव डाली। समाज में साहित्य प्रतिभाओं को खोज कर उनकी राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाकर, समाज को एक विश्वस्तरीय विकसित समाज के रूप में प्रतिष्ठित करना ही मेरा उद्देश्य

है। नौ महिलाओं से प्रारंभ की गई संस्था में आज 125 से अधिक कला कौशल, साहित्य सृजन कार्य में निपुण महिलाएं हैं। अल्पावधि में जिनकी साहित्यिक प्रतिभा से प्रभावित होकर मैंने साझा काव्य संकलन निकालने का विचार किया और दिव्य रश्मि नाम के, 30 नारी शक्ति के इस साझा संकलन का अति शीघ्र विमोचन किया जाएगा। यह लाकडाउन काल में जीवन की एक महानतम उपलब्धि है। जब सभी महिलाएं घरों के अंदर बंद हैं। आवश्यक कार्य हेतु ही बाहर निकलना है तब यह कार्य उनके लिये भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। संस्था निरंतर कार्य कर रही है।

कड़वे-अनुभव

कोरोना संक्रमण काल में निरंतर अपने परिवार और संबंधियों से फोन पर संपर्क करती रही। यहां तक कि अपने एवं बच्चों के जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली आयुर्वेदिक रोग प्रतिरोधी दवाओं का वितरण अपने डॉक्टर पति के साथ मिल कर, अनेक शिविर लगाकर किया गया। परिवार जनों, परिजनों और विद्यालय, महाविद्यालय परिवार को भी औषधियां वितरित की गई फिर भी विधाता की ऐसी बिजली हमारे हंसते खेलते मायके परिवार पर सितंबर 2020 को गिरी जिससे आज तक नहीं उबर सकी हूं। 20 सितंबर को मेरे भतीजे चंदन ने फोन किया कि 'बुआ जी पापा जी की तबीयत अचानक बहुत खराब हो गई, फेफड़ों में अत्यधिक संक्रमण है तत्काल मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया। कोरोना की रिपोर्ट नेगेटिव आई हम सभी दिल में उम्मीद की लहर दौड़ गई। उन्हें रोग प्रतिरोधी इंजेक्शन भी दिए गए। स्थिति संतोषजनक होने पर अन्य वार्ड में भर्ती करने के लिए कहा गया। सीनियर सिटीजन के कारण मैं और मेरे पति देव अपने भाई से नहीं मिल सके, लेकिन मोबाइल फोन पर बात अवश्य की। उन्होंने बतलाया 'मैं बिल्कुल ठीक हूं बस सांस लेने में थोड़ी दिक्कत आ रही है 'मैंने उन्हें कस्वयं मन ही मन महामृत्युंजय मंत्र, और गायत्री मंत्र का जाप करने की सलाह दी ताकि फेफड़े मजबूत हो सकें।

दोनों का गला रुँध गया। 25 सितम्बर रात 3 बजे मृत्यु का समाचार मिला। रोते चीखते मेरी रात निकली थी। उधर छोटी भाभी को भी संक्रमण के कारण भर्ती करना था किन्तु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। जिससे शरद का समाचार न भाभी को नही दिया और न ही उस समय परबेटे का मुंडन करवाया। जबकि सामाजिक रीति-रिवाजों के अनुसार दाह संस्कार करने वाले का मुंडन कराया जाता है। भाभीजी प्रश्नों की बौछार करती रहीं-पापा कैसे हैं अब? हमें भी वहीं भर्ती कर दो जहाँ पापा हैं। हम पापा की शर्ट लाये हैं। जब से आये हैं एक ही शर्ट पहनें हैं।

पहले रोज फोन करते थे, बोल रहे थे-चंदन मुझे डिसचार्ज क्यों नहीं करा रहा? हम अब बिल्कुल ठीक हैं बस साँस लेने में थोड़ी तकलीफ है। हम सब उनसे संकेतात्मक भाषा में बात करते और एक दूसरे को देखते रहते। स्वस्थ होने पर जब कटनी वापस ले आये तब उनके सब्र का बाँध टूट गया बोलीं-कहाँ हैं पापा? चंदन रोते हुये बोला-मम्मी! पापा हमें छोड़ कर चले गये हैं, अब कभी वापस नहीं आयेंगे। सुनते ही वे बेहोश हो गयीं, दिनभर सदमा ग्रस्त रहीं। दूसरे दिन तेरहवीं पूजा हुई, कोरोना के भय के कारण बरेली से छोटी बेटी रिंकी, भाभी, परिवार जन, परिजन, भाई-बहन कोई भी अंतिम दर्शन नहीं कर सका।

जिंदगी कभी उदास का राग है।
कभी खुशियों का बाग है।
कभी हँसता रुलाता राग है।
कड़वे मीठे अनुभव का स्वाद है।
अपने ही कर्मों का हिसाब है।
जीवन के हर सवाल का जवाब है।

सूना हो गया घर, रक्षाबंधन, बच्चों का जीवन। कोरोना ने परिवार को मिलाया भी और बिगाड़ा भी। हर्ष के साथ वेदना, खुशी के साथ शोक, कुछ ऐसी ही सुखद एवं दुखद अविस्मरणीय स्मृतियों के साथ गुजरा वर्ष 2020।

वक्त का काम ही है गुजर जाना। बुरा है तो सब्र करो। अच्छा है तो शुक्र करो। पछतावा

से न हम जीवन बदल सकते हैं, न चिंता से भविष्य सँवारा जा सकता। इसलिए वर्तमान को जिओ! आगे बढ़ो। जीवन दोबारा नहीं मिलेगा।

डॉ.मनोरमा रमेश गुप्ता (पिपरसानिया) "बाँसुरी"
जबलपुर

अनोखा वर्ष संस्मरण 2020

आज का वर्तमान कल का भूतकाल बन स्मृति-पटल पर एक अमिट छाप छोड़ तिरोहित नहीं होता है.... अपितु स्मृतियों की रेखाओं के ताने बाने से बुने हुए नूतन वस्त्रों की तरह उसकी निर्मिति नवीन अस्तित्व धारण कर... मन: पटल पर अंकित हो जाती है।

ऐसा ही कुछ 2020 की देहरी पर पहुंचकर हुआ..... स्मृति चित्रों का अंकन मन के अनेक कौने पर अंकित हो गया .....

एक वर्ष इतना दीर्घ मानो कोई युग बन गया हो... इतनी विपदाओं का भार समस्त जन के हृदय को विदीर्ण कर देगा विश्वास नहीं होता... ऐसी ही डूबती... उतराती... स्मृतियों को टटोलने की कोशिश करती हूं... तब स्मृतियां ताजा होकर... पुनर्जीवित होने लगती हैं..!

मेरे भाई, जो अति सरल हृदय, कर्मठ, ईमानदार, अत्यधिक मेहनती, जब हम सभी को अचानक ज्ञात हुआ कि उन्हें जबड़े का कैंसर है... पूरा घर दुख के पहाड़ के नीचे आ गया...। सबने मिलकर पहाड़ को हटाने की कोशिश की।

उनका ऑपरेशन हुआ दिल्ली के सर्वश्रेष्ठ राजीव गांधी कैंसर हॉस्पिटल में। किंतु किस्मत हम सबके साथ जैसे कोई खेल खेल रही थी... और मेरे भाई जो अपने आगामी भविष्य के लिए काफी उत्साहित थे... पुत्र का विवाह तय हो गया था बहू के आने की तैयारियां कर रहे थे।

अचानक कोरोना वायरस के प्रकोप ने पूरी दुनिया को निराश कर दिया.... हिला कर रख दिया सभी जगह लॉकडाउन शुरू हो गया... 22 मार्च की वह शाम जब पूरे भारत में लॉकडाउन की घोषणा हुई ..सब कुछ थम सा गया जो जहां था वहीं जीवन रुक गया....।

सरकार के दिशा निर्देश का पालन जनता कर तो रही थी... किंतु सरकार वह सब कुछ नहीं समझ पा रही थी जो जनता की व्यक्तिगत परेशानियां थी...

ऐसा ही कुछ समय शांति पूर्वक निकल गया 22 मार्च को ही भाई के जबड़े का दुबारा ऑपरेशन होना तय हुआ था... जयपुर से और्थो के डॉक्टर का आना निश्चित था, किंतु लॉकडाउन के कारण यह सब संभव नहीं हो सका... और उस दिन से अर्थात 22 मार्च से अदृश्य सत्ता ने अनेक घटनाओं के ताने-बाने बुनने शुरू कर दिए... पूरी ही दुनिया पर मानो दुखों का ऐसा पहाड़ बार-बार गिर रहा था... कि एक के बाद... अनेक घटनाएं... अपना रूप आकार बदल कर... सभी के मन को दुख के ताप से झुलसाने लगीं... जिसमें हर एक व्यक्ति झुलस रहा था।

किसी प्रकार मार्च निकला सभी को रुलाते हुए... अप्रैल माह के मध्य तक... देश और समाज में हाहाकार होने लगा, अनेक विकराल घटनाएं, घटित होने लगी मजदूर सड़क पर मरने लगे... भूखे प्यासे हजारों किलोमीटर की यात्रा करते हुए, कभी सड़क पर हादसों का शिकार हुए.... तो कभी रात्रि काल में ही ट्रेन ने सोते हुए ही उन मजदूरों की किस्मत भाग्य और जीवन की किताबों को एक साथ एक झटके में ही बंद कर दिया... उन्हें शांति धाम और परम विश्राम धाम दोनों ही पथ में पूर्ण सामंजस्य प्रदान कर उन्हें एक बना दिया।

समाज का दुख हर एक व्यक्ति के लिए भले ही व्यक्तिगत न हो.... किंतु सहृदय के लिए वह व्यक्तिगत ही है.... "उदार चरिता नाम तु वसुधैव कुटुंबकम"....

इसी पीड़ा का वृहद भार ढोते हुए.... अप्रैल माह का अंतिम सप्ताह अपने समापन की ओर था...। भाई की चिंता दिन-रात मन को टीस से

भिगो देती थी। वह कीमोथेरेपी का उपचार ले रहे थे... जो कि निर्धारित समय पर लेना आवश्यक होता है...। और लोक डाउन की अवधि मोदी जी थोड़ी थोड़ी करके बढ़ाते ही जा रहे थे.... जनता के अनेक प्रश्न होते हैं नेताओं से सरकार से किंतु कौन सुनता है... किसने सुने हैं.... अनेक प्रश्नों के बोझ से जनता जब थक हार जाती है, तब उनका समाधान करने की स्वयं ही कोशिश करने लगती है। वह (जनता) हजारों किलोमीटर सड़क पर भूखे प्यासे पैदल चली.... कोई लाश लेकर चला कोई कंधे पर बूढ़ी मां को लेकर चला.... किसी के बच्चों को चार दिन तक भोजन नहीं मिला.... कोई गर्भवती पत्नी हजारों मील पैदल चली.... बच्चे को रास्ते में जन्म दिया, उसे लेकर फिर पैदल चली.... ऐसी न जाने कितने ही दुखद घटनाओं से अखबार में समाचार भरे हुए रहते थे प्रतिदिन....।

लॉकडाउन में दिल्ली जाकर उपचार कराना हर एक व्यक्ति के लिए टेढ़ी खीर ही थी। पहले डीएम से परमिशन लो, फिर कोरोना का टेस्ट कराओ.... बड़ी कठिन प्रक्रियाओं का दौर शुरू हो गया था हर एक मरीज के लिए।

कितने ही कैंसर के मरीजों को उचित इलाज नहीं मिल पाया कीमो मिस हो गई और परिणाम अति दुखद जानलेवा हुए.... जीवन-प्राण पर प्रहार...!

कुछ यादें सिर्फ खट्टी ,कड़वी या हृदय-विदारक ही होती हैं.... जो आजीवन एक ही रूप धारण किए रहती हैं... उनका रूप आकार बदलता नहीं है.... समय के साथ भले ही धुंधलापन छा जाए, उन यादों पर, किंतु धूल हटाते ही वह पुनः जीवंत हो जाती हैं.... 22 मई को भाई का यूं हमसे छिन जाना हमारे लिए मृत्यु पर्यंत हृदय में छुपे हुए शूल जैसा ही रहेगा... चाहे वह शूल हृदय को चीरकर विभाजित कर दे... अथवा हम जीवित रहें... अपने कर्तव्यों के दायित्व निर्वाह व ईश्वर प्रदत्त जीवन को आगे बढ़ाने के लिए.... किंतु / हृदय पुनः जुड़ा हुआ महसूस नहीं होता है.... वहां खालीपन है भाई के जाने का.... हमसे छिन जाने का.... क्रूर काल के द्वारा निर्ममता से उन्हें हमसे दूर करने का।

भाई को अंतिम विदाई नम आंखों से देनी पड़ी। यह दुखद घटना जीवन-काल का अभिन्न हिस्सा बन कर रहे गई है। दुख के विभिन्न रंगों से बुने हुए वस्त्रों की तरह मेरे साथ ही रहेगी.... जीवन पर्यंत इस फीके से वस्त्र को स्मृति-पटल की दुशाला बना कर आगे बढ़ रही थी।

यादों के वार्तालाप और गहरे हो चले थे। दीर्घ वार्तालाप में भाई की यादों को हम बहनों ने महीनों तक जिया... प्रतिदिन घंटों की समय सीमा को पार कर.... यादों की गहरी स्मृति शाला में हम डूबे रहते थे। इस तरह महीनों निकल गए।

25 अप्रैल को पुत्र का विवाह भी लौक डाउन के चलते स्थगित करना पड़ा... अग्रिम तिथि पंडित जी से निकलवाई गई जो 25 नवंबर निर्धारित हुई। भाई के जाने की दुखद यादों की नदी में डूबे हुए लंबी अवधि निकल गई। और अब पुत्र विवाह की तिथि नजदीक आ गई थी। यादों के वस्त्रों को एक कोने में रख मैं कर्तव्य की राह पर पुनः चल पड़ी।

समय का पहिया कब किस दिशा में चल पड़े कहां और कब किस तरह की पूर्व निर्धारित दुखद घटनाओं का सामना करना पड़े यह किसी रहस्यमयी सत्ता के अदृष्ट नियम एवं विधि के विधान का ही प्रारूप है कि उसे समझना अत्यधिक कठिन भी है। अचानक सितंबर माह में हृदय को चीर देने वाली एक घटना ने जन्म लिया... जो कभी नहीं होना चाहिए था... वह घटित हुआ।

शब्दों को ढूंढना भी मुश्किल है कुछ आकस्मिक घटनाएं ऐसी होती हैं कि शब्दों में आकार नहीं ले सकतीं.... भतीजे के का चले जाना मात्र इक्कीस वर्ष की आयु में.... पूरे परिवार को गहरे सदमे से होकर गुजरना पड़ा..... गुजरे नहीं है.... हम सभी डूबे हुए हैं..... उबर नहीं पा रहे हैं... सदमा बहुत गहरा है.... न खट्टा है न तीखा है न कड़वा है....यह कुछ अलग है.... सबसे हटकर....।

मनुष्य इस संसार सागर में जब कुछ आकस्मिक छूटा हुआ खोजता है... तब इतने बड़े

गहरे रहस्य में संसारी-सागर में वापस किसी को पाने का.... खोजने का... रास्ता किसी को भी नहीं मिलता...। इसी दुख और गम के साथ पूरी उम्र हर एक को गुजारनी पड़ती है..... क्योंकि यह संसार है .....

जहां सब कुछ सम्+सार है... ढूंढना है... खोजना है.... पाना है.... और जाना है.... जाने का रास्ता भी यदि कोई खोज ले... तो जीवन सफलता के सोपान पर स्थिर होकर, स्थित रहते हुए... मुक्ति पथ पर अग्रसर हो सकता है शायद...।

2020 की जगत-जीवन यात्रा इतनी कठिन होगी शायद कोई सोच नहीं सकता.... स्मृतियां विस्मृत हों.... ऐसा भी संभव नहीं.... बिछुड़े हुए... प्रियजन दुबारा मिल जाते ....यहीं सम्मुख उनके साथ, फिर जीने का सपना साथ चलने की चेष्टाएं, कामनाएं, अधूरी इच्छाएं, अधूरी ही हैं। कुछ नवीन को कात कर बुनना सहज नहीं होता... और बुना हुआ जब डूब जाता है उसकी खोज में पुनर्जन्म तक की यात्रा पुनः करनी होती है.... फिर किसने देखा है.... अगला जन्म वर्तमान की पीड़ा .....इसी लिए व्यक्ति को हर पल भीतर से तोड़ती ही रहती है.. पुनः अगली यात्रा पर जाने के लिए।

डॉ. सुकेशिनी दीक्षित
आगरा, उत्तर प्रदेश

अनोखा वर्ष-2020

रोमांचक, यादगार खुशियों भरा, कुछ कड़वा

साल 2020 जैसे की अपने नाम ट्वन्टी ट्वन्टी के नाम से जाना जाता है इस ट्वन्टी ट्वन्टी का क्रिकेट में जितना महत्वपूर्ण रहता है जितना अनिश्चित और चढ़ाव उतार वाला होता है उतना ही हम सब की जिंदगी में उथल पुथल मचा दी.

साल 2020 ने सारी दुनिया को हिला कर रख दिया। इस साल में कोरोना जैसी भयंकर महामारी का उदय हुआ जिसने सारे विश्व के विकास को रोक दिया, महामानव जिसने बडे-बड़े अविष्कार कर लिए, आकाश पर सौर्य मंडल, चाँद और मंगल ग्रह पर एकछत्र राज्य स्थापित कर लिया। जिसने अपने अणु बम, परमाणु बम, से सम्पूर्ण संसार को डरा दिया। हवाई जहाज और जलथल से सारी दुनिया को समेट लिया। पल भर में एक कोने की घटना, समाचार नेटवर्क के जरिये संसार में फैला देते थे। वे एक छोटे से वायरस को हराने में असमर्थ हो रहे हैं। और उसको रोकने के लिए स्वयं अपने कदमों को रोक रहे हैं।

लाकडालान जैसे शब्द जिनको शायद मैंने किताबों में पढ़ा हो स्वयं एहसास किया और जाना माना है, हम इंसान घरों में कैद हो गए। अपने अपनों से दूर हो गये। माँ बेटी को मनाकर रही थी आने के लिए बच्चे अपनो से दूर हो गए, खुशियाँ सारी रूठ गई।

बड़े बड़े महानगरों की चमक धूमिल हो गई, चौक चौराहे वीरान हो गए, सड़क बेजान हो गई, ढोल नगाड़े की आवाज थम गई। सिर्फ डर के साये में जिंदगी सिमट गई रिश्ते नाते सिर्फ फोन मोबाइल पर आवाज में बंधकर रह गये। अपनों के बिछड़ जाने का गम लोगों को अकेले दर्द झेलने में विवश् कर गया, कितने ही लोग अकेले में ही तड़प तड़प कर मृत्यु को प्राप्त हुये। हजारों मजदूर मजबूर हो गए। हाथों से काम करने वाले हाथ फैलाने को विवश् हो गए, हजारों मौत भूख से हो गई. रेल, बस के पाहिये थम गये और लोगों की विवशता ने उन्हें मीलो चलने और अपने घरों में लौटने को मजबूर कर दिया।

देश की अर्थव्यवस्था चरमरा गई मध्यम वर्ग हमेशा की तरह चक्की में पीस रहा है मजदूर काम केलिए भटक रहा है हजारों हाथों से निवाला छीन गया. व्यापार ठप्प हो गया है। कुछ अच्छे काम भी हुए घर परिवार को एक साथ रहने का मौका मिला. पति पत्नी, बेटा बेटी ने मिलकर घरों काम किया।

हजारों लोग घर रहकर अपने समय को अपने अपने शौक को पूरा करने में बिताया, अपनी अपनी कला का प्रदर्शन किया परिवार के लोगों ने मिलजुल कर सुखदुख बिताये।

फिजूल खर्ची पर रोक लग गई, व्यर्थ का दिखावा और व्यर्थ घूमना फिरना, एक्सीडेंट, और क्राइम पर अकुंश लग गया, लूट पाट रेप की घटना कम हुई। डाक्टर ही जाग्रत भगवान बन गये उन्होंने तन मन से मरीजों की सेवा की. पुलिस और सफाई कर्मचारियों ने अपनी कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया और अपना काम सही ढंग से किया. संगठनों और समाजिक संस्थानों ने ईमानदारी से अपना दायित्व को निभाया।

वक्त अपने साथ अच्छी बुरी घटनाओं को जन्म देता है अच्छाई के साथ बुराई, सुखदुख लेना देना चलता रहता है। यह वर्ष मेरे लिए बहुत अच्छा रहा कुछ गम दिये बहुत सी उपलब्धि देकर जा रहा है जो मेरे लिए अत्यंत हर्षित कर गया है। यह वर्ष सच में अपने आप में अनोखा वर्ष रहा, यह वर्ष अपने साथ इतनी सारी यादें लाया है जो कि अविस्मरणीय रहा है कुछ यादें तो इतनी मीठी है जिसका कितने सालों से मुझे इंतजार था और वह खुशी मुझे जनवरी 2020 के आते ही मिली।

मुझे कितने सालों से इंतजार था कि कोई मुझे शुभ समाचार सुनाये कि मैं दादी बनने वाली हूँ मैं और मेरे पति यह सब सुनने के लिए पल पल का इंतजार कर रहे थे और जनवरी बीस ने हमको यह बात सुनाई और जनवरी से अगस्त तक का सफर हमने सुखद एहसास के साथ पल पल बिताया और 27 अगस्त 2020 को हमको दादी दादा बनने का सौभाग्य मिला. सुनहरा वक्त जिंदगी के लिए अस्मरिणय रहा। मैं अपनी खुशी को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती इसके लिए शब्द नहीं है सिर्फ मेरी आँखों में मेरे बेटे और बहु का खुशियों भरा चेहरा समाया है और कुछ देख ही नहीं रही हूँ और मेरा पूरा परिवार मेरे खुशी के पल में मेरे साथ हंस रहा है जो जो किसी किस्मत वालों को मिलता है अपनों का साथ वह मुझे आज प्राप्त हुआ है, मैंने सपने में भी नहीं सोचती कि मेरे अपने मेरे लिए इतना अधिक प्यार और स्नेह इज्जत रखते हैं।

मेरे लिए यह साल बहुत अच्छा रहा, मेरे के बच्चे घर वापस आ गए.इसमें मुझे असंभव कार्यक्रम इतनी सफलता से निपट गए और विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों देकर गया, जैसे कि स्वाती की शादी, आस्था की शादी बहुत बड़ी उपलब्धि हैं जिसकी मैंने इतनी सहजता और सरलता से मिलेगी सोचा नहीं था।

साल 2020 को विदा करते हुये 2021 का आगमन के साथ यह कामना करती हूँ कि आने वाला साल सबके लिए खुशी भरा हो. जो किस्मत बीत गया वह बदलना असंभब है पर आने वाला वर्ष सबके लिए सुनहरा हो।

मंजू सरावगी मंजरी
रायपुर छत्तीसगढ़

कोरोना और जिन्दगी

यह वर्ष 2020 हम सबके जीवन में एक अजूबा बनकर उभरा है। वर्ष के तीन माह तो हमारी जिन्दगी में खुशनुमा गुजर रहे थे। किन्तु अचानक वैश्विक महामारी कोविड-19 के आते ही कोरोना वायरस के प्रकोप नें सभी लोगों को भयभीत कर दिया। जिसका मूल कारण था कि इस वायरस का अटैक सीधे ही श्वॉसनली के माध्यम से फेफड़े पर करता है और कुछ समय बाद, सही ईलाज न होने पर वह मृत्यु के काल में समा जाता था।

इस महामारी अवधि में पूरे देश के विभिन्न भागों में कार्यरत् मजदूरों को वापस अपने गृह स्थल में आने पर भारी परेशानी का सामना करना पड़ा, कई ऐसी दुर्घटनायें हुयीं, जिसमें कुछ लोगों को मौत के मुँह में भी जाना पड़ा। कुछ दयानिधि लोगों ने इनकी घर पहुँचने और भोजन-पानी की व्यवस्था भी की थी।

सरकार के द्वारा समय-समय पर लॉकडाऊन किया गया। जिससे कुछ लोगों को जीवन संचालन के लिये रोजगार करने में मदद मिली। इस अवधि ने सारे परिवार को घर में ही बंद कर दिया और आपस में जुड़ने का अवसर प्रदान किया। जिससे आपस में पारिवारिक आत्मीयता में प्रगाढ़ता आयी।

कोरोना बीमारी से कुछ अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं, यथा- एक दूसरे को सहयोग करना, संयुक्त परिवार में रहने को महत्व को पुनर्जीवित किया है तथा दैनिक जीवन में साफ-सफाई एवम् स्वच्छता का वातावरण निर्मित करने में असीम योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त घर का शुद्ध भोजन करने के प्रति लोगों में रूचि उत्पन्न हुई है तथा प्राकृतिक चिकित्सा एवम् देशी जड़ी-बूटी का सेवन करने के प्रति रूचि एवम् जागृति लोगों में पैदा हुई है। छात्रों को नई पद्धति से आॅन लाईन पढ़ाई करने का अवसर प्राप्त हुआ और नये-नये गजेट्स के संचालन करने की पद्धति सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। वैसे ही जन-मानस की इलेक्ट्रानिक गजेट्स के उपयोग से अपनी जीवनचर्या चलाने के लिये मजबूर हो गया था। इससे सभी आयु-वर्ग के लोगों को मोबाईल उपयोग के अनेक लाभों से परिचित होने का अवसर भी प्राप्त हुआ है।

एक ओर इस महामारी ने बचाव हेतु सभी लोगों को चेहरे में मास्क, सेनेटाईजर का प्रयोग और बार-बार हाँथ धोने एवं सोशल डिस्टेंस रखने जैसे सुरक्षा के उपायों का पालन करना अनिवार्य किया, ताकि देश में इस महामारी की रोकथाम की जा सके और देश में जनहानि कम से कम हो। इसमें एक पॉजिटिवश् लोगों से दूर रहें और नेगेटिव लोगों को सुरक्षित माना गया, आइसोलेशन में रहना होगा, आदि नई शब्दावली/गतिविधियों का सामना करना पड़ा है। अभी तक समूल ईलाज हेतु वैक्सीन का प्रयोग बाजार में जनता के लिये आसानी से उपलब्ध नहीं है। अतः इसका बचाव सिर्फ सुरक्षा निर्देशों का पालन करना ही है।

आज कोरोना और जिन्दगी के बीच एक अनोखा सम्बन्ध हो गया है और कशमकश में सभी की जिन्दगी गुजर रही है। इससे सारा विश्व भी परेशान है। यह वर्ष भी समाप्ति के अन्तिम पड़ाव में है। जहाँ व्यक्ति मांगलिक कार्य, उत्सव, पर्यटन आदि का उपभोग भी सहमें-सहमें कर रहे हैं। हम सभी की जीवनशैली भी बदल चुकी है। किन्तु हमें अपना साहस नहीं खोना है। जल्द ही इसके सटीक ईलाज की वेक्सीन भी हमारे सामने आ जायेगी। पूर्वजों ने कहा भी है कि समय बलवान होता है और इसके सामने हम सब मजबूर हो जाते हैं। प्रकृति के पाँच तत्वों का विकराल प्रभाव मानव जीवन को प्रभावित भी करता है और जीवन भी देता है।

अंत में हम सभी की परमशक्ति से प्रार्थना है कि यह महामारी का प्रकोप जल्द समाप्त हो और सभी का सामान्य जन-जीवन पुनः लौट आये और भयमुक्त जीवन जी सकें।

एच.एस.अरमो 'अरमान',
रायपुर छ.ग.
मो.न. 94252-02803

संघर्ष भरा वर्ष २०२०

"कोई जब सराहना करे तो सदा लाभ हमारा ही होता है,
क्योंकि प्रशंसा प्रेरणा देती है और निंदा सावधान होने का अवसर"
जिन्दगी खुशसूरत है इसे जीना सीख लो।
यह वक्त लौटकर नहीं आएगा, अपने आज में रहना सीख लो।।

वास्तव में २०२० अपने आप में एक ऐतिहासिक वर्ष माना जायेगा। इस सन् ने अपने आप इतिहास के पन्नों पर अपना स्थान बना लिया है, कि सदियां बीतने के बाद भी २०२० को याद किया जाएगा, हमारे देश में कोविड़ १९ नामक महामारी लेकर आया था।

वर्ष शुरू हुआ तो मानो ऐसा लगा २०२० कुछ खास लेकर आयेगा, लेकिन सोच के परे रहने वाला यह वर्ष इतना खास रहेगा, सोचा न था। समय बितता गया, सोचते रहे आगे क्या होगा। इस कोविड़ के चलते कई लोग घर से बेघर हो गए, कईयों का रोजगार चला गया, छोटे-छोटे लोगों की जमा पुंजी खत्म हो गई, कई कर्ज में डुब गए। अपनों को खोने का दु:ख अलग। हर तरफ से दुख भरी खबरे, सब सुन-सुन कर दिल भर आ जाता था।

जब सब लोग लॉकडाऊन के चलते अपने-अपने घरों में वक्त गुजार रहे थे, किसी से कोई मिलना तक पसंद नहीं कर रहे थे, तब हम बैंकर अपने फर्ज को अंजाम दे रहे थे, पुरी सावधानी के साथ लोगों को अपनी आवश्यकता के अनुरूप नगद प्राप्त करा रहे थे ताकि लोगों को परेशानीयों का सामना न करना पड़े।

लेकिन २०२० जब से आया दिल हिला के रख दिया, कहीं था आतंकियो का, तो कहीं था फैला टिड्डी दल, पिस गए मजदूर लॉकडाऊन में, बाकी सब कुछ ले गया **'अम्फन'**। इस बीच धारा ३७० भी हटी, हमारे देश की नयी शिक्षा नीति भी आई, साथ-साथ रामलला भी सजे, लेकिन जो खुशी त्योहारों की थी वो फिकी रही। इन सबके अतिरिक्त मैं सिखा

"मुस्कुराहटें झुटी भी होती है साहब, इंसान को देखना नहीं समझना सीखो"

इस भय में सबको अपने-अपने की पड़ी थी, लेकिन कुछ चीजें थी जो बहुत कुछ सीखा गई-

"मिलने को हर शख्स एतराम से मिला, पर जो मिला किसी न किसी काम से मिला"

इतना सबकुछ होकर भी इस वर्ष ने मुझको सब कुछ दिया, जिसकी मैने कल्पना भी नहीं की थी। पहले मेरा एक मित्र हुआ करता था, जिससे मैं अपनी हर अच्छी-बुरी बातें साझा करता था, अब भी करता हूँ, वो मेरी जिन्दगी का हमराज है, उसी की मदद से एक ऐसा मित्र मिला जो अपने आपमे एक मिशाल है। उन्हीं की मदद से मैं एक परिवार में शामील हुआ जब भी उसकी बाते सुनता हूँ या बात करता हूँ मुझमें एक नई ऊर्जा का संचार होता है। मै जितना उनके करीब गया तो सिखा-

" समय कई जख्म देता है, इसलिए घड़ी में फुल नहीं काँटे होते हैं"

उन्हीं से मुझे पता चला .. **"गिरना भी अच्छा है, औकात का पता चलता है, और बढ़ते हैं जब हाथ उठाने के लिए, तब अपनों का भी पता चलता है"**

विपरीत परिस्थिाती में अपने आपको सम्हालना हर परिस्थिती में डट कर खड़े रहना मुझे उनसे ही सिखने मिला है।

इस वर्ष में मेरे पारिवारीक सम्बंधित भी कई ऐसे मामले हुए, जिन्होंने मुझे झंझोड़ कर रख दिये तब मुझे समझ में आया कि **"मिट्टी**

का मटका और परिवार की कीमत सिर्फ बनाने वाले को पता होती है, तोड़ने वाले को नहीं"

इस वर्ष ने मुझे अपनी एक नई पहचान दी है, जिसे मैं कभी भी नहीं भुला पाऊंगा, वर्तमान में मैं अपने आपको सबसे धनी व्यक्ति मानता हूँ, क्योंकि आज मेरे पास मेरे दो सच्चे हमदम हैं, जिन्होंने मुझे हर वक्त हौसला दिया, चाहे मैं किसी भी परेशानी में रहूँ, लगातार उन दोनों की नज़र मुझे पहचान लेती है। कभी भी उदास नहीं होने देती, इसके अतिरिक्त मेरे पास एक ऐसा परिवार **"अन्तरा शब्दशक्ति परिवार"** जिससे जुड़कर मेरी जिन्दगी ही बदल गई।

वर्ष २०२० में चाहे कितना भी अच्छा ना रहा हो लेकिन इस २०२० ने मुझे हर वो चीज़ से मिलाया जिसकी मैने कभी कल्पना भी नहीं किया-

"तस्वीरें लेना भी जरूरी है जिन्दगी में साहब...
आईने गुजरा हुआ वक्त नहीं बताया करते.."

अब तो एक दुआ है रब से यही, वर्ष के साथ हो कष्ट भी खत्म, बस महामारी की मिल जाए दवा, और सुरक्षित रह सके हम। खुद को और अपनों को इस महामारी से बचायेंगे।

पतझड़ हुए बिना पेड़ों पर नए पत्ते नहीं आते,
ठीक उसी तरह कठिनाई और संघर्ष सहे बिना,
इंसान के कभी अच्छे दिन नहीं आते।

सरफराज़ हुसैन

अनोखा वर्ष २०२०

सब अच्छा चल रहा था। अनूप जलोटा जी ने मेरी पुस्तक क़शिश की मुक्त कंठ से सराहना की थी। CAA एवं NRC के विरोध के बीच वैश्विक आपदा कोरोना ने भारत में दस्तक दी। अचानक कोरोना संक्रमण तीव्रगति से बढ़ने लगा एवं जिसका भय था वही अनहोनी हुई। देश के महामहिम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा लाकडाउन की घोषणा के साथ ही सपनों के सुनहरे वर्ष 2020 पर ग्रहण लग गया। मार्च के अंतिम सप्ताह से जारी आपातकाल ने लोगों को आत्मनिर्वासन के कटु अनुभव से रूबरू कराया। सड़कों पर पसरा सन्नाटा, कानों में लगातार गूंजती एम्बुलेंस की भयावह आवाज़ें, कोरोना से दिन प्रतिदिन होती लोगों की मृत्यु, सब कुछ झकझोर देने वाला था। मन में ख़ौफ़ भी था परंतु कुछ नया करने की ललक अभी ज़िंदा थी। जीवन में पहली बार इतना लंबा समय अंतराल, अपनी रचनात्मकता को पंख देने के लिए पर्याप्त था। मैंने लेखन कार्य पुनः प्रारंभ किया। अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन ने उस समय "आपातकाल में सृजन फूलवारी" नामक शीर्षक से निःशुल्क लघु पुस्तकें, अंतरा परिवार के प्रत्येक रचनाकार को सौग़ात में दी। लाकडाउन की अवधि, किसी तपस्या से कम नहीं थी। बहुत से आनलाईन मंचों द्वारा आयोजित दैनिक गतिविधियों ने साहित्यिक रूचि को बढ़ाने में सहायता की। आपातकाल की भयावहता को कम करने में मेरे लेखन ने मुझे आत्मबल प्रदान किया। इस बीच अनेक प्रख्यात उर्दू ज़बान के शायरों से राब्ता हुआ। मोहतरम शक़ील आज़मी सा, असलम राशिद सा, शकील जमाली साहब से बहुत कुछ सीखने को मिला। लाकडाउन के दौरान परिवार में बड़ी मौसीजी के सबसे बड़े बेटे/ हमारे कज़िन की असामयिक मृत्यु ने संपूर्ण परिवार को स्तब्ध कर दिया। इस असामयिक वज्रपात ने हमारे परिवार को भी गहरे शोक में डाल दिया परंतु कहते हैं ज़िन्दगी,ज़िंदादिली का नाम है। सुख और दुख तो जीवन के दो पहलू हैं। मैंने रमज़ान के पूरे रोज़े रखकर पवित्र माह में की जाने वाली संपूर्ण इबादत भी मुकम्मल की। भगवान उसका सुपरिणाम भी देता है। अनेक

सुप्रसिद्ध काव्यमंचों से मुझे फेसबुक लाईव आने के अवसर मिलने लगे। फेसबुक लाईव काव्य गोष्ठियों के माध्यम से मुझे एक नवीन पहचान प्राप्त हुई। एक शब्दसाधक के रूप में अब मैं ठीक से पहचाना जाने लगा। मेरी साहित्यिक यात्रा का श्रीगणेश भी अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्यम से ही हुआ था। मेरी पहली पुस्तक

काव्य संग्रह संकल्पना से लेकर वर्ष 2019 के दिल्ली पुस्तक मेले में वेद प्रताप वैदिक जी के करकमलों द्वारा विमोचित परस्तिश तक पहुंचते पहुंचते मुझे एक साधारण ही सही परंतु एक शायर की पहचान मिल ही गई। इस तरह वर्ष 2020 के प्रारंभिक छमाही लाकडाउन और लाकडाउन के दौरान संपन्न विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों, लाईव सत्रों और आनलाईन काव्य गोष्ठियों के नाम रहे। जुलाई से अनलॉक की प्रक्रिया ने जीवन को पुनः पटरी पर लौटने का अवसर दिया।

विद्यालय में आनलाईन कक्षाएं प्रारंभ हुई, कोचिंग भी आनलाईन तथा आफलाइन दोनों स्तर पर प्रारंभ की, कोरोना से बचाव को ध्यान में रखते हुए। लेखन कार्य जारी था। प्रतिदिन कुछ नये छंद, शे'र लिखना अब जैसे आदत बन गया था। मौलिकता से युक्त मेरा लेखन, मुझे नये पाठकों से भी जोड़ रहा था। ऐसा लग रहा था अब सब कुछ ठीक होने लगा है, लोगों के चेहरों की मुस्कान लौट रही है। अपने अनुज को प्रतिदिन टिफिन देने, उसके संगीत स्टूडियो में जाने मे आत्मिक शांति मिलती थी ताकि वो घर का शुद्ध भोजन समय पर कर सके। अचानक जैसे मेरी ख़ुशियों पर किसी की बुरी नज़र लग गई हो। अचानक मेरा स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। थकान, कमज़ोरी और पेट में अम्लीयता बढ़ने लगी। लेखन के लिए एक विशेष मनःस्थिति की आवश्यकता होती है और स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है इसलिए अगस्त और सितंबर माह में जो लेखन कार्य पूर्ण हो जाने थे वह लेखकीय कार्य अक्टूबर तक संपन्न नहीं हो पाये। चिकित्सीय परीक्षण में शरीर में शर्करा की मात्रा का अचानक बढ़ता स्तर चिंतनीय था। यकृत की भी कुछ समस्या बढ़ रही थी। समय में विशेषज्ञ चिकित्सक हमारे पारिवारिक चिकित्सक डॉक्टर सुरेश खटोड़ साहब के परामर्श,दवाइयों और उपचार से स्वास्थ्य मे सुधार हुआ। संयमित दिनचर्या और प्रातः काल सैर ने जीवन स्फ़ूर्तिमय कर दिया। ईश्वर की असीम अनुकम्पा, अपनों की दुआएं व बड़ों का स्नेहाशीष, संजीवनी की तरह काम आया। अभी कई प्रकाशक संपर्क में हैं और वे भी मेरे लेखन से प्रभावित हुए हैं। अभी किसी के साथ कोई व्यावसायिक अनुबंध नहीं किया है। अभी और अच्छा लिखना शेष है।

ख़ैर वर्ष के अंतिम माह में सकुशल पहुंचकर सुकून है, ख़ुदा का शुक्र है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वर्ष 2020 शीघ्रता से समाप्ति की और अग्रसर हो। निराशा और भय का सूर्य अस्ताचल की और चला जाये और इसी के साथ वो सभी विपदाएँ भी अलविदा कह दें जिन्होंने वर्ष 2020 की छबि को इतना कलुषित कर दिया है कि शायद ही कोई अपने जीवन में इसे पुनः स्मरण करना चाहेगा।

यह थी संक्षेप में मेरी इस अनूठे वर्ष की साहसिक यात्रा जो स्वयं मे एक अनुभव है जो जीवन के महत्व को समझा गया।

नवीन वर्ष; कल्याणकारी हो, मंगलमयी हो-यही स्वस्तिकामनाएं है।

बीते साल के अंश, क्रूर कोरोना के दंश।
भूले नववर्ष में, सारा भारत वंश।।

एक प्रार्थना जो कोरोना काल में लिखी, उसके माध्यम से आत्ममंथन के इस अनुभव को विराम दूंगा कि ...

हां मुझे विश्वास है....
बादल भय के छंट जायेंगे।

पल विपदा के कट जायेंगे।।
संकट भी सब हट जायेंगे।
एक बार वो भी दिन आयेगा।।
हां मुझे विश्वास है.....
धुंध उदासी की हट जायेगी।
खुशियाँ सब में बंट जायेगी।।
हदें फ़ासलों की मिट जायेगी।
एक बार वो भी दिन आयेगा।।
हां मुझे विश्वास है.....
सड़कों पर फिर जमघट होगा।
नभ में खगों का कलरव होगा।।
ईद, दीवाली, फ़ाग भी होगा।
एक बार वो भी दिन आयेगा।।
हां मुझे विश्वास है.....
फ़िर एक दूजे के गले मिलेंगे।
द्वीप अमन के हर द्वार सजेंगे।।
खुशियों के मंगल गान बजेंगे।
एक बार वो भी दिन आयेगा।।
हां मुझे विश्वास है.....

डॉक्टर वासिफ़ काज़ी, इंदौर
संपर्क 8085901021

मीठे कडवे अनुभवों और उपलब्धियों से भरा वर्ष 2020

समय अपनी गति और अपनी प्रकृति के अनुरूप चलता रहता है और एम स्वतः स्वाभाविक प्रक्रिया के तौर पर देश और परिस्थितियों पर प्रभाव डालता प्रतीत होता है। यू तो समय की कोई पहचान नही होती; लेकिन परिकृष्त मनुष्य में अपने ज्ञान-विज्ञान के समायोजन द्वारा समय को उद्घाटित और पारिभाषित किया है। जिसे युगों, वर्षों और शताब्दियों आदि की परिधि में बांटा और वर्णित किया जा सकता है। बीती शताब्दियों ने दुनियां को एक नया तकनीकी युग दिया जिससे दुनिया एक वैश्विक ग्राम और सूचना तकनीकी के धरातल यानि वर्चुअल पटल पर आ पाई। वर्ष 2020 को यदि विशेष रूप में समझें तो; ज्ञात होता है कि संपूर्ण दुनिया ने समय की परिधि में एक अनोखे वर्ष को स्वयम के सामने तो पाया किन्तु यह दुनिया के लिए अब तक के सबसे मुश्किल समयों में से एक रहा है। निश्चित तौर पर इस वर्ष को यू तो अनेकानेक कारणों से हम सब अपने-अपने अनुभवों के अनुसार वर्णित और विश्लेषित किया ही होगा; किन्तु यह वर्ष-2020 एक विशेष कारण जिसे विश्व एक संक्रामक वायरस “कोविड 19” के नाम से जानता है, कि वजह से इस वैश्विक महामारी को अपने अस्तितित्व में समेटे यह कैलेंडर वर्ष-2020, को दुनिया “कोरोना काल” के नाम से याद रखेगी। इस वर्ष ने अपने समय पटल पर दुनियां को अनेकानेक ऐसे दुर्दांत अनुभव दिए है। जिससे वैज्ञानिकता और तकनीकि के अहं को लिए चलने वाली मनुष्यता आज अपनी भूलों का एहसास कर पा रही है और विकास और निर्माण की प्रकिया में पर्यावरण व भूमण्डल के साथ की गई ज्यादतियों की अपनी भूलों को आज शायद समझ भी पा रही है। आज वो ईश्वरीय कृत्य को सर्वोपरि और नियंता को ही सर्व-समर्थ मानकर शायद अपनी भूल जनित विकृत सोच के लिए स्वयं को पश्चाताप की अग्नि में जला भी रही है। आज के दौर में मनुष्य को कुछ ऐसे अनुभव तो अवश्य दिए है; जिनसे वो स्वयं में समय रहते कुछ सुधार कर और नियंता की नियति पर भरोसा कर स्वयं को संपूर्ण समझने की भूल से बच पाए।

वर्ष 2020 बीते कुछ वर्षों की तुलना में बेहद अलग रूप् में प्रतिपादित हुआ है। प्रत्येक सामान्य व विशेष व्यक्तियों को केवल उनके व्यक्ति होने का एहसास, कराने वाले इस वर्ष ने संपूर्ण मानवता को झकझोर दिया है। आज के वैश्विक महामारी के दौर ने अर्थतंत्र, व्यापार तंत्र, समाज, रिश्ते, सोच, आचरण-व्यवहार यहाँ तक कि हमारी आस्था आधारित कर्म व परम्पराओं तक को बदल डाला है। मेरी निजी सोच में यह वर्ष कई मायनों में प्रकृति द्वारा दिए जाने वाले

ऐसे संदेशों का वाहक था जिसे हम आम तौर पर अपने ज्ञानाधरित अहंकार की वहज से नही समझ पा रहे थे। जीवन में सबसे उपयोगी परिवर्तन विचारधारात्मक परिवर्तन होते हैं जिसे इस वर्ष ने अपने कल्प से बहुत सामान्य तरीके से बदल दिया है। मनुष्य के द्वारा प्रकृति और व्यवस्था पर किए गए कुठाराघात के प्रति कार के तौर पर कई खट्टे मीठे अनुभव यह वर्ष अभी तक हम सब को दे गया है।

इस वर्ष ने जीवन में कुछेक ऐसी सच्चाईयों के ऊपर से पर्दा उठाया है जिन्हे आमतौर पर हम सभी अपना व्यस्ततम भाग-दौड की जिन्दगी में भूले बैठे थे; जीवन एक नितांत महत्वपूर्ण प्रकल्प है, जिसे संपूर्णता से जीना चाहिए। इस बात को भी पृथ्वी पर भगवान के बाद उनके ही भेजे गए दूसरे देवदूतों "चिकित्सकों" के महान तप ने हम सबको यह समझा दिया है। प्रकृति प्रदत्त व वैज्ञानिक आधार लिए हमारी भारतीय संस्कृति के प्रति इस वर्ष ने लोगों के प्रति ध्यान खीचा है, भारतीय संस्कारों और उनकी वैज्ञानिकता को आज लोगों द्वारा बदले दौर में एक सामानांतर सोच वाली वैज्ञानिक रीति के तौर पर देखा और स्वीकार्य किया है। भारतीयता की अभिवादन परंपरा से लेकर, भारतीय आयुर्वेदिक परंपराओं तक को आज विश्व एक वैज्ञानिक श्रृंखलात्मक दृष्टिकोण के तौर पर देख रहा है। कोरोना काल के नाम इस वर्ष ने सबके दृष्टिकोण की परिधि को पलटा भी है और परिष्कृत भी किया है। हाँ, इस वर्ष के आगोश से निकली निजी जावन की विभीषिकाओं से जनित चिन्तन की नई परम्पराओं की परिधि ने इस कोरोना वर्ष को हम सब में अनेकों संस्मरणों से भरा तो अवश्य है, आइए मिलवाता हूँ। आपको मैं मेरे लिए इस वर्ष के अब तक के हुए अहसासों से; जो कुछ कडवे, खट्टे और मीठे भी हैं।

इस वर्ष को यूं तो सब लोग वर्षारंभ से ही एक सामान्य वर्ष के तौर पर ले रहे थे; किन्तु धीरे धीरे बदलते परिद्रश्यों और वैश्विक स्तर पर कोरोना वायरस; जिसकी उत्पत्ति वर्ष 2019 में नवम्बर महीने में पहली बार हुई थी, के कारण दुनिया के सामने एक विशेष वर्ष के तौर यह कैलेण्डर वर्ष उपस्थित हुआ है। मैं इस वर्ष की घटनायों को, मेरे जीवन काल की किन्ही ऐसी घटनाओं में रख पाऊंगा; जो अनोखी थी और दुष्करता का भाव लिए साथ आई थीं। ईश्वरीय कृपा से यह वर्ष अनोखा वर्ष होकर भी अब तक तो मेरे लिए एक औसत से अधिक अच्छे परिणामों वाला वर्ष साबित हुआ है। यदि आंकलित करूँ तो मेरे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में यह वर्ष बहुत सारे ऐसे परिवर्तनों के नए अध्याय लेकर आया जिससे मैंने अनेको पाठ सीखे। तो आइए नजर डालें इस वर्ष और मेरे साक्षात्कार के आत्माधारित संस्मरण पर-

नवीन शुरूआत (प्रारंभिक महीने):

वर्ष के प्रथम महीने जनवरी में पेशेवर तौर पर कुछ सकारात्मक प्रतीकों के तौर पर कुछ अच्छे सन्देश मिले, जिनमें संस्थान को मिले नए निदेशक महादय प्रो. (डॉ.) आलोक शर्मा साहब के कुशल नेतृत्व का मिलना एक बड़ा सकारात्मक पहलु है, यूँ तो कोई भी नेतृत्व अच्छा ही होता है; मगर यह हमारे उस नेतृत्व के प्रति के रवैये पर भी निर्भर करता है की हम उसमे क्या कुछ सकारात्मक लेते हैं और उसे क्या लौटते हैं। यूँ तो प्रतीकात्मक तौर पर जीवन व समय स्वयं के सकारात्मक कर्मों के प्रतिफल का एक ऐसा संसर्ग होता है, जिसका परिणाम सकारात्मक ही होता है किन्तु यदि पेशेवर क्षेत्र में आपका नेतृत्व निरर्थक व दिशाहीन हो तो सकारात्मकता निरीह नकारात्मकता में बदल भी जाती है। यद्यपि मेरे जैसा व्यक्ति उपने 8 घण्टे के व्यावसायिक दिन को पूरी तरह से व्यवसायिकता में ही इस्तेमाल करता आया है; बल्कि उससे कहीं अधिक भी। किन्तु सकारात्मक और ऊर्जावान नेतृत्व से अपनी उत्पादकता और क्षमताओं (अकादमिक व प्रशाशनिक) में अभिवृद्धि अवश्य महसूस हो रही है। वर्ष की पहली तिमाही जनवरी, फरवरी और मार्च के उत्तरार्ध में अकादमिक व संस्थानिक यात्राओं से बहुत कुछ सकारात्मक उर्जा व नए अनुभव हांसिल हुए। निजी जीवन में भी जनवरी ने नए संसाधन और श्री को मेरी झोली डाला जो बेहद सुखद अनुभव रहा था। शायद यह इस वर्ष की और मेरे जीवन की कुछेक उच्चतम उपलब्धियों में से एक अवश्य होगा।

लॉक डाउन अवधि व कोरोना की धमक संपूर्णता के कोरोनामय होने का दौर

देश में एक ओर कोरोना को लेकर जनमानस का मिजाज अलग था वही राष्ट्रीय सरकार द्वारा मार्च, अप्रैल और मई के महीने में कराया गया राष्ट्रव्यापी लोकडाउन द्वारा कोरोना के फैलाव को तो व्यापक पैमाने पर कमतर ही रखा गया था, लेकिन इससे हुए देशव्यापी परिवर्तनों में खासकर संस्थानों की बंदी और बाद में इसके परिणाम स्वरूप एक शिक्षक के तौर पर अपनी जिम्मेदारियों को ऑन लाइन माध्यम से पूरा करना; एक नई संकल्पना थी और इसमें रहते हुए; एकाएक इसको अपनाने और आजमाने से सभी में नवीन शैक्षणिक गुणों को निश्चित तौर पर स्वतः ही अपनाया जिससे हमारी विश्लेषण, समन्वय शैली का विकास व ज्ञानात्मक मार्गों के उन्नयन के नवीन प्रयोगों द्वारा अकादमिक मायनों को गढकर बदले हुए दौर में खुद को नवाचारी शिक्षक के तौर पर ढालना एक नई सीख रही।

सब कुछ या बहुत कुछ ऑनलाइन माध्यम से हो रहा था बाकि सब कुछ बंद था, केवल राशन सब्जी, दूध, गैस सिलेंडर आदि जरुर प्रकट मिल रहा था वो भी ऑनलाइन पेमेंट आदि की कृपा से। दुनिया में व्यापक स्तर पर कार्मिकों का पलायान, अर्थव्यवस्था का तेज़ी से बदलना और घर में रहकर सुरक्षित रहने की भावना द्वारा परिवार शब्द को अधिक नजदीकी से समझने और अधिक देर साथ रहने का मौका मिला, पर मेरी ऑनलाइन कक्षाएं और यू ट्यूब चैनल ज्ञानधारा नोलेज फॉर आल सेग्मेंट्स का नव सर्जन करना छात्र वर्ग को अपनी क्लासेस आनलाइन देने का बेहद उपयोगी कवायद शुरू करने के मौके ने मुझे इस अतिरिक्त समय का एहसास ही कहा होने दिया था। अप्रैल में मैने खुद के इस यु ट्यूब चैनल के लिए वीडियो बनाना व एडिटिंग सीखी और बहुत हद तक खुद के रचनात्मकता के नए द्वार खोले थे, जिनसे मुझे खुद से मेरी नई पहचान हुई, लेकिन इतना भर सकारात्मक था शायद; कोरोना-लॉकडाउन का दूसरा पक्ष यह भी था की की जीवन में एक दौर ऐसा दौर था जब मेरी आदरणीया नानी श्री का स्वर्गवास हुआ, वो पिछले कई दिनों में वो बेहद बीमार थीं, लेकिन महज़ ३ किमी. के दायरे में रहकर भी न उनकी बीमारी में, न उनके अंतिम समय में तो छोड़ो अंत्येष्टि में भी नहीं जा पाया, शायद यह मलाल कोरोना के कारण जीवन भर रहेगा, शायद यह कोरोना का अब तक का सबसे बड़ा दुर्दांत था। सोचिये जिनके अपने खोये होंगे और यदि वे कोरोना से जीवन मुक्त हुए होंगे तो उनकी मनः स्तिथि कैसी रही होगी? शायद यही कारण था की 130 करोड़ के देश में कोरोना संक्रमण को रोकने हेतु सरकार ने लॉक डाउन किया था, और इस लॉक डाउन ने वो सब कुछ बदल दिया जिसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की थी। जीवन भर यह और दौर और इसकी कसक भरी तस्वीरें याद आती रहेंगीं- कैसे मौत और अंतिम गति तक, विवाह और सामाजिक कार्यों की गति बदल गयी।

कोरोना काल और लॉक डाउन के बाद की स्तिथि:

जीवन में कुछ एक घटनाओ से साक्षात्कार ऐसे होता है जिनके प्रभाव की अभिव्यकि का ज्वर बाद में चढ़ता और उतरता है। दुनिया एक महत्त्व पूर्ण घटना क्रम से दो चार हो रही थी और उसके बदले संसर्गों के बाद कोरोना की व्यापकता लॉक डाउन खुलने से ज्यादा भयावह हो गई थी; एक दौर ऐसा भी आया की कोरोना मेरे संसथान के भीतर भी पहुँच गया था और उसकी जद में हमारे कई साथी आ गए थे; गनीमत थी की प्रभु ने उस समय भी हम सबकी रक्षा की बहुत संसय के दौर में भी सोशल दूरी और मास्क के इस्तेमाल आदि ने हम सबको इसके प्रभाव से तो बचाया ही। अब दौर था शहर में विधानसभा उपचुनाव का; कोरोना तो हावी था ही पर हम सब भी अपनी अपनी आवयशक ड्यूटी में लगे ही हुए थे; प्रशासन के डर से कोरोना भी डर गया था शायद। हमे शासकीय सेवा में होने के नाते चुनाव मशीनरी का हिस्सा बन चुके थे; सरकारी सेवा जुड़ना कितनी बड़ी जिम्मेदारी है इस बात का एहसास अब सबको हो चूका था और बचपन से महसूस होने वाली बात आज फिर गहरी हो गयी की सेवा में रहना जीवन की एक कठोर परीक्षा है जिसे केवल शासकीय सेवक का परिवार ही समझ सकता है, बहरहाल एक सच भी हास्यास्पद रूप

से सामने आया कि चुनावों में कोरोना भी आंकड़ों के खेल में फंस कम सा गया या की थम सा गया था... पता नहीं यह प्रशासन और कोरोना आंकड़ों के बीच का प्रेम सम्बन्ध रहा होगा... कि ग्वालियर के आंकड़े कम हो गए थे।

यद्यपि इस दौर में एक अच्छा समाचार श्री राम मंदिर निर्माण हेतु भूमि -पूजन की ख़ुशी का था, वो सपना जो पीढ़ियों ने देखे वो हमारी आँखों ने हकीकत में, एक ओर नए सरोकार बन रहे थे जिनमे अंतरा शब्दशक्ति के परिवार का सदस्य बनना, अनेक मंचों से लेखन एवं अन्य शैक्षणिक सरोकारों के लिया कई संस्थाओं द्वारा वर्चुअल माध्यम से बुलाया जाना व उनका सदस्य होना, मेरे किन्ही पिछले दशक में देखे गए सपने के साकार होने जैसा था। शायद यह मिले अतरिक्त समय के सद- उपयोग का ही प्रतिफल था, बहुत रचनात्मकता जो शायद अंतर में कहीं घुली थी आज निष्क्रमित हो बाहर आ रही थी। इन सब के वावजूद जीवन की परिधि में यह वर्ष कल्प, प्रकल्प और विकल्पों के दायरे लिए बहुत से नए आयाम ले आया था जिनमे कुछ सीखें थी तो कुछ भूलों के परिणाम भी -

1. जीवन सबसे अनमोल: यकीनन इस कोरोना काल ने जीवन के महत्व व उसे गुणवत्ता से जिए जाने की बात को स्वतः स्पष्ट किया।

2. समाज और सरकार का महत्व: आज के दौर ने व्यक्ति को समाज व सरकार के महत्त्व को भली भांति समझाया है, जिससे उनके प्रति और निष्ठा जन मानस में पनपी है; वैश्विक महामारी में सरकारों ने बेहतरीन काम किया है।

3. चिकित्सकों, स्वास्थ्यकर्मियो, सफाई कर्मियों, पुलिस व सेवा क्षेत्र के हर छोटे बड़े उस व्यक्ति के होने के महत्व की समझ का वर्ष; जिन्हें हम अधिक महत्त्व नहीं देते।

4. प्रकृति के उचाट होने पर मानव के मजबूर होने के बोध का दौर, जिसने मनुष्य की एकोअस्मि की भावना को काफूर कर दिया।

5. आयुर्वेदिक चिकित्सा व उससे जुड़ाव का नया दौर जिसने लोगों में एक नया विश्वास पैदा किया।

6. तकनीकी जीवन शैली और जीवन के स्वरुप के बदल दिए जाने का एहसास सबको करा दिया और इसकी व्यापक स्वीकार्यता व सभी मानदंडो में आज महसूस की जा रही है।

7. अर्थतंत्र के पटरी से उतरने, काम की कमी, उद्योग धंधों पर पड़े कोंरोना दंश व उससे चीखती मानवता और समय की तेज धूप में अपनों के साथ अपनों तक पहुँचने तक का सैकड़ों हजारों किमी का लम्बा पैदल सफ़र करते आदमी, औरते और उनके लाचार बच्चे और भी कई ऐसे द्रश्य जो हमारे लाचार होने के साबुत सबूत हैं।

8. स्कूली बसते, बसें और बच्चे बंद हैं आज कल; बस फिर भी नया दौर है शिक्षा का जहाँ दिमाग में मोबाइल/ कम्पूटर स्क्रीन घुस गयी हो जैसे; और अनेकों मनो विकारों के युवाओं खासकर बच्चों में बढ़ने की सम्भावना है। वैसे सब कुछ ऑन ही लाइन है या की ऑनलाइन है।

9. शिक्षा का वैकल्पिक सूत्र तो प्रस्फुटित हुआ लेकिन उसकी सर्वांगीण अवधारणा बस वर्चुअल हो कर नितांत पंगु हो गयी है... अधिक लम्बे दौर में यह ठीक भी न है.. इसके खतरे आगे देखने को मिलेंगे, मगर अभी यही दौर है या की इसकी का दौर है... संक्रमण काल में जिंदगियाँ बचाना शायद अधिक जरूरी है। वैसे देश में आने वाले समय में लागू होने वाली नवीन शिक्षा नीति भी एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम इस वर्ष ने हमे दिया है। इस वर्ष के लिए-

“दौर खिजां का था, सो दीदार ए रूबरू न हो सका
बदले इस दौर में वैसे सपनो की मुलाकात काफी थी

10. बीते त्योहारी और चल रहे शादी-व्याह के दौर ने वैसे सामाजिक दुरी छोड़ी ही कहाँ हैं... जिसके लिए हम सब कुछ छोड़ रहे थे.... कहीं यह हमारी 50 ओवर के खेल में 45 ओवर का धैर्य न साबित हो जो हमारे किये कराये पर पानी फेर दे और हम अंतिम ओवेरों में जीतते जीतते ना हार जायें; इस मानसिकता से बच कर ही सामजिकता को आत्मसात करने की जरुरत है।

11. देश के चुनावों में मोदी या एक बड़ी राष्ट्रीय पार्टी का वर्चस्व पुनः- पुनः इस वर्ष में भी उजागर होता आया है; यहाँ तक की दक्क्कन के ग्रेटर हैदराबाद के नगरीय निकाय के चुनाव में भी उनकी धमक देखी गयी है। हाल ही में कोरोना महामारी के दौर में भी दुनिया के सबसे पुराने लोकतंत्र अमेरिका जैसे देश में लोगों ने जम कर

मतदान किया, देश में भी बिहार के विधान सभा चुनाव के साथ -साथ अन्य 10 राज्यों में विधानसभाओं के उपचुनाव हुए जिसमे कोरोना के वाबजूद लोगों ने अपने मताधिकार का व्यापक प्रयोग किया... वैसे भारत ने ट्रम्प से नमस्ते पहले ही कर ली थी, तो जो बायडन को तो आना ही था। अब शायद दुनियां अपने सबसे शक्तिशाली देश के नए नेतृत्व में कोरोना से बेहतर ढंग से लड़ पाए। वैसे कोरोना के टीके की आमद की सुखद ध्वनियाँ भी सुनने को मिल रहीं हैं; जो इस जाते अनोखे वर्ष के बाद शायद कुछ नए व अच्छे समाचार सुनाने वाला है।

वर्ष 2020 कई मायनों में अनोखा है; जिसकी मूल पहचान कोरोना महामारी है और इस वर्ष इस महामारी ने दुनिया के सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक और भौगोलिक समुच्चयों को भी बुरी तरह बिगाड़ दिया है, रोजगार को बचाना एक बड़ी चुनौती होती जा रही है। तो इस समय ने दुनिया को कई ऐसे मंत्र भी दिए हैं जिनसे दुनिया का कल्प बदला सकता है- जिनमे पर्यावरण का पुनुरुत्थान की स्तिथियों का पुनः उत्पन्न होना व विज्ञान व वैज्ञानिक शिक्षा पर पुनः भरोसा जागना कुछ महत्वपूर्ण लेकिन मौन रूप के सन्देश हैं शायद हम कुछ सीखें और स्वागत कर पायें एक कोरोना महामारी के भय से मुक्त समय का जिसमे पुनः सामाजिक मेल-जोल हो; मास्क हो तो भी चलेगा।

अमित तिवारी "शून्य"
सहायक प्राध्यापक,
भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान,
ग्वालियर म. प्र.

संस्थापक एवं संपादक

डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक

संदीप कुमार सोनी

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का..
आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

कीर्ति 'प्रदीप' वर्मा

अदिति रुसिया

सुषमा 'टीना' सोनी

रमा-'प्रेम-शांति'

मीना 'विवेक' जैन

रंजना श्रीवास्तव

सोनाली तिवारी

मीनाक्षी सुकुमारन

पूनम तिवारी

राधा गोयल

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

लीना शर्मा

भारती शर्मा

साधना छिरोल्या

अनुजा दुबे

सीता गुप्ता

किरण बिचपुरिया

मीनाक्षी राजपुरोहित

ललीता पाठक 'नारायणी'

डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी'

डॉ. मनोरमा गुप्ता शिवरसानिया

डॉ. सुकेशिनी दीक्षित

मंजु सरावगी

एच. एस. अरमो

सरकराज हुसैन

डॉ. वासिक काजी

अमित तिवारी

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-264-7

मूल्य - 180/-